सिद्धान्तचिन्तामणिः ।

कौंकणदेशान्तर्गतराजपट्टणग्रामवास्तव्येन जांभेकरोपाभिधेन श्रीयुत श्रीकृष्णात्मजसीतारामशर्मणा विरचितया सुबोधिन्याख्यया भाषाटीकया समलंकृतः

स च

मुम्बय्या

" ज्ञानसागर " यन्त्रालयाधिपतिना श्रीधर शिवलालात्मजेन पंडित कृष्णलालशर्मणा स्वकीये ज्ञानसागरयन्त्रालये सीसकाक्षरैर्मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९६० शाके १८२५ सन १९०३.

॥ श्रीः ॥

भूमिका

ज्योतिष शास्त्र अखिल भूमण्डलनिवासी समस्तजनोंका सर्वस्व धन है, कितनेक लोगोंके कहनेमें ऐसा आता है कि इस शास्त्रके ऊपर केवल हिन्दुओंकाही विश्वास है जिससे उनका उसके विना एक क्षणभी कार्य नहीं चलसक्ता परंतु यह उनकी भूल है कारण कि इसके विना केवल हिन्दुओंकाही क्या परंतु भूमितलनिवासी मनुष्यमात्रका विना इसके कार्य नहीं चलसक्ता है. इस शास्त्रका आजके कालमें दो प्रकारका उपयोग लोग करलेते हैं, हिन्दुओंकी प्रायः पारमार्थिक बुद्धि प्राचीनकालसेही होनेसे वे प्रायः पारमार्थिक कार्यमें इसका विनियोग करते हैं. आजकलके भारतभूमिके अधिपति पाश्चिमात्य लोग इस शास्त्रको व्यावहारिक कार्यमें बहुतही उपयोग करलेते हैं क्योंकि उनकी दृष्टिही व्यावहारिक है. पाश्चिमात्य लोगोंका समुद्रसे विशेष संघट्टन होनेसे उनको जितना ज्योतिःशास्त्रका उपयोग आजकल हो रहा है उतना और किसीको नहीं होता होगा. तात्पर्य इसका यह है कि यह शास्त्र सर्व मान्य है इसमें विवाद नहीं है. अब अपने आर्यलोगोंका तो आरंभसेही इस शास्त्रसे संबध हो रहा है और इसके प्रथम संशोधकभी आर्यलोगही हैं. परंतु संशोधनकालसेही आर्योंने इसका उपयोग पारमार्थिक कार्योंमेंही करना आरंभ किया जो बढते २ यहां तक पहुंचा कि जीवके गर्भस्थितिसे लेकर मृत्युकालही क्या परंतु उसके अनन्तरभी आर्यसन्तानोंका सम्बन्ध ज्योतिषशास्त्रसे रहताहै; आर्यलोग प्रत्येक कार्यके आरंभमें ज्योतिषकी सहायता लेतेहैं इसलिये ज्योतिष शास्त्रका अभ्यास थोडा बहुत प्रत्येक आर्योंको करना चाहिये, परंतु कालकी क्या विपरीत गति है कि जहांपर इस शास्त्रका प्रथम संशोधन हुआ वहांपर तो यह लुप्तप्रायही होरहाहै. उसका स्मरण होनेसे चित्त अति उद्वेगको प्राप्त होताहै. ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन तीनों वर्णोंके लिये तो अत्यावश्यक है. जैसा नारदजी लिखतेहैं कि—

"सिद्धान्तसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम् ॥
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तं कर्म न सिध्यति ॥

तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥
अतएव द्विजैरेतदध्येतव्यं प्रयत्नतः ॥ "

अर्थ—इसका यह है कि सिद्धान्त, संहिता और होरारूप ज्योतिषशास्त्र वेदका निर्मल नेत्र है विना इसके श्रौत तथा स्मार्त कर्म सिद्ध नहीं होताहै इसलिये ब्रह्माजीने प्रथमही इसकी रचना करी है इसलिये तीनों वर्णोंको इसका अध्ययन करना अत्यावश्यक है, परतु हाल विकराल कलिकालके प्रसगसे और पाश्चिमात्यलोगोंकी सगतिसे लोगोंकी श्रौत स्मार्तकर्मोंमें अभिरुचि कमती होनेपर इस शास्त्रकी आवश्यकता दिन प्रतिदिन कम होनेलगी है. "राजा कालस्य कारणम्" आज कलके अपने भारतभूमिके सम्राट् विदेशी, परधर्मी और व्यापारी वर्गके हैं जिससे प्रवृत्ति व्यापारके मार्गमें विशेष होनेलगी. व्यापारका अवलम्बन करनेसे द्रव्याभिलाषा बढनेलगी, द्रव्याभिलाषा बढनेसे कर्मकी आस्था कम हुई परन्तु यह नहीं सोचते हैं कि अपने वर्णाश्रमधर्म छूटनेसे स्वय पूर्ण विपत्तिमें आफसे हैं और कितनेक लोग जो शुभाशुम कार्यका आरभ करते हैं वहभी विना पढे मनुष्यके द्वारा और ज्योतिषीको पूछे विनाही करते हैं जिससे उक्तकालमें कार्यका आरंभ और समाप्ति न होनेसे उस कर्मका शास्त्रोक्त फल नहीं प्राप्त होताहै परन्तु विपरीत फल मिलताहै. जिससे ज्योतिषशास्त्र जानना अत्यावश्यक है. इस शास्त्रके अनुसार कार्य करनेसे अनेक प्रकारके हेतु सफल होते हैं. वराहमिहिराचार्य कहते हैं कि "नासांवत्सरिके देशे वस्तव्यं भूतिमिच्छता॥ चक्षुर्भूतो हि यत्रैष पाप तत्र न विद्यते ॥" अर्थात्—जिस देशमें ज्योतिषी नहीं हैं वहांपर ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाला पुरुष नहीं रहे क्योंकि ज्योतिषी सब लोगोंका नेत्र है, वह जहांपर है वहांपर पाप नहिं वसताहै. इस ज्योतिषशास्त्रको जाननेवाला ज्योतिषी जन्म-मृत्यु सुख-दुख-वृष्टि-जय-पराजय-रोग-शोक इत्यादि सब वृत्तान्त यथावत् कहसक्ताहै इस कारणही एक जगहपर कहाहै "विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥ सफल ज्योतिष शास्त्र चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ ज्योतिषशास्त्रके विना अन्य शास्त्रोंमें विवादके सिवाय कोई फल नहीं है, सफल तो ज्योतिषशास्त्रही है. जिसके साक्षी सूर्य और चन्द्रमा हैं ऐसी जिसकी योग्यता है ऐसा यह शास्त्र अतिप्राचीन अर्थात् वेदक्षत्र समकालीन है इसमें सन्देह नहीं. यद्यपि इस शास्त्रके विषयमें प्राचीन तथा अर्वाचीन लोग अनेक तर्क वितर्क चलाते हैं परन्तु आखिरमें इसकी प्राचीनताही सिद्ध होती है. विद्वान्, हरएक वस्तुका खोज करनेमें

पूर्ण प्रवीण पाश्चिमात्य लोगोंकोभी यह सम्मत है कि यह शास्त्र अति प्राचीन है. ऐसे इस ज्योतिषशास्त्रके प्रधान अंग दो हैं, एक गणितज्योतिष और दूसरा फलज्योतिष है. गणित ज्योतिषमें ग्रहोंकी कक्षा, स्वरूप, गति, अवस्था इत्यादिका विवेचन कियागया है और फलज्योतिषमें जन्म-मृत्यु-सुखदुःखादिका विवेचन कियाहै. इस गणितज्योतिषके भी तीन भेद हैं. सिद्धान्त, तन्त्र और करण, सिद्धान्तमें कल्पादिसे, तन्त्रमें युगके आदिसे और करणमें इष्टशकसे गणित करनेकी पद्धति कही है. तहां इष्टशकसे गणित करनेकी पद्धति अन्यपद्धतियोंकी अपेक्षा सहजहै. इष्टशकसे गणित करनेके अनेक ग्रन्थ हैं जिसमें आजकल ब्रह्मपक्षमें भास्कराचार्य प्रणीत "करणकुतूहल" और सौरपक्षमें "ग्रहलाघव" ये दो ग्रन्थ अति माननीय हैं, परन्तु करणकुतूहल प्राचीन होनेसे गणितमें ग्रहोंके चालनके अभावसे स्थूलता प्राप्त होनेलगी जिससे ग्रहणादिमें बहुत फरक होनेलगा इसलिये कराची प्रान्तान्तर्गत सुरमणिग्रामवास्तव्य पंडित दयालरामजीके पुत्र पंडितरूपचन्द्रजीने करणकुतूहलके मध्यमाधिकारमें फेरफार करके अहर्गण और ग्रहोंके ध्रुवक तथा क्षेपक ग्रहलाघवके अनुसार लेकर और दूसरेभी कितनेक प्रकरणोंमे फेरफार करके यह "सिद्धान्तचिन्तामणि" नामका करण ग्रंथ रचाहै जिसमें प्रायः करणकुतूहलकेही श्लोक हैं परन्तु क्वचित्स्थलमें कितनेक श्लोक कम करदिये हैं और कितनेक बढाये हैं. इस ग्रन्थसे कियेहुवे ग्रहण, उदय, अस्त, ग्रहोंका वक्रीभवन, मार्गीभवन इत्यादि ग्रहलाघवके अनुसार मिलते हैं. गणितकी सुलभताके लिये इस ग्रन्थके साथमें इस ग्रन्थकी एक सारणीभी रखदीगई है. कि जिससे ग्रहादि सुलभतासे बनते हैं, इसी ग्रन्थके द्वारा ब्रह्मपक्षके पंचांग बनाए जानेपर उनकी योग्यता बहुतही बढेगी. इसलिये इस ग्रन्थका सर्व साधारणमें प्रसार होनेके लिये श्रीयुत पंडित श्रीधर शिवलालजीके पुत्रपंडित कृष्णलालजीने मुझे इस ग्रन्थका भाषानुवाद करनेके लिये कहा तब मैंने उक्त पण्डितजीके इच्छानुसार इस ग्रन्थका हिन्दिभाषामें अर्थ करणकुतूहल ग्रन्थकी टीकाके अनुसार लिखा और पण्डित श्रीधर शिवलालात्मज कृष्णलालजीको समर्पित किया. अब आशाहै कि इस ग्रन्थका पर्यालोचन करके मेरे परिश्रमको सफल करेंगे और मानवी बुद्ध्यनुसार जहांपर त्रुटि होगईहो उसकी पूर्णता सम्पादन करनेके लिये मुझे सूचित करेंगे. सुज्ञेषु किमधिकम् ॥

भवदीयः सीतारामशर्मा.

॥ श्रीः ॥

अथ सिद्धान्तचिन्तामणिग्रन्थस्थविषयानुक्रमणिका।

विषयांक.	विषय.	पृष्ठांक.
	अथ मध्यमग्रहसाधनाधिकारः १।	
१	मंगलाचरण और ग्रन्थका नामनिर्देश	१
२	अहर्गणसाधनप्रकार	१–२
३	मध्यम सूर्य, बुध तथा शुक्र लानेकी रीति	३
४	मध्यमचन्द्र साधनप्रकार	४
५	चन्द्रोच्च तथा राहु साधनप्रकार....	"
६	मध्यम मंगल तथा मध्यम शनि साधनप्रकार	५
७	मध्यम गुरु साधन प्रकार	६
८	शुक्रकेन्द्र तथा मध्यम शनि साधनप्रकार....	"
९	सूर्यादिग्रहोंके ध्रुवांक....	७–८
१०	सूर्यादिग्रहोंके क्षेपकांक	९
११	स्पष्टमध्यम ग्रह बनानेका प्रकार	१०
१२	सूर्यादिग्रहोंकी मध्यमगति....	११
	अथ स्पष्टाधिकारः २।	
१	देशान्तरसंस्कार करनेका प्रकार	१२
२	भुज तथा कोटि साधनप्रकार	१३
३	ज्यासङ्क और लघुज्यादि साधनप्रकार	१४
४	उदयान्तरसंस्कार साधनप्रकार	१५
५	मन्दकेन्द्रोपयोगी ग्रहोंके मन्दोच्च	१६
६	मन्दकेन्द्र, शीघ्रकेन्द्र, पद और धनऋणसंज्ञा	१७
७	ग्रहोंके मन्दफल साधनेका प्रकार....	१८
८	चन्द्रमामें भुजांतरफलसंस्कार और ग्रहोंकी गतिके मन्दफलपर साधनप्रकार....	१९

अथ पंचतारास्पष्टीकरणाधिकारः ३।

अथ त्रिप्रश्नाधिकारः ४।

अथ चंद्रग्रहणाधिकारः ५।

सूर्यग्रहणाधिकारः ६।

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

॥ श्रीहरिंवन्दे ॥

अथ श्रीसिद्धान्तचिन्तामणिः ।

भाषाटीकासमेतः ।

ब्रह्माणं कमलापतिं गिरिसुतानाथं गणेशं गुरून् सूर्यादिग्रहमंडलं च पितरं नत्वाथ वागीश्वरीम् ॥ ज्योतिःशास्त्रविबोधनाय गणितस्कन्धं विचार्याधुना वक्ष्येऽहं शिशुबोधनाय विशदं सिद्धान्तचिन्तामणिम् ॥ १ ॥

भा०टी०—ब्रह्माजी; लक्ष्मीपति भगवान् श्रीविष्णु, तथा पार्वतीपति श्रीशिवजी, गणेशजी, गुरु, सूर्यादि नवग्रह, वाणीकी अधिष्ठात्री देवता सरस्वती तथा पिताजी इनको नमस्कार करके ज्योतिपशास्त्रका ज्ञान होनेकेलिये गणितस्कंधका विचार करके बालकोके बोधकेलिये मैं स्पष्टरीतिसे सिद्धान्तचिन्तामणिनामक ग्रंथकी रचना करताहूं ॥ १ ॥

अत्र प्रथम अहर्गणसाधनप्रकार कहतेहैं ।

व्यङ्ग्यङ्ग्यजाष्टेन्दु १८१४ शाकोऽद्युगण इह भवेदीश११भक्तः फलं यच्चक्राख्यं शे

पकं तु द्विशशि १२ परिहतं चैत्रतो यात मासैः॥ युक्तं द्विष्ठं ततश्चक्रहतयम २ युता द्दि १० ग्युताच्चामुतस्तन्मासौघः स्यात्स्फुटस्त्रित्रि ३३ विहृतफलतुल्याधिमासैरुपेतम् ॥ २ ॥ खत्रि ३० घ्नोऽस्सौ गततिथियुतो व्यग्रचक्रांग ६ भागोपेतःस्वश्रुत्यरि ६४ लवमितैरूनघस्त्रैर्विहीनः॥ स्याद्व्स्रौघोऽथ -शरहतचक्रेण युक्तोऽय मव्जाद्वारोऽभीष्टो भवति खलु चैत्रो गणो भूनयुक्तः ॥ ३ ॥

भा०टी०—वर्तमान शाकेमें १८१४ को घटानेसे गतवर्षोंका समूह होताहै, फिर उसमें ग्यारहका भाग देनेसे जो फल मिले उसे चक्र कहतेहैं, और जो शेष बचा होय उसको १२ से गुणा करे, फिर उस गुणाकारमें चैत्रसे इष्टकालताईं जितने मास गये हों उनको जोडदेवे (यह मध्यम मासगण कहाजाताहै.) इसको दो जगहपर स्थापन करे. एक जगह चक्रको द्विगुणित करके उसमें जोड दे और फिर दशयुक्त करे, फिर उसमें ३३ का भाग देनेसे जो फल मिले वह अधिकमास होतेहैं. इनको दूसरी जगहपर स्थापन किएहुए मध्यममासगणमें युक्त करनेसे महीनोंका समूह होताहै.

इस मासोंके समूहको ३० से गुणा करे और गुणनफलमें शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे इष्टकालतक जितनी गततिथि हों उन्हे युक्तकर चक्रका छठा भाग युक्त करे (यह मध्यम अहर्गण होताहै.) फिर इस मध्यम अहर्गणको दोजगह स्थापित करे, इसमें एकजगह ६४ का भाग देनेसे क्षयदिन मिलतेहैं, उनको दूसरीजगह स्थापित कियेहुए मध्यम अहर्गणमें घटानेसे स्पष्ट अहर्गण अर्थात् सावनदिनोंका समूह स्पष्ट होताहै. चक्रको पांचगुणा करके अहर्गणमें जोडकर सातका भाग देनेसे जो शेष बचे वह सोमवारसे आदि लेकर वार होताहै. अर्थात् ० शून्य बचे तो सोमवार १ बचे तो मंगलवार इत्यादि जाने और कदाचित् इस प्रकार इष्टवार नहिं मिले तो उस अहर्गणमें बारके लिये एक युक्त करनेसे अथवा घटानेसे अहर्गण स्पष्ट होताहै ॥ २ ॥ ३ ॥

मध्यम सूर्य, बुध तथा शुक्र लानेकी रीति लिखतेहैं—

अहर्गणो विश्व १३ गुणस्त्रिखांकै ९०३ भक्तःफलोनो द्युगणो लवाद्याः ॥ रविज्ञ शुक्राःस्युरथाब्दवृंदाद्विदांग ६४ लब्धेन कलादिनोनाः ॥ ४ ॥

भा०टी०—अहर्गणको १३ से गुणाकरे, उस गुणनफलको ९०३ से भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसको अह-

गणमें घटानेसे जो शेप बचे उसमें करणगताब्दकी ६ ४ से भाग देनेसे जो कलादि फल आवे वह घटादेनेसे अंशादि अहर्गणोत्पन्न सूर्य, बुध और शुक्र होते हैं ॥ ४ ॥

अब मध्यमचन्द्रका साधनप्रकार कहतेहैं ।

अन्हां गणः शक्र १४ गुणो विहीनः स्वात्यष्टि १७ भागेन लवादिरिन्दुः ॥ अहर्गणात्खाभ्ररसाष्ट ८६०० भक्तादाप्तेन भागादिफलेन हीनः ॥ ५ ॥

भा०टी०–अहर्गणको १४ से गुणाकरे (इसको अंशादि मानना) फिर इस गुणनफलमें १७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको गुणनफलमे हीन करे. फिर अहर्गणको ८६०० का भाग देकर जो अंशादि फल मिलै उसको उस अंशादिमे घटानेसे अंशादि अहर्गणोत्पन्न मध्यम चन्द्र होताहै ॥ ५ ॥

अब चन्द्रोच्च तथा राहुका साधनप्रकार कहतेहैं ।

गणो द्विधा गोभि ९ रिनाभ्रवेदै ४०१२ र्लब्धैक्यमंशादि भवेद्विधूच्चम् ॥ द्विघांकचन्द्रैः १९ खखभै २७०० र्दिनौघादाप्तांशयोगो भवतीन्दुपातः ॥ ६ ॥

भा०टी०—अहर्गण दोजगहपर स्थापनकरे, एकजगह-पर ९ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसके अंशादिमें दूसरीजगह अहर्गणको ४०१२ का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसे युक्त करे, यह चंद्रोच्च होताहै. अहर्गणको दोस्थानपर लिखे, एक स्थानपर १९ का भाग दें,यह अंशादि फल आवेगा उसमें दूसरे स्थानपर अहर्गणको २७०० का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न अंशादि राहु होताहै ॥ ६ ॥

अब मध्यम मंगलतथा बुधकेंद्रके लानेका प्रकार कहतेहैं।

रुद्र ११ घ्नो द्युचयो द्विधा शशियमै २१ र्वेदाब्धिसिद्धेषुभि ५२४४४ र्भक्तोऽशादिफलं द्वयं च सहितं स्यान्मेदिनीनन्दनः ॥ वेद ४ घ्नो द्युगणः स्वकीयदहनाब्ध्यं ४३ शेन युक्तो भवेद्भागादि ज्ञचलं गणात्क्षितियमेन्द्रा १४२१ प्तांशकैर्वर्जितम् ॥ ७ ॥

भा०टी०-अहर्गणको ११ से गुणाकरके,दो जगह स्थापनकरे, एकजगह २१ का भाग देनेसे जो लब्धि मिले उसमें दूसरी जगह अहर्गणको ५२४४४ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि मिलेगी उसको युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न मध्यम

मंगल होताहै. अहर्गणको ४ से गुणाकर उसमें उस गुण-नफलमें ४३ का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवै उसको घटादेनेसे अंशादि बुधकेन्द्र होताहै ॥ ७ ॥

अब मध्यमगुरुके साधनका प्रकार कहतेहैं ।

गणो द्विधार्कै१२र्भयमाब्धिभिश्च भक्तः फलांशांतरमिन्द्रमन्त्री ॥

भा०टी०—अहर्गणको दोजगह स्थापित करे, एकजगहपर १२ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि आवे उसका और दूसरी जगह ४२२७ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि आवे उसका इन दोनोंका अंतर करनेसे अहर्गणोत्पन्न मध्यम गुरु होताहै ॥

अब शुक्रकेन्द्र तथा मध्यमशनिके साधनका प्रकार कहतेहैं ।

नृपा १६ हतोन्हां निचयो द्विधासौ भूवाणवेदाद्रिभि ७४५१ रभ्रचन्द्रैः१० ॥८॥ भक्तो लवाद्यं फलयोर्यदैक्यं तज्जायते दैत्यगुरोश्चलोच्चम् ॥ भक्तः खरामै ३० स्तु रगांगरामनन्दै ९३६७ र्द्विधांशादिफलैक्यमार्किः ॥ ९ ॥

भा०टी०—अहर्गणको १६ से गुणा करके उस गुणनफ-

लको दोजगह स्थापितकरे. एकजगहपर ७४५१ का भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि आवे उसका और दूसरी जगहपर १० का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसका ऐक्य करनेसे शुक्रका अंशादि शीघ्रोच्च होताहै. अहर्गणको दोजगह स्थापित करे. एक जगहपर ३० से भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसमें दूसरी जगहपर अहर्गणको ९३६७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल आवे उसको युक्त करनेसे अहर्गणोत्पन्न मध्यम शनि होताहै ॥ ९ ॥

अब सूर्यादिग्रहोंके ध्रुवांक कहतेहैं.

ध्रुवोऽम्बर०विधु १ ग्रहोदधि ४९ भवा११ रवेर्भादिकः ख०राम ३ रसवार्धयो ४६ भव ११ समोडुनाथस्य वै ॥ नवा ९ क्षि २ शरवार्धयो ४५थ गदिता विधोस्तुंग जःकृतो ४डु २७ दश १० संमितो भप तिपातजःस्यात्तथा ॥ १० ॥ क्षितिभुवः क्षिति १ तत्व २५ रदा ३२ अथोदधि ४ पृषत्क ५ मनु१४द्विकृता ४२ विदः ॥ सुरगुरोः ख० रसाश्वि २६ गजेन्दवः१८ कु १ तिथि १५ तर्ककृते ४६ पुगुणा३५

भृगोः ॥ ११ ॥ शैलतिथ्य १५ क्षिवेदा ४२ श्च ध्रुवो राश्यादिकः शनेः ॥ १२ ॥

भा०टी०—अंबर अर्थात्० विधु कहिये १ अहोदधि ४९ और भव ११ यह सूर्यका राश्यादि ध्रुवा है. ख० राम ३ रसवार्द्धि ४६ भव ११ यह चन्द्रका ध्रुवा है. नव ९ अक्षि २ शरवार्द्धि ४५ यह चन्द्रमाके मन्दोच्चका ध्रुवा है. कृत ४ उडु २७ दश १० यह राहुका ध्रुवा है. क्षिति १ तत्व २५ रदा ३२ यह मंगलका ध्रुवा है. उदधि ४ पृषत्क ५ मनु १४ दिक्कृता ४२ यह बुधके केन्द्रका ध्रुवा है. ख० रसाश्वि २६ गजेन्दवः १८ यह बृहस्पतिका ध्रुवा है. कु १ तिथि १५ तर्ककृता ४६ इषुगुण ३५ यह शुक्रकेन्द्रका ध्रुवा है. शैल ७ तिथि १५ अक्षिवेदा ४२ यह शनिका ध्रुवा है ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

ग्रहोंके ध्रुवांकोका कोष्टक.

ग्रह	सू	च	चं उ	रा	भौ	बु के	गु	शु कें	श
राशि	०	०	९	४	१	४	०	१	७
अंश	१	३	२	२७	२५	५	२६	१५	१५
कला	४९	४६	४५	१०	३२	१४	१८	४६	४२
विकला	११	११	०	०	०	४२	०	३८	०

अब सूर्यादिग्रहोंके क्षेपक कहतेहैं ।

रुद्रा ११ विश्वे १३ गरामाः ३६ खजल
निधि ४० मिता भास्करेऽङ्गे गिरीशा
११ दिग् १० रामाश्व्ये २३ कवाणा ५१
अथ शर ५ रसयुग्मा २६ भ्रबाणा ५०
स्तदुच्चे ॥ पाते शून्य ११ श्विनौ२ ष्टक्ष
५८ कुदहन ३१ मिता भूमिजेऽश्वे ७
न्द्र १४ शैलाक्षा ५७ स्तिथ्यो १५ ज्ञा
शुकेन्द्रेऽश्व्यु २ दधिकर २४ नगा७ भ्रा
भयो ३० भादिजाःस्युः॥१३॥ क्षेप्या इहै
ते शिव ११ शूलिनौ ११ ऽब्धयो ४ दस्र
पवो ५२ मंत्रिणि शौक्रकेन्द्रके ॥ रामा
३ र्क १२ चंद्र १ र्क्ष २७ मिता अथो
शनौ श्रुत्य ४ ष्टदस्राः २८ शरपंच ५५
सायकाः ५ ॥ १४॥

भा०टी०—रुद्रा ११ विश्वे १३ अंगरामाः ३६ खजलनिधि ४० यह राश्यादि सूर्यका क्षेपक है. गिरीशाः ११ दिक् १० रामाश्वि २३ एकबाणाः ५१ यह चन्द्रका क्षेपकहै. शर५ रसयुग्म २६ अभ्रबाणाः ५० यह चंद्रके मन्दोच्चका क्षेपक है.

शूली ११ अश्विनी २ अष्टाक्ष ५८ कुदहनाः ३१ यह राहुका क्षेपक है. अश्व ७ इन्द्र १४ शैलाक्षाः ५७ तिथ्यः १५ यह मंगलका क्षेपक है. अश्वि २ उदधिकर २४ नग ७ अभ्राग्नयः ३० यह बुधके शीघ्रकेन्द्रका क्षेपक है. शिव ११ शूलिनः ११ अब्धयः ४ दस्रेषवः ५२ यह गुरुका क्षेपक है. रामाः ३ अर्क १२ चन्द्र १ ऋक्ष २७ यह शुक्रके शीघ्रकेन्द्रका क्षेपक है. श्रुति ४ अष्टदस्राः २८ शरपंच ५५ सायकाः ५ यह शनिका क्षेपक है. ॥ १३ ॥ १४ ॥

ग्रहोंके क्षेपकोंका कोष्टक.

ग्रह	सू.	चं	चं उ.	रा.	भौ.	बु कें.	गु	शु कें.	श.
राशि	११	११	९	११	७	२	११	३	४
अंश	१३	१०	२६	२	१४	२४	११	१२	२८
कला	३६	२३	५०	५८	५७	७	४	१	५५
विकला	४०	५१	०	३१	१५	३०	५२	२७	६

अब स्पष्ट मध्यमग्रह बनानेका प्रकार कहतेहैं ।

चक्रनिघ्नध्रुवोनस्वक्षेपयुक्तो द्युपिंडजः ॥ खेटश्चार्कोदये लंकानगर्यां मध्यमो भवेत् ॥ १५ ॥

भा०टी०—अहर्गणसे ग्रह बनानेकी रीति जो पहले कह गये उसके अनुसार अहर्गणसे बनायेहुये ग्रहमें चक्रसे गुणा

किये हुए ध्रुवेको घटावे और जो शेष बचे उसमे अपना क्षेपक युक्त करदे, फिर जो अंक हो वह सूर्यके उदयकालमे लंकानगरीमे स्पष्ट मध्यमग्रह होजाताहै ॥ १५ ॥

इसप्रकार मध्यमग्रहोंका साधन करके अब मध्यमग्रहोंकी दिनगति अर्थात् मध्यमगतिको कहतेहैं ।

नंदाक्षा ५९ भुजगा ८ रवेः शशिगतिः खांकाद्रयो ७९० क्षाग्नय ३५ स्तुंगस्यांग ६ कलाः कुवेद ४१ विकलाः पातस्य रामा ३ भवाः ११ ॥ माहेयस्य महीगुणा ३१ रसकरा २६ ज्ञस्येषुसिद्धा २४५ रदाः ३२ पंचे ५ ज्यस्य सितस्य पण्णवमिता ९६ अष्टौ ८ शनेर्द्वे २ कले॥१६॥

भा०टी०—नंद ९ अक्ष ५ अर्थात् ५९ कला और भुजगाः ८ विकला यह सूर्यकी मध्यमगति है. ख ० अंक ९ अद्रि ७ अर्थात् ७९० कला और अक्ष ५ अग्नि ३ अर्थात् ३५ विकला यह चन्द्रकी मध्यमगति है. अग ६ कला और कु १ वेद ४ अर्थात् ४१ विकला चन्द्रके मन्दोच्चकी गति है. रामाः ३ कला और भवाः ११ विकला राहुकी मध्यमगति है. मही १ गुण ३ अर्थात् ३१ कला और रस ६ कर २ अ-

र्थात् २६ विकला यह मंगलकी मध्यमगति है. इषु ५ सिद्धाः २४ अर्थात् २४५ कला और रदाः अर्थात् ३२ विकला यह बुधके शीघ्रकेन्द्रकी मध्यमगति है. पंच ५ कला और ० पूर्ण विकला गुरुकी मध्यम गति है. षट् ६ नवमिता ९ अर्थात् ९६ कला और अष्टौ ८ विकला यह शुक्रके शीघ्रकेन्द्रकी मध्यमगति है. और शनिकी द्वे २ कला और ० पूर्ण विकला यह मध्यमगति है ॥ १६ ॥

ग्रहोंकी गतिका कोष्टक.

ग्रह	सू	च.	चउ.	रा	म.	बुके.	गु	शुके	श.
कला	५९	७९०	६	३	३१	२४०	५	९६	२
विकला	८	३०	४१	११	२६	३२	०	८	०

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ मध्यमग्रहसाधनाधिकारःप्रथमः ।

अथ स्पष्टाधिकारः ।

इस स्पष्टाधिकारमें सूर्यचन्द्रका स्पष्ट करना और पंचांगानयन (तिथि, नक्षत्र, योग,करण) कहाजाता है, उसमेंभी पहिले ग्रहोंमें देशान्तरसंस्कार करनेका प्रकार लिखतेहैं ॥

रेखा स्वदेशान्तरयोजनघ्नी गतिर्ग्रहस्याभ्रगजै ८० र्विभक्ता ॥ लब्धा विलि

शाः खचरे विधेयाः प्राच्यामृणं पश्चिम
तो धनं ताः॥ १॥

भा०टी०—जिस ग्रामका ग्रह स्पष्ट करना होय उस ग्रामके और दक्षिणोत्तर मध्यरेखाके मध्यमें जितने योजनका अंतर होवे उन योजनोंसे ग्रहकी गतिको गुणाकर उस गुणनफलको ८० का भाग देनेसे जो लब्धि आवे वह कला होतीहैं. इन विकलाओंका ग्राम मध्यरेखासे पूर्वभागमें होय तो पूर्वानीत मध्यमग्रहमें ऋण (हीन करना) संस्कार करनेसे और ग्राम मध्यरेखासे पश्चिमभागमें होय तो धन (युक्त) संस्कार करनेसे स्वदेशीय मध्यम ग्रह होताहै॥ १॥

अब भुजकोटिसाधनप्रकार लिखतेहैं।

त्र्यूनं भुजः स्यात्त्र्यधिकेन हीनं भार्धं च भार्धादधिकं विभार्धम्॥ नवाधिकोनोनितमर्कभं च भवेच्च कोटिस्त्रिगृहं भुजोनम्॥ २॥

भा०टी०—केन्द्र अथवा ग्रह तीन राशिसे कम हो तो वही भुज होताहै, और जो तीनराशिसे अधिक होतो ६ राशिमें घटाकर जो शेष रहे वह भुज होताहै. और ६ से नव पर्यन्त हो तो ९ में घटावे और नवसे अधिक होतो १२ राशिमें घटावे जो शेष रहे वह भुज होताहै. ३ राशिमें भुजको घटावे तो कोटि होतीहै॥ २॥

अब ज्याखंडक और लघुज्यादि साधनप्रकार कहतेहैं ।

रूपाश्विनौ २१ विंशति २० रंकचन्द्रा १९ अत्यष्टि १७ तिथ्य १५ र्के १२ नवे ९ षु ५ दस्राः २ ॥ ज्याखंडकान्यंशमितेर्दशाप्तं स्युर्भक्तखंडान्यथ भोग्यनिघ्नाः ॥ ३ ॥ शेषांशकाः खेन्दु १० हृता यदाप्तं तद्भुक्तखंडैक्ययुतं भवेज्ज्या ॥

भा०टी०—जिस ग्रहकी ज्या बनानी हो उस ग्रहके अंशोंमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उस अंकके समान निम्न-लिखित अंकोंमेंसे एक अंक ग्रहण करे, और इन नवों अंकोंमें जो अंक हो उसको गत अंक मानकर उससे अगले अंकको एष्य माने. फिर गत और एष्य इन दोनों अंकोंके अंतरसे शेषको गुणा करे, फिर इस गुणनफलमें दशका भाग देनेसे जो फल मिले उसको गत अंकोंका ऐक्य करके जो संख्या आवे उसमें युक्त करे, यह ज्या होतीहै. अंक निम्नलिखित कोष्टकमें देखो ॥ ३ ॥

ज्याखंडोंका कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
२१	२०	१९	१७	१५	१२	९	५	२

अब उदयान्तरसंस्कारका साधनप्रकार कहतेहैं।

अथायनांशाः करणाब्दलिप्तायुक्ताः कृती २२ नन्दयुगा ४९ढ्यभानोः ॥ ४ ॥ द्विघ्नस्य दोर्ज्या शर ५ हृद्विलिप्ता भानोर्विधोःक्षि २१ हृताः कलास्ताः ॥ स्वर्णं तु युग्मौजपदे स्थितेऽर्के क्रमेण कर्मेत्युदयान्तराख्यम् ॥ ५ ॥

भा॰टी॰—यह करणग्रंथ जिस शाकेमें (१८१४) बना है उससे इष्ट शककालपर्यंत जितने वर्ष व्यतीत होगये हों उतनी कला २२।४९ में युक्त करनेसे इष्ट अयनांश होतेहैं इन अयनांशोंको मध्यमसूर्यमें जोडदे, फिर इस जोडको द्विगुणित करके जो राश्यादि होय उसका भुज करके उस भुजसे प्रथम कही पद्धतिसे ज्यासाधन करके उस ज्याको ५ का भाग देनेसे जो लब्धि आवे वह सूर्यकी विकला होतीहै, और उसी ज्याको २१ का भाग देनेसे जो लब्धि आवे वह चन्द्रकी कला होतीहैं. सायनसूर्य समपदमें होतो इन विकला और कलाओंको सूर्यमें और चन्द्रमामें धन (युक्त) करे (विकला सूर्यमें और कला चन्द्रमामें) और सायनसूर्य विषमपदमें होय तो इन विकला और कला-

ओंको सूर्यमें तथा चन्द्रमामें ऋण (घटादे) करे. इसको उदयान्तरसंस्कार कहतेहैं. पद आगे कहेंगे ॥ ५ ॥

अब मन्दकेन्द्रके उपयुक्त ग्रहोंके मन्दोच कहतेहैं ।

मन्दोच्चमर्कस्य गजाद्रि ७८ भागा भौमादिकानां सदलाष्टसूर्याः १२८।३० ॥ तत्वाश्विनः २२५ सार्धयमाद्रिचन्द्राः १७२।३० कष्टौ ८१ मतंगाग्नियमाः २३८ क्रमेण ॥ ६ ॥

भा०टी०—सूर्यका गज ८ अद्रि ७ अर्थात् ७८ अंश अर्थात् २ राशि १८ अंश मंदोच है. मंगलका सदल कहिये अर्ध अंशसहित अष्ट ८ सूर्य १२ ऐसे १२८ अंश अर्थात् ४ राशि ८ अंश ३० कला मंदोच होताहै. तत्व २५ अश्वी २ ऐसे २२५ अंश अर्थात् ७ राशि और १५ अंश बुधका मंदोच है. सार्ध कहिये अर्धअंशसहित यम २ अद्रि ७ चन्द्र १ ऐसे १७२ अंश अर्थात् ५ राशि २२ अंश और ३० कला गुरुका मन्दोच है. कु १ अष्टौ ८ ऐसे ८१ अंश अर्थात् २ राशि २१ अंश शुक्रका मन्दोच है. और मतंग ८ अग्नि ३ यम २ ऐसे २३८ अंश अर्थात् ७ राशि और २८ अंश शनिका मन्दोच होताहै ॥ ६ ॥

ग्रहोंके मन्दोच्चका कोष्टक.

ग्र	सू	म	बु	गु	शु	श
राशि	२	४	७	५	२	७
अंश	१८	८	१९	२२	२१	२८
कला	०	३०	०	३०	०	०
विकला	०	०	०	०	०	०

अब मन्दकेन्द्र शीघ्रकेन्द्र पद और धनऋणसंज्ञा कहतेहैं ।

ग्रहोनमुच्चं मृदु चंचलं च केन्द्रे भवेतां मृदुचञ्चलाख्ये॥ त्रिभिस्त्रिभिर्भैः पदमत्र कल्प्यं स्वर्णं फलं मेषतुलादिकेन्द्रे ॥७॥

भा०टी०—पूर्वोक्तप्रकारसे आयाहुवा ग्रह मन्दोच्चमें और शीघ्रोच्चमें घटानेसे मन्दकेन्द्र और शीघ्रकेन्द्र होताहै. तीन राशिओंका एक १ पद होताहै, १२ राशिओंके ४ पद होतेहैं. वहांपर प्रथम और तीसरा यह विषमपद कहलातेहैं. और दूसरा तथा चौथा यह समपद कहलातेहैं. मन्द अथवा शीघ्रकेन्द्र मेषादि छः राशिमें हो तौ फल मध्यम और मन्दस्पष्ट ग्रहमें धन करे, और केन्द्र तुलादि छः राशिमें होय तौ फल मध्यम और मन्दस्पष्ट ग्रहमें ऋण करे ॥ ७ ॥

अब ग्रहोंके मन्दफल साधनेका प्रकार कहतेहैं ।

सूर्यादिकानां मृदुकेन्द्रदोर्ज्या दिग्घ्नी१० विभाज्याथ खपंचबाणैः ५५० ॥ नागाग्निदस्रै २३८ गिरिपूर्णचन्द्रै १०७ र्वस्वंकभूभि १९८ र्वसुनेत्रनेत्रैः २२८ ॥ ८ ॥ युगाष्टशैलै ७८४ र्मुनिपंचचन्द्रैः १५७ फलं लवाः केन्द्रवशाद्धनर्णम् ॥ कार्यं ग्रहे सूर्यविधू स्फुटौ स्तो मन्दस्फुटाख्या इतरे स्युरेवम् ॥ ९ ॥

भा०टी०—सूर्यादि ग्रहोंके जो मृदुकेन्द्र आये हों उनका भुज करके उस भुजसे पूर्वोक्तप्रकारसे ज्या साधके उस ज्याको १० से गुणा करे. फिर वह ज्या सूर्यसंबंधी हो तौ ख० पंच ५ बाण ५ ऐसा ५५० का, चन्द्रसंबंधी हो तौ नाग ८ अग्नि ३ दस्र २ ऐसे २३८ का, मंगलसंबंधी हो तौ गिरि ७ पूर्ण ० चंद्र १ ऐसे १०७ का, बुधसंबंधी होतौ वसु ८ अंक ९ भू १ ऐसे १९८ का, गुरुसंबंधी होतौ वसु ८ नेत्र २ नेत्र २ ऐसे २२८ का, शुक्रसंबंधी होतौ युग ४ अष्ट ८ शैल ७ ऐसे ७८४ का, और शनिसंबंधी होतौ मुनि ७ पंच ५ चन्द्र १ ऐसे १५७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल लब्ध हो उसको मृदुकेन्द्र मेषादि छः

राशिमें होतौ मध्यमग्रहमें धन और मृदुकेन्द्र तुलादि छः राशिमें होतौ मध्यम ग्रहमें ऋण करे. यह संस्कार करनेसे सूर्य और चंद्र स्पष्ट होतेहैं, और भौमादि पांच ग्रह मंद-स्पष्ट होतेहैं ॥ ९ ॥

अब चन्द्रमामें भुजांतरफलसंस्कार और ग्रहांकी गतिके मन्दफलका साधनप्रकार कहतेहैं।

भानोःफलं भै २७ विंहृतं च चन्द्रे मध्ये विधेयं रविवद्धनर्णम् ॥ स्वभोग्यखंडं नव ९ हृत्खरांशोर्विश्वा १३ हृतं वेद ४ हृतं हिमांशोः ॥ १० ॥ द्वि २ घ्नं नगा ७ प्तं कुजसौम्ययोश्च खाक्षै ५० रिनैः १२ खार्क १२० मितैश्च भक्तम् ॥ जीवादिकानां च गतेः फलं तत्स्वर्णं क्रमात्कर्कमृगादिकेन्द्रे ॥ ११ ॥

भा०टी०—पूर्वोक्तश्लोकमें कहेप्रकारसे सूर्यकी ज्याको ५५० का भाग देकर जो अंशादि फल लब्ध हुवाहो उसको २७ का भाग देनेसे जो अंशादि फल लब्ध हो उसको मध्यमचन्द्रमामें सूर्यका फल सूर्यमें धन किया होतो धन करे और सूर्यका फल सूर्यमें ऋण किया होतो चन्द्रमामें

ऋण करे तव चन्द्र स्पष्ट होताहै. दूसरे ग्रहोंमें अंतर अल्प होनेसे यह संस्कार उनकेलिये नहीं कहा. जिस ग्रहके गतिफलका साधन करनाहो उसके भुजकी ज्या करतेसमय जो भोग्यखंड आयाहो वह सूर्यसंबंधी होतो ९ नवका भाग देनेसे, चन्द्रसंबंधी होतो १३ से गुणाकर ४ का भाग देनेसे, मंगल और बुधसंबंधी होतौ २ दोसे गुणाकर ७ का भाग देनेसे, गुरुसंबंधी होतौ ५० का भाग देनेसे, शुक्रसंबंधी होतौ १२ का भाग देनेसे और शनिसंबधी होतौ १२० का भाग देनेसे जो कलादि फल लब्ध हो वह अपनी २ मध्यमगतिमे मन्दकेन्द्र कर्कादि छः राशिमें होतौ धन और मकरादि छः राशिमें होतौ ऋण करे. ऐसा करनेसे रवि और चन्द्रकी गति स्पष्ट होतीहै, और भौमादि पांच ग्रहोंकी गति मन्दस्पष्ट होतीहै.

अब पलभा, चरखंड और चर बनानेकी रीति तथा चरसंस्कार कहतेहैं ।

अयनलवदिनैः प्राङ् मेपसंक्रांतिकाला द्भवति दिवसमध्ये या प्रभाक्षप्रभा सा॥ दश १० गज ८ दश १० निघ्नी साक्षभां त्या त्रि ३ भक्ता प्रतिगृहचरखंडान्याय नांशाढ्यभानोः ॥१२॥ भुजगृहमितयो

गो भोग्यखंडांशघातात्खगुण ३० लव युगस्वं स्वं चरं गोलयोः स्यात्॥ चरपल गतिघातः षष्ठिभक्तो विलिप्ताः स्वमृण मुदयकाले व्यस्तमस्तग्रहेषु ॥ १३ ॥

भा०टी०—मेषसंक्रांतिके पहिले अयनांशतुल्य दिनोंसे जिसदिन दिवसके मध्यान्हकालमें द्वादशांगुल शंकुकी छाया जितने अंगुल पडेगी वह पलभा होतीहै. अर्थात् सायनसूर्य जिसदिन मेषराशिमें राशि, अंश, कला, विकलासे शून्य होय उस दिन मध्यान्हकालके समय एकसी भूमिपर बारह अंगुलका शंकु खडा करे, उसके खडा करनेसे जो छाया पडे वह पलभा होतीहै, उस पलभाको तीन जगह धरे, और एकजगह १० से, दूसरी जगह ८ से और तीसरी जगह १० से गुणाकरे. फिर अंतकी १० से गुणित पलभामें ३ का भाग देनेसे ३ चरखंडे होतेहैं.

मंदस्पष्टसूर्यमें अयनांश युक्त करके उसका भुज करे, फिर उस भुजमें राशिकी जगह शून्य होतौ अंशादिको प्रथमचरखंडेसे गुणा करे, और जो भुजमें एकराशि होतौ अंशादिको दूसरे चरखंडेसे गुणा करे, जो भुजमें दो राशि हों तौ अंशादिको तीसरे चरखंडेसे गुणा करे. फिर जो गुणन फल मिले उसमें ३० का भाग दे, जो भाग लब्ध हो

उसमें जिस चरखंडेसे अंशादिको गुणा कियाथा. उससे पहिले अर्थात् गत चरखंडेको जोडदेनेसे पलात्मक चर होताहै. वह चर सायनसूर्य मेषादि छः राशिमें होतौ घटावे और सायनसूर्य तुलादि छः राशिमें होय तौ युक्त करे. अर्थात् सूर्यके दक्षिणोत्तर गोलके समान चरको धन ऋण जाने. चरपलोंसे ग्रहकी गतिको गुणा करे, फिर उस गुणनफलको ६० का भाग देनेसे जो लब्ध फल आवे वह विकला होतीहैं. इन विकलाओंका उदयकालसमयके ग्रहमें चरके समान धन ऋण संस्कार करनेसे ग्रह स्पष्ट होताहै. और सायंकालके समयका अर्थात् अस्तकालका होतौ चर धन हो तौ ग्रहमें इन विकलाओंको घटावे,और चर ऋण हो तौ ग्रहमें विकलाओंको युक्त करे तब ग्रह स्पष्ट होताहै. ग्रह मध्यान्हकालका अथवा मध्यरात्रिके समयका किया हो तौ इस चरपलका संस्कार करनेकी जरूर नहींहै ॥१२॥१३॥

अब तिथि, करण, नक्षत्र और योगसाधन करनेका प्रकार कहतेहैं।

विरविचन्द्रलवा रवि १२ पड् ६ हृताः पृथगितास्थितयः करणानि च ॥ कुरहितानि ववाच्छकुनिप्रभृत्यसितभूत दलादिचतुष्टयम् ॥१४॥ विधुकलाः

सरवीन्दुकलाहताः खखगजै ८०० श्च भयोगमितौ क्रमात्॥ अथ हताः स्वगतैष्यविलिप्तिकाः स्वगतिभिश्चग तागतनाडिकाः॥ १५॥

भा०टी०—चन्द्रमामें सूर्यको घटानेसे जो राश्यादि फल आवे उसके अंश बनावे. फिर उसमें १२ का भाग देनेसे जो फल मिले वह गततिथि होतीहैं, और जो शेष बचे वह मिली तिथिका भुक्त है. इस शेषको १२ में घटानेसे तिथिका भोग्य होताहै. फिर गत और भोग्यतिथियोंकी कलाओंकी विकला बनाके फिर गत और भोग्य विकलाओंको अलग२ धरके६० से गुणा करे,जो गुणनफल मिले उसमें सूर्य और चन्द्रमाकी गतिके अंतरकी विकला करके उनका गतकी विकलाओंमें भाग देनेसे तिथिकी भुक्त हुई घडी आदि और भोग्यकी विकलाओंमें भाग देनेसे भोग्य घडी पलादि होतेहैं.

करणसाधन—चन्द्रमामें सूर्यको घटानेसे जो राशीआदि शेष बचे उसके अंश बनाले, फिर उन अंशोंमें ६ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह गतकरण होतेहैं, उस लब्धफलमें १ घटानेसे जो शेष बचे वह शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके उत्तरार्धसे बवादि करण होतेहैं, तथा कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धसे शकुनिप्रभृति करण होतेहैं. भुक्त और भोग्यतिथिके घडीपलोंका योग करे, फिर उसका आधा

करनेसे घडी आदि करणका मान होताहै. फिर उसमें गततिथिके मानको घटानेसे करणकी वर्तमान घडी होतीहैं.

नक्षत्रका साधनप्रकार—ग्रहकी राशि आदिकी कला बनावे, फिर उनमें ८०० का भाग देनेसे जो फल मिले वह गतनक्षत्र हैं, और जो शेष बचा हो वह वर्तमाननक्षत्रका भुक्तभाग है, उसको हर (८००) में घटावे तो शेष भोग्य भाग रहताहै. फिर भुक्तभागको ६० से गुणाकर विकला करे. फिर उनको ६० से गुणाकर प्रतिविकला करे, और ग्रहके गतिकी विकलाओंका भाग उनमें दे तो वर्तमान नक्षत्रके भुक्त घडी, पल मिलेंगे. और भोग्यकी विकलाओंकी प्रतिविकला करके उनको ग्रह गतिकी विकलाओंका भाग देनेसे भोग्य घडी, पल मिलतेहैं.

योगसाधनप्रकार—सूर्य चन्द्रमाके योगकी कलाओंको ८०० का भाग देनेसे जो लब्ध भाग आवे वह गतयोग मिलताहै. और जो शेष बचे वह वर्तमानयोगका भुक्तभाग होताहै. उसको हर (८००) में घटानेसे भोग्यभाग होताहै. फिर भुक्त और भोग्यको ६० से गुणा करके विकला बनाले. फिर उनमें चन्द्रसूर्यकी गतियोंके योगका भाग देनेसे-वर्तमानयोगकी भुक्त और भोग्य घडी, पल होतेहैं॥ १५॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ ग्रहस्पष्टाधिकारो द्वितीयः ।

अथ तृतीयाधिकारः।

अब भौमादि पांच ग्रहोंका स्पष्टाधिकार कहतेहैं.
तहां प्रथम भौमादिकोंके पराख्य कहतेहैं.

कुकुंजरा ८१ वेदकृता ४४ स्त्रिदस्राः२३ सप्ताहयो ८७ विश्व १३ मिताः पराख्याः॥ भौमादिकानामथ मध्यमोऽर्कः शीघ्रोच्चमीज्यारशनैश्चराणाम् ॥ १ ॥

भा०टी०—कु १ कुंजर ८ अर्थात् ८१, वेद ४ कृताः ४ अर्थात् ४४, त्रि ३ दस्र २ अर्थात् २३, सप्त ७ अहि ८ अर्थात् ८७ विश्व १३, ये क्रमसे भौमादिग्रहोंके पराख्य होतेहैं. बुध और शुक्रके शीघ्रोच्च मध्यमाधिकारमें कहेहैं, मंगल, गुरु और शनैश्चरका मध्यमसूर्यही शीघ्रोच्च है ॥ १ ॥

अब मंगलके मन्दोच्च और पराख्यका स्पष्टीकरण कहतेहैं

भौमाशुकेन्द्रे पदयातगम्यस्वल्पस्य लिप्ताः खखवेद ४०० भक्ताः ॥ लब्धांशकैः कर्कमृगादिकेन्द्रे हीनान्वितं स्पष्टमसृङ्मृदूच्चम ॥ २॥ लब्धांशकानां त्रि ३ लवेन हीनः स्पष्टः परः स्यात्क्षितिनन्दनस्य ॥ ३ ॥

भा०टी०—तीन ३ राशिओंका एक १ पद होताहै, इसरीतिसे मंगलके शीघ्रोच्चका जो पद हो उसका जो यात (गत) भाग हो उसको ३ राशिमें घटानेसे गम्यभाग होताहै. इन गत गम्य दोनोंमें जो अल्प हो उसके राशिअंशोंकी कला बनालेवे, फिर उनको ४०० का भाग देकर जो अंशादि फल लब्ध हो वह मंगलका शीघ्रकेन्द्र कर्कादि छः राशिमें हो तौ मंगलके मन्दोच्चमें घटावे, और शीघ्रकेन्द्र मकरादि छः राशिमें हो तौ मन्दोच्चमें युक्त करे, तब मंगलका मन्दोच्च स्पष्ट होताहै. शीघ्रोच्चके पदके गतगम्यभागमें जो स्वल्प है उसकी कलाओको ४०० का भाग देकर जो अंशादि फल लब्ध हुआहो उसमें ३ का भाग देकर जो फल लब्ध हो उसको मंगलके पराख्यमें घटावे तब मंगलका पराख्य स्पष्ट होताहै ॥ २ ॥ ३ ॥

अब धनुःसाधनप्रकार कहतेहैं ।

विशोध्य खंडानि दश १० ग्रशेपादशुद्ध लब्धं धनुरंशकाद्यम् ॥ विशुद्धसंख्याहतदि १० ग्युतं स्याद्यस्तैर्दलैर्व्यस्त धनुर्ज्यके स्तः ॥ ४ ॥

भा०टी०—जिस ग्रहका धनु निकालना हो उस ग्रहकी ज्या करके फिर ज्याके प्रथमखंडसे आरंभ करके जितनें खंड

शोधे जांय उतने शोधके जो शेष बचे उसको १० गुणा करके जो गुणनफल हो उसको अशुद्धखण्डका भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह शुद्ध ज्या खंडोको एकत्र मिलाकर उनके अंकोंकी जो संख्या हो उससे १० को गुणाकर जो गुणनफल आवे उसमें युक्त करे तब वह अंशादि धनु होताहै. व्यस्तखंडोसे ज्या और धनु व्यस्त होतेहैं ॥ ४ ॥

अब भौमादिग्रहोंका शीघ्र फललानेका प्रकार कहतेहैं।

कोटिज्या चलकेन्द्रजा परगुणा द्विघ्नी तयोनान्विता केन्द्रे कर्किमृगादिके पर कृतिः खाभ्राब्धिशक्रै १४४०० र्युता ॥ तन्मूलं श्रवणः परेण गुणिता दोर्ज्याथ कर्णोद्धृता तच्चापं चपलं फलं धनमृणं मन्दस्फुटे स्यात्स्फुटः ॥ ५ ॥

भा॰टी॰–मन्दस्पष्टग्रहको अपने २ शीघ्रोच्चमे घटादेवे वह शीघ्रकेन्द्र होताहै, उस शीघ्रकेन्द्रका भुज करके फिर भुजसे कोटि बनालेवे, फिर उस कोटिसे ज्या बनालेवे, फिर उस ज्याको अपने परारूयसे गुणाकरके जो गुणनफल आवे उसको फिर दो २ से गुणा करे, जो गुणनफल आवे उसको परारूयका वर्ग करके उस वर्गको १४४०० मे युक्त

करके जो फल आवे उसमें शीघ्रकेन्द्र कर्कादि छः राशिमें होय तौ घटादेनेसे और शीघ्रकेन्द्र मकरादि छः राशिमे हो तौ युक्त करनेसे जो शेष वचे उसका वर्गमूल निकाले, जो वर्गमूल आवे वह कर्ण होताहै.

कर्णका भुज करके उससे ज्यासाधन करे, फिर उस ज्याको पराख्यसे गुणा करे, फिर उस गुणनफलको कर्णसे भाग देनेसे जो अंशादि फल लब्ध हो उससे धनुसाधन करे, जो धनु आवे वह शीघ्र फल होताहै. यह शीघ्रफल शीघ्रकेन्द्र मेषादि छः राशिमें होतौ मन्दस्पष्टग्रहमे धन (युक्त) करे और केन्द्र तुलादि छः राशिमें होतौ ग्रहमे ऋण (घटादेवे) करे, तब ग्रह शीघ्रस्पष्ट होताहै ॥ ५ ॥

अव शीघ्रस्पष्टसे स्पष्टग्रह बनानेका प्रकार तथा मंगलमें विशेषप्रकार कहतेहैं ।

तदुत्थमांदेन चलेन मध्यश्चेत्संस्कृतः स्पष्टतरस्तदा स्यात् ॥ दलीकृताभ्यां प्रथमं फलाभ्यां ततोऽखिलाभ्यामसकृत्कुजस्तु ॥ ६ ॥

भा०टी०–जो ग्रह शीघ्रस्पष्ट हुवा उससे जो मन्दफल आवे उसका मध्यमग्रहमें संस्कार करनेसे ग्रह स्पष्ट होताहै. तात्पर्य इसका यह है कि प्रथम जो ग्रह शीघ्रस्पष्ट हुवा हो

उसको मध्यम है ऐसा समझके उससे प्रथम कहे पद्धतिसे मन्द फल साधनकर फिर उस मन्दफलका उस मध्यम समझेहुवे ग्रहमें केन्द्रको देखकर धन ऋण संस्कार करनेसे ग्रह स्पष्ट होताहै. मंगल स्पष्ट करना हो तब तौ मन्दफल तथा शीघ्रफलका अर्ध करके उसका मध्यममंगलमें संस्कार करे और संस्कार करेहुवे उस मंगलको मध्यम समझके उससे पूर्वोक्तप्रकारसे मन्दफलका साधन करे, जो मन्दफल आवे उसका मध्यम समझेहुवे उस मंगलमें संस्कार करे तव मन्दस्पष्ट होताहै. फिर उस मन्दस्पष्ट मंगलसे प्रथम कहे पद्धतिसे शीघ्रफल साधन करे. जो फल आवे उसका मन्दस्पष्ट मंगलमें संस्कार करे. इसरीतिसे असकृत् (वारंवार) संस्कार करे तब मंगल स्पष्ट होताहै. दूसरे ग्रहोंमें प्रायः असकृत् संस्कार करनेकी जरुरात नहिंहै. वह वहुतकरके प्रथम संस्कारसेही स्पष्ट होतेहैं ॥ ६ ॥

अब गति स्पष्ट करनेका प्रकार कहतेहैं ।

चलोच्चभुक्तेस्तु मृदुस्फुटाख्या संशोधयेत्सा चलकेन्द्रभुक्तिः ॥ द्राक्केन्द्रभुक्तिर्गुणिताशुचापभोग्यज्यया खाब्धि ४० गुणा च भक्ता॥७॥सप्त७घ्नकर्णेन चलोच्चभुक्तेः शोध्यावशेषं स्फुटखेटभुक्तिः ॥

यदा न शुद्धा विपरीतशोध्या शेषं भवेद्व क्रगतिस्तदानीम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—ग्रहकी मध्यमगतिमें पूर्वोक्तप्रकारसे गतिफलका संस्कार करनेसे जो मन्दस्पष्ट गति आवे उसको शीघ्रोचकी गतिमें घटानेसे जो शेष बचे वह शीघ्रकेन्द्रकी गति होतीहै. शीघ्रकेन्द्रकी गतिको शीघ्रकर्णकेलिये लायेहुवे धनुके अशुद्धखण्डसे गुणा करके जो गुणन फल आवे उसको फिर ४० से गुणा करे, जो गुणनफल आवे उसमें कर्णको ७ से गुणाकर जो गुणन फल आवे उसका भाग देकर जो कलादि भाग आवे उसको शीघ्रोच्चकी गतिमें घटादेवे,जो शेष बचे वह स्पष्टगति होतीहै. जब ये आयाहुवा भाग शीघ्रोचकी गतिसे अधिक होनेसे उसमें नहीं घटाया जाय तब शीघ्रोचकी गति इस भागमेंसे शोधे जो शेष रहे वह ग्रहकी वक्रगति होती है. तब ग्रह वक्री है ऐसा जाने ॥ ७ ॥ ८ ॥

अब भौमादि पांच ग्रहोंके वक्री होनेके
शीघ्रकेन्द्रके अंशोंको कहतेहैं ।

द्राक्केन्द्रभागैस्त्रिनृपैः १६३ शरेन्द्रै १४५ स्तत्वेन्दुभिः १२५ सप्तनृपै १६७ स्त्रिरुद्रैः ११३ ॥ स्याद्वक्रता भूमिसुतादिकानामवक्रता तद्रहितैश्च भांशैः ॥ ९ ॥

भा०टी०—जिसदिन मंगलके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश एकसौ तरेसठ १६३ होजातेहैं उस दिन मंगल वक्री होताहै, अर्थात् उसकी चाल उलटी होतीहै. जिसदिन बुधके शीघ्रकेन्द्रके अंश १४५ होतेहैं उसदिन बुध वक्री होताहै. जिसदिन गुरुके शीघ्रकेन्द्रके अंश १२५ होजातेहैं उसदिन गुरु वक्री होताहै. शुक्रके शीघ्रकेन्द्रके अंश जिसदिन १६७ होतेहैं उसदिन शुक्र वक्री होताहै, और जिसदिन शनिके शीघ्रकेन्द्रके अंश ११३ होजातेहैं उसदिन शनि वक्री होताहै. इन शीघ्रकेन्द्रके अंशोंको भगणांके अंशोंमें अर्थात् बारह राशियोंके ३६० अंशोंमें घटादेनेसे जो स्थिर शीघ्रकेन्द्रांश बचें उतने अंशोंसे मंगलआदि पांचों ग्रह मार्गी होतेहैं. भौमादिके स्थिरशीघ्रकेन्द्रांश ३६० में घटानेसे ये अंश हुए अर्थात् मंगलके १९७ बुधके २१५ गुरुके २३५ शुक्रके १९३ शनिके २४७ ॥ ९ ॥

अब मंगल गुरु और शनि इन्होंके उदय
और अस्तके अंशोंको कहतेहैं ।

प्राच्यामुदेति क्षितिजोऽष्टदस्रैः २८ शक्रै १४ र्गुरुः सप्तकु १७ भिश्च मन्दः ॥
स्वस्वोदयांशोनितचक्रभागैस्त्रयो व्रजन्त्यस्तमयं प्रतीच्याम् ॥ १० ॥

भा०टी०—मंगलका स्थिरशीघ्रकेन्द्रके २८ अंशोंपर पूर्वदिशामें उदय होताहै. बृहस्पतिका स्थिरशीघ्रकेन्द्रके १४ अंशोंपर पूर्वदिशामें उदय होताहै, और शनिका स्थिरशीघ्रकेन्द्रके १७ अंशोंपर पूर्वदिशामें उदय होताहै. फिर अपने २ उदयके अंशोंको ३६० अंशोमें घटानेसे ३३२ ३४६।३४३ जो स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश रहे, अर्थात् मंगलके ३३२ बृहस्पतिके ३४६ और शनिके ३४३ इनके समान अंशोंसे मंगल, बृहस्पति और शनि इन्होंका क्रमसे पश्चिमदिशामें अस्त होताहै. ॥ १० ॥

अब बुध शुक्रके उदय और अस्तके अंशोंको कहतेहैं।

खाक्षै ५० र्जिनै २४ र्ज्ञसितयोरुदयः प्रतीच्यामस्तश्च पंचतिथिभि १५५ र्मुनिसप्तभूमिः १७७ ॥ प्रागुद्गमः शरनखै २०५ स्त्रिधृति १८३ प्रमाणै रस्तश्च तत्र दशवन्हिभि ३१० रङ्गदेवैः ३३६॥११॥

भा०टी०—जिसदिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश ५० होजातेहैं उसदिन पश्चिमदिशामें बुधका उदय होताहै. जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश २४ होजातेहैं उसदिन शुक्रका पश्चिमदिशामें उदय होताहै, और जिसदिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश १५५ होजातेहैं उसदिन बुधका

पश्चिमदिशामें अस्त होताहै. जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके अंश १७७ होजातेहैं उसदिन शुक्रका पश्चिमदिशामें अस्त होताहै. जिसदिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके २०५ अंश होजातेहै उसदिन बुधका पूर्वदिशामे उदय होताहै. जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके १८३ अंश होजातेहैं उसदिन शुक्रका पूर्वदिशामें उदय होताहै और जिस दिन बुधके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके ३१० अश होजातेहै उसदिन बुधका पूर्वदिशामे अस्त होताहै, और जिसदिन शुक्रके स्थिरशीघ्रकेन्द्रके ३३६ अंश होजातेहैं उसदिन शुक्रका पूर्वदिशामे अस्त होताहै ॥ ११ ॥

अब भौमादिग्रहोंके वक्र, मार्गी, उदय और अस्तके दिनादि लानेका प्रकार कहतेहैं।

अवक्रवक्रास्तमयोदयोक्तभागाधिकोनाः कलिका विभक्ताः ॥ द्राक्केन्द्रभुक्त्यासदिनैर्गतैष्यैरवक्रवक्रास्तमयोदयाः स्युः ॥ १२ ॥

भा०टी०–भौमादिग्रहोंके मार्गी होनेके, वक्री होनेके तथा अस्त और उदयके जो अश पहले दोश्लोकोंमें कहे उन अंशोंसे अधिक अथवा अल्प जो ग्रहोंके स्थिरशीघ्र केन्द्रके अंश हो उनकी विकला बनालेवे, फिर उन विकलाओंको

ग्रहके शीघ्रकेन्द्रकी गतिसे भागकर जो दिनादि लब्धि आवै उतनेही गत अथवा एष्य दिनोंसे ग्रह मार्गी अथवा वक्री होगा, तथा अस्तंगत अथवा उदित होगा ॥ १२ ॥

इति पंचतारास्पष्टाधिकारस्तृतीयः ।

अथ चतुर्थाधिकारः ।

अब लग्नादि साधन करनेका प्रकार कहतेहैं ।

तहां प्रथम लंकानगरीमें तथा स्वदेशमें मेषादिराशियोंके उदयमान कहतेहैं ।

लंकोदया नागतुरङ्गदस्रा २७८ गोंकाश्विनो २९९ रामरदा ३२३ विनाड्यः ॥ क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखंडकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः ॥ १ ॥ मेषादिषण्णामुदयाः स्वदेशे तुलादितोऽमी च षडुत्क्रमस्थाः ॥

भा०टी०—पहिले लंकानगरीके उदयमें मेषादिराशियोंके पलादि मान कहतेहैं. मेषके २७८ वृषके २९९ और मिथुनके ३२३ पल, इन्होंको विपरीतक्रमसे स्थापन करनेसे कर्कसे कन्याराशितक तीन राशियोंके उदयके मान होतेहैं. और इससे विपरीत क्रम लेनेसे तुलासे मीनतकके छः रा-

शियोंके मान होतेहैं सो चक्रमें देख लेना. फिर लंकाके पहले तीन राशियोंके उदयके मानोंमें अपने देशके चरखण्डेको ऊन करे और उससे अगली तीन राशियोंमें अर्थात् कर्क, सिंह और कन्या इनके पलात्मक लंकोदयमें अपने देशके चरखण्डेको विपरीतक्रमसे युक्त करे, ऐसा करनेसे अपने देशके मेषादि छः राशियोंके उदयके मान होतेहैं. फिर इन्होंको उलटा स्थापन करनेसे तुलादि छः राशियोंके अपने देशके उदयमान होतेहैं ॥ १ ॥

अब लग्न स्पष्ट बनानेके प्रकारको कहतेहैं ।

लंकोदय		
मेष	२७८	मीन
वृषभ	२९९	कुंभ
मिथुन	३२३	मकर
कर्क	३२३	धन
सिंह	२९९	वृश्चिक
कन्या	२७८	तुला

तात्कालिकोऽर्कोऽयनभागयुक्तस्तद्भोग्यभागैरुदयो हतः स्वः ॥२॥ खाग्न्यु ३० द्धृतस्तं रविभोग्यकालं विशोधयेदिष्टघटीपलेभ्यः ॥ तदग्रतो राश्युदयांश्च शेषमशुद्धहृत्खाग्नि ३० गुणं लवाद्यम ॥ ३ ॥ अशुद्धपूर्वैर्भवनैरजाद्यैर्युक्तं तनुः स्यादयनांशहीनम ॥

भा०टी०—जिस कालका लग्न साधन करना हो उस लका सूर्य स्पष्ट करे, फिर उसमें अयनांश युक्त करनेसे सा यनसूर्य होताहै, फिर उस सायनसूर्यकी राशिको छोडके अंशादि शेष बचे वह भोगेहुवे अंशादि हैं उनको ३० तीसमें घटानेसे भोग्य अंशादि होतेहैं, फिर जो सूर्यकी राशि छोड दीथी उस राशिके अपने देशके उदयको उन भुक्त भोग्य अंशादिकोंसे गुणा करे, फिर गुणनेसे जो फल मिले उसमें तीसका भाग देनेसे कलात्मक भुक्त और भोग्यकाल होताहै. फिर इष्टघडियोंके पल करके उनमें भुक्त और भोग्यकालको घटादेवे. ऐसे घटानेसे जो अंक शेष बचे उ-समे जिस राशिके उदयको गुणा किया था उससे आगेकी जितनी राशियोंके उदय घटे उतने घटावे, ऐसे घटादेनेसे जो शेष बचाहो उसको ३० से गुणा करे जो गुणनफल मिले उसमें अशुद्ध उदय अर्थात् जिस राशिका उदय उ-समें नहीं घटा हो उस राशिके उदयका भाग देवे, ऐसा भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें मेषसे आदि लेकर जितनी राशियोके उदय घटे हों उतनी राशिकी सं-ख्याको राशिके स्थानमें युक्त करे, फिर उसमें अयनांशको घटादेवे, जो शेष बचे वह उस कालका राश्यादि स्पष्ट लग्न होताहै. जो भुक्त लग्न बनावे तौ जिस उदयसे गुणा करे

उस उदयसे पीछले उदयको घटादेवै और जो भोग्य लग्न बनावे तौ उस उदयसे अगले उदयको घटादेवै ॥ ३ ॥

अब इष्टकाल भोग्यकालसे अल्प हो तो लग्न बनानेका प्रकार कहतेहैं ।

भोग्याल्पकाले खगुणा ३० हतोऽर्कः स्वीयोदयाप्तांशयुतो विलग्नम् ॥ ४ ॥

भा०टी०—पूर्वोक्तरीतिसे बनायेहुए भोग्यकालसे इष्टकाल अल्प हो तौ उस इष्टकालको ३० से गुणा करे, फिर उसमे सायनसूर्यकी राशिके उदयका भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको सूर्यमें युक्त करनेसे इष्टकालका लग्न होताहै ॥ ४ ॥

अब लग्नसे इष्टकाल बनानेका प्रकार कहतेहैं ।

अर्कस्य भोग्यस्तनुभुक्तयुक्तो मध्योदयाढ्यः समयो विलग्नात् ॥

भा०टी०—सायनसूर्यके भोग्यकालमे सायनलग्नके भोगेहुए अंशोपरसं जो भुक्तकाल मिले उसको युक्त करे, फिर सायनसूर्य और सायन लग्न इन्होके मध्यमे जितने लग्न हो उन्होके उदयोको युक्त करे, फिर उसमें साठका भाग दे तब लग्नसे इष्टकाल होताहै ॥

अब सायनसूर्य और सायनलग्न ये दोनों एकराशिमें हों तहांपर लग्नसे इष्टकाल बनानेका प्रकार और रात्रिलग्नसाधनका प्रकार कहतेहैं ।

यदैकभे लग्नरवी तदैतद्भागान्तरघ्नोदयखाग्नि ३० भक्तः ॥ ५ ॥ स्यादिष्टकालो यदि लग्नमूनं शोध्यो द्युरात्रादथवा रजन्याः ॥ रात्रीष्टकाले तु सषड्भसूर्याल्लग्नं ततोऽप्युक्तवदिष्टकालः ॥ ६ ॥

भा०टी०—जो सायनलग्न और सायनरवि एकराशिमें हो तौ उन दोनोंके अंतरके अंशादिको अपनी राशिके उदयसे गुणा करे, फिर उस गुणनफलमें ३० का भाग देनेसे पलादि इष्टकाल मिलताहै, और जो सायनसूर्यसे सायनलग्न कमती हो तौ पूर्वोक्तप्रकारसे आया हुवा इष्टकाल ६० घडीमें घटानेसे सूर्योदयसे इष्टकाल होताहै और रात्रिमानमें घटानेसे सूर्यास्तसे इष्टकाल होताहै.

जो रात्रिमें लग्न बनाना हो तौ सूर्यमें छः राशि जोडके इष्टकालसे लग्न साधन करे और उस षड्राशियुक्त सूर्यसेही इष्टकालका साधन करे ॥ ५ ॥ ६ ॥

अब दिनार्ध, रात्र्यर्ध, नत और उन्नत साधन करनेका प्रकार कहतेहैं ।

चरपलयुतहीना नाडिकाः पञ्चचन्द्रा १५द्युदलमथ निशार्धं याम्यगोले विलोमम्॥द्युदलगतघटीनामन्तरं तन्नतं स्यान्नतरहितदिनार्धश्चोन्नतं जायतेऽत्र ॥७॥

भा०टी०—सायनसूर्य उत्तरगोलमे हो तौ १५ घडियोंमे चरपलोंको युक्त करे और सायनसूर्य दक्षिणगोलमे हो तौ चरपलोंको १५ घडियोंमे घटादेवे ऐसा करनेसे दिनार्द्ध अर्थात् दिनका आधा भाग होताहै. उस दिनार्द्धको ३० मे घटानेसे रात्र्यर्द्ध होताहै अर्थात् रात्रिका आधाभाग होताहै. दिनार्द्धको दुगुना करनेसे दिनमान और रात्र्यर्द्धको दुगुना करनेसे रात्रिमान होताहै.

दिनार्द्ध और इष्टकाल इनका जो अतर वह नत होताहै. जो दिवसके इष्टकालतकके घडी पल दिनार्द्धसे अधिक हों तौ उन घडीपलोंमे दिनार्द्ध घटानेसे जो शेष बचे वह पूर्वनत होताहै और इष्टकालके घडीपलोंसे दिनार्द्ध अधिक हो तौ दिनार्द्धमें उन घडी पलोंको घटानेसे जो शेष बचे वह पश्चिमनत होताहै. आयेहुए इस नतको दिनार्द्धमें घटानेसे जो शेष रहे वह उन्नत होताहै ॥ ७ ॥

अब क्रांतिके बनानेका प्रकार कहतेहैं ।

स्युःक्रान्तिखण्डानि यमांगरामाः३६२
कुद्व्ययमयो ३४१ गोनवबाहव २९९श्च॥
षट्त्र्यश्विनः २३६ खेषुभुवो १५० द्विबा
णा ५२ युक्तायनांशग्रहबाहुभागाः ॥
॥ ८ ॥ तिथ्यु १५ हृता लब्धमितानि
तानि योज्यानि भोग्याहतशेषकस्य ॥
तिथ्यं १५ शकः क्रान्तिकला भवन्ति
युक्तायनांशग्रहगोलदिक्काः॥ ९ ॥

भा०टी०—जिस ग्रहकी क्रान्ति बनानी हो उस ग्रहमें अयनांश युक्त करे, फिर उस सायनग्रहका भुज करे. फिर उस भुजके अंश करके उन अंशोंको १५ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह भुक्त खंड होतेहैं. जो भुक्तखंड हों उनका योग करे और उस योगमें १५ का भाग देनेसे जो अंशादि शेष रहा हो उसको भोग्यखंडसे गुणा करके उस गुणनफलको १५ का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले वह भुक्तखंडोंके योगमे युक्त करनेसे जो शेष रहे वह क्रान्तिकला होतीहै. यह क्रान्ति सायनग्रह दक्षिणगोलमें हो तो दक्षिण होतीहै और सायनग्रह उत्तरगोलमें हो तो उत्तर होतीहै ॥ ९ ॥

अब अक्षांश और नतांश साधन करनेका प्रकार कहतेहैं।

क्रांतिखण्डानि					
१	२	३	४	५	६
३६२	३४१	२९९	२३६	१६०	५२

दशाढ्य ४१० न्वितात्क्षप्रभाषष्ठि ६० भागोऽक्षकर्णान्वितस्तेनभक्ता प्रभा सा ॥ खनन्दा ९० हता दक्षिणाः स्युः पलांशाः पलाः संस्कृताः क्रान्तिभागैर्नतांशाः ॥ १० ॥

भा०टी०–जिस देशके ग्रह किये हों उस देशकी पलभा ४१० में युक्त करे, फिर उसको ६० का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें अक्षकर्ण जोड देवै. (यह भाजक होताहै) इसको पृथक् स्थापित करे, फिर पलभाको ९० से गुणा कर जो गुणन फल मिले उसको पृथक् स्थापित कियेहुए भाजकका भाग देवै, ऐसा भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले वह दक्षिणदिशाके अक्षांश होतेहैं. क्रांतिकलाओंको ६० का भाग देनेसे जो फल मिले वह क्रांत्यंश होतेहैं, और क्रांत्यंश अक्षांश इन्होंका संस्कार (दोनो एकदिशामें हो तौ योग और भिन्नदिशामें हो तौ अन्तर) करनेसे नतांश होतेहैं ॥ १० ॥

अब अक्षकर्ण बनानेके प्रकारको कहतेहैं।

अक्षभायाः कृतिः कार्या शंकुवर्गसमन्विता॥ तन्मूलमक्षकर्णश्च पलकर्णस्य कथ्यते ॥ ११ ॥

भा॰टी॰—पलभाका वर्ग करे फिर उसमें इष्टछायाका वर्ग युक्त करे उस योगसे वर्गमूल निकाललेवे जो वर्गमूल है वह अक्षकर्ण होताहै.

वर्गमूल निकालनेका प्रकार कहतेहैं।

जहांपर अवयवसहित अंकोंका मूल लेना हो वहांपर ऊपरके अंकको ६० से गुणा करे, फिर उसमें नीचेके अंकको जोडदेवे, फिर उसको ६० से गुणा करे ऐसे दोवार ६० से गुणा करे, फिर इसका मूल ग्रहण करके जो शेष बचे उसमें एक युक्त करके फिर उसको ६० से गुणा करे उस गुणनफलमें विकलाओंको युक्त करे, फिर इसमें दोसे गुणेहुए मूलमें दो युक्त करके उसका भाग देनेसे जो फल मिले उसको मूलके नीचेके अंकमें जोड दे, फिर इसमें ६० का भाग देनेसे मूल निकलताहै ॥ ११ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ त्रिप्रश्नाधिकारश्चतुर्थः।

अथ पंचमाधिकारः।

अब चंद्रग्रहणके अधिकारको कहतेहैं।

तहां प्रथम हर और नतकर्म साधनेका प्रकार कहतेहैं।

नतविहीनहतैः खगुणै ३० हृताः खशर भानुभुवो ११२५० दश १० वर्जिताः॥ रविहरः सविधोर्विदशांशको निजफलं निजहारहृतं क्रमात्॥ १॥ धनमृणं पर पूर्वनते रवौ शशिनि पूर्वनते स्वमृणे फले॥ इतरथोभयतोऽपि फलक्षयः स्फु टतरौ ग्रहणेऽथ ततस्तिथिः॥ २॥

भा॰टी॰—तीस ३० में नतको घटादेवे, फिर जो शेष रहे उसको नतसे गुणा करे जो गुणनफल मिले उसका ११२५० को भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसमें १० को घटादेवे, फिर जो शेष रहे वह रविका हर होताहै. रविके हरको १० का भाग देनेसे जो अंशादि फल मिले उसको रविके हरमें घटानेसे जो अवशिष्ट रहे वह चन्द्रका हर होताहै.

रविके मन्दफलको रविके हरका भाग देनेसे जो फल मिले वह कलादि रविका नतफल होताहै और चन्द्रके मन्दफलको चन्द्रके हरका भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह चन्द्रका कलादि नतफल होताहै. यह नतफल सूर्य पश्चिमकपाल (अर्धरात्रिके पश्चात् मध्यान्हपर्यंतका काल पश्चिमकपाल और मध्यान्हसे अर्धरात्रिपर्यंतका काल पू-

वेकपाल) मे हो तौ रविमें धन (युक्त) करे और सूर्य पूर्वकपालमें हो तौ रविमें ऋण (घटादेवे) करे.

चन्द्रग्रहणमें रात्रिका दिनरूपसे व्यवहार होताहै इसलिये चन्द्रकी कपालव्यवस्था सूर्यकी कपालव्यवस्थासे विपरीत है. जैसा कि–(मध्यान्हसे अर्धरात्रिपर्यंत पूर्वकपाल और मध्यरात्रिसे मध्यान्हतक पश्चिमकपाल) चन्द्र पूर्वकपालमें हो और चन्द्रका मन्दफल ऋण हो तौ चन्द्रका नतफल चन्द्रमें धन करे और चन्द्र पश्चिमकपालमे हो और मन्दफल ऋण हो तौ चन्द्रका नतफल चन्द्रमामें ऋण करे और इससे विपरीत अर्थात् मन्दफल धन हो तौ चन्द्रमा पूर्वकपाल अथवा पश्चिमकपालमें हो तौभी नतफल ऋण होताहै. इसप्रकार इस नतफलका संस्कार करके सूर्य और चन्द्र दोनो ग्रह ग्रहणकेविषे स्पष्ट करे, फिर इन दोनोंसे पूर्वोक्तप्रकारसे तिथि साधन करे ॥ १ ॥ २ ॥

अब तात्कालिक ग्रह करनेका प्रकार कहतेहैं ।

यातैष्यनाडीगुणिता द्युभुक्तिः षष्ठ्या ६० हृता तद्रहितो युतश्च ॥ तात्कालिकः स्यात्खचरः शशीनौ पर्वान्त एवं समलिप्तिकौ स्तः ॥ ३ ॥

भा०टी०–यात अर्थात् वीतीहुई और एष्य अर्थात् अगा-

डी बीतनेवाली जो घडी हैं इन्होंसे ग्रहकी गतिको गुणाकरे फिर इसमें ६० का भाग देनेसे घडी आदि मिलें उन्होंको गत घडी हों तौ ग्रहमें घटादेवे और एष्य घडी हों तौ ग्रहमें युक्तकरे ऐसा करनेसे इष्टकालका ग्रह होताहै. इसी लब्धीको चालन ऐसा कहतेहैं. इसप्रकार चन्द्र और सूर्यको पूर्वोक्तप्रकारसे मिलीहुई तिथिके घडीपलोंका चालन देनेसे चन्द्र और सूर्य पर्वान्तकालमें समविकल होतेहैं ॥ ३ ॥

अब अयन तथा गोलज्ञान और शर बनानेके प्रकारको कहतेहैं।

सपाततात्कालिकचन्द्रदोर्ज्या त्रि ३ घ्नी कृता ४ प्ता च शरोऽङ्गुलादिः ॥ सपातशीतद्युतिगोलादिक् स्यान्मेषादिषड् भं खलु सौम्यगोलः॥ ४ ॥ याम्योऽपरं कर्किमृगादिषट्के ते चायने दक्षिण सौम्यके स्तः ॥

भा०टी०–पूर्वोक्तप्रकारसे मिलीहुई तिथिके घडीपलोंका राहुमें चालन देनेसे राहु (पात) पर्वातकालमें स्पष्ट होताहै. फिर उस पर्वांतकालके स्पष्टराहुको पर्वांतकालके स्पष्ट चन्द्रमामें युक्त करे, फिर उसका भुज करके उससे ज्या साधन करके उस ज्याको ३ से गुणाकरे, फिर उस गुणनफलको ४

का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह अंगुलादि शर होताहै.
वह शर राहुयुक्त चन्द्रमा जिस गोलमें हो उसी दिशाका हो
ताहै. अर्थात् राहुयुक्त चन्द्रमा उत्तरगोलमें हो तौ उत्तर और
दक्षिणगोलमें हो तौ दक्षिण होताहै. अब उत्तरगोल और
क्षिणगोलका लक्षण कहतेहैं । मेषादि छः राशि उत्तरगोल हैं
और तुलादि छः राशि दक्षिणगोल हैं. कर्कआदि छः राशि
दक्षिणायन है और मकरआदि छः राशि उत्तरायण है.॥ ४॥

अब चन्द्रबिम्ब, सूर्यबिम्ब और भूभाबिम्ब इन्होंके
बनानेका प्रकार कहतेहैं.

**बिम्बं विधोः स्यात्स्वगतिर्युगाद्रि ७४
भक्ता रवेर्दस्र २ हता शिवा ११ प्ता॥५॥
त्रि ३ घ्नीन्दुभुक्तिस्तुरगाङ्ग ६७ भक्ता
भूभार्कभुक्त्यद्रि ७ लवेन हीना ॥**

भा०टी०—चन्द्रमाकी गतिमें ७४ का भाग देनेसे जो फल
लब्ध हो वह अंगुलादि चन्द्रबिम्ब होताहै. सूर्यकी गतिको
दुगुना करके उसमें ११ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो
वह अंगुलादि सूर्यबिम्ब होताहै. चन्द्रमाकी गतिको तिगुना
करके उसमें ६७ का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो उसमें
सूर्यकी गतिमें ७ का भाग देनेसे जो फल मिले वह घटा-
नेसे जो शेष रहे वह भूभाबिम्ब होताहै. ॥ ५ ॥

अब मानैक्यखंड, ग्रास और खग्रास इन्होंके बनानेके प्रकारको कहतेहैं.

राहुःकुभामण्डलगः शशांकं शशांकगश्छादयतीनबिम्बम् ॥ ६ ॥ यच्छाद्यसंछादकमण्डलैक्यखण्डं शरोनं स्थगितं तदाहुः ॥ छन्नं पुनःश्छाद्यविवर्जितं तत्खच्छन्नमेतन्निखिलं ग्रहे स्यात् ॥ ७ ॥

भा०टी०—चन्द्रग्रहणमें राहु पृथिवीकी छायाके अंतर्गत होकर चन्द्रमाको आच्छादित करताहै. अतएव यहांपर भूच्छाया छादक और चन्द्र छाद्य हुवा और सूर्यग्रहणमें राहु चन्द्रमाके अंतर्गत होकर सूर्यको आच्छादित करताहै अर्थात् ढकलेताहै तौ यहांपर चन्द्रमा छादक और सूर्य छाद्य हुवा. छाद्य और छादक इन दोनोंके बिम्बोंका योग करके अर्थात् चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमा और भूमिके बिंबका और सूर्यके ग्रहणमें सूर्य और चन्द्रके बिम्बका योग करके अर्ध करनेसे मानैक्यखण्ड होताहै. फिर इस मानैक्यखण्डमे पूर्वोक्त अंगुलादि शर घटानेसे जो शेष बचे वह अंगुलादि ग्रासबिम्ब होताहै. मानैक्यखण्डमें शर नहीं घटे तौ ग्रहण नहीं होगा ऐसा जानना. ग्रासबिम्ब अधिक हो और छाद्यबिम्ब अल्प हो तौ ग्रासबिम्बमें छाद्यबिंबको घटानेसे जो शेष रहे वह ख-

ग्रासबिम्ब होताहै अर्थात् उतने अंगुल प्रत्यंगुल आकाश ग्रसा जावेगा ऐसा जाने.-सूर्यके ग्रहणमेंभी ग्रासादि बनानेका येही प्रकार है ॥ ७ ॥.

अब ग्रहण तथा खग्रासमर्दकी स्थिति बनानेका प्रकार कहतेहैं.

द्वि २ घ्नाच्छराच्छन्नयुताहतात्पदं खाष्टेन्दु १८० निघ्नं विवरेण गत्योः ॥ भक्तं स्थितिः स्याद्घटिकादिरेवं खच्छन्नतो मर्दमपि प्रजायते ॥ ८ ॥

भा०टी०—पहले कहेहुए शरको दुगुना करे,फिर उसमें ग्रास युक्त करे, फिर उसको ग्रासबिम्बसे गुणा करे जो गुणनफल मिले उसका वर्गमूल निकाले, फिर उस वर्गमूलको १८० सें गुणा करे, फिर जो गुणनफल मिले उसको चन्द्रसूर्यकी गतिके अंतरका भाग देनेसे जो भाग लब्ध हो वह घटिकादि मध्यस्थिति होतीहै. और शरको दुगुना करके उसमें खग्रास युक्त करके उसको खग्रासबिम्बसे गुणा करे जो गुणन फल मिले उसका वर्गमूल निकाले, फिर उस वर्गमूलको १८० सें गुणा करे जो गुणनफल मिले उसको चन्द्रसूर्यकी गतिके अंतरका भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह घटिकादि मर्द होताहै ॥ ८ ॥

- अब स्पर्शस्थिति, मोक्षस्थिति, स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द इन्होंके बनानेका प्रकार कहतेहैं.

विक्षेपतो नागयुगे ४८ विभक्ता नाड्यादिकं यत्फलमत्र लब्धम् ॥ द्विष्ठा स्थितिस्तेन युता विहीना स्यातां क्रमात्स्पाशिकमोक्षके ते ॥ ९ ॥ ओजे पदे पातयुतो विधुश्चेद्युग्मेऽन्यथैवं स्थितिवद्विमर्दे ॥ सूर्योदयादस्तमयाच्च गम्यो मध्यो ग्रहः पर्वविरामकाले ॥ १० ॥ स्थित्या विमर्देन विवर्जितेऽस्मिंस्तत्स्पर्शसम्मीलनके क्रमेण ॥ युक्तेऽथ तस्मिंस्थितिमर्दकाभ्यां मुक्तिस्तथोन्मीलनकं निजाभ्याम् ॥ ११ ॥

भा॰टी॰—चंद्रग्रहणमें पूर्वानित शरको ४८ का भाग देय जो फल लब्ध होय उसको घटिकात्मक मानकर मध्यस्थितिमें युक्त करै और घटावै तौ क्रमसे स्पर्शस्थिति और मोक्षस्थिति होतीहै. और सूर्यग्रहणमें तौ पातयुक्त चन्द्रमा विषमपदमें होय तौ पूर्वोक्तप्रकारसे आयाहुवा घटिकादि फल मध्यस्थितिमें युक्त करै और घटावै तब स्पर्शस्थिति

और मोक्षस्थिति होतीहै, परंतु पातयुत चन्द्र ..
हो तौ फल मध्यस्थितिमें युक्त करनेसे मोक्षस्थिति और
घटानेसे स्पर्शस्थिति होतीहै. तथा स्पार्शिक और मौक्षिक
शरसे इसप्रकार आयेहुवे घटिकादि फलका मर्दस्थितिमें
संस्कार करनेसे स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द होतेहैं. सूर्यग्रहणमें
सूर्योदयके अनंतर और चन्द्रग्रहणमें सूर्यास्तके अनन्तर
जो भावी पर्वावसानकाल अर्थात् अमावास्या और पूर्णिमा
इन तिथियोंका जो अन्त वही स्पष्ट ग्रहणमध्यकाल होताहै.
तात्पर्य इसका यह है कि पूर्णिमाका अन्त येही चन्द्रग्रहणमें
स्पष्टमध्यकाल होताहै और सूर्यग्रहणमें तौ लम्बनसंस्कृत
स्पष्ट दर्शांत येही स्पष्ट मध्यकाल होताहै. उस मध्यकालको
दोस्थानमें लिखकर एकस्थानमें स्पर्शस्थिति तथा स्पर्श-
मर्दको घटादे तब जो शेष रहै सो स्पर्शकाल तथा
सम्मीलनकाल होताहै और दूसरे स्थानमें लिखे हुये मध्य-
कालमें मोक्षस्थिति तथा मोक्षमर्दको युक्त करै तब जो
अङ्कयोग हो वह मोक्षकाल तथा उन्मीलनकाल होताहै.
मोक्षकालमें स्पर्शकाल घटादेय तब पर्वकाल होताहै और
उन्मीलनकालमें सम्मीलनकालको घटादे तब जो शेष
रहै सो खग्रासपर्वकाल होताहै ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

अब वलनसाधनप्रकार कहतेहैं ।

खाङ्का ९० हतं स्वद्युदलेन भक्तं स्पर्शे

विमुक्तौ च नतं लवाः स्युः ॥ तज्ज्याहताश्चाक्षलवा विभक्तास्त्रिभज्यया प्रागपरे नते स्यात् ॥ १२ ॥ सौम्यान्तकाशं वलनं ग्रहस्य युक्तायनांशस्य तु कोटिजीवा ॥ बाणैर्विभक्तायनदिक्तथान्यद्भागाद्यमेकान्यदिशोस्तयोश्च ॥ ॥ १३ ॥ योगान्तरज्याहतमानयोगखण्डं त्रिभज्याहृतमंगुलाद्यम् ॥ स्फुटं भवेत्तद्वलनं रवीन्द्वोः प्राग्ग्रासमोक्षे विपरीतदिक्के ॥ १४ ॥

भा०टी०—स्पर्शनत तथा मोक्षनतको ९० से गुणाकरे फिर उस गुणनफलको स्वदिनार्द्धका (चन्द्रग्रहणमें रात्र्यर्द्धका और सूर्यग्रहणमें दिनार्द्धका) भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय उसको नतांश जाने. उन नतांशोंसे ज्या साधन करके उस ज्यासे स्वदेशीय अक्षांशोंको गुणाकरे फिर उस गुणनफलको १२० का भाग देय तब जो लब्धि होय उसको अंशादि स्पर्शवलन तथा मोक्षवलन जानै. नत पूर्वदिक् होय तौ आयाहुवा नत उत्तरदिक् होताहै और नत पश्चिमदिक् होय तौ वलन दक्षिणदिक् होताहै, इसको अक्ष-

जवलन कहतेहैं.अयनांशयुक्त तात्कालिक ग्रहकी (चन्द्र अ-थवा सूर्यकी) कोटी करके उस कोटीकी ज्याको ५ का भाग देय जो लब्धि होय वह आयनवलन होताहै. इस आयन-वलनकी दिशा सायनग्रह उत्तरगोलमें होय तौ उत्तर और दक्षिणगोलमें होय तौ दक्षिण होतीहै. अक्षजवलन और आयनवलन इन दोनोंकी एक दिशा होय तौ दोनोंका योग करलेय और दोनोंकी भिन्नदिशा होय तौ अंतर करलेय, तदनन्तर उस योगकी अथवा अंतरकी ज्या साधके उस ज्याको मानैक्यखंडसे गुणा करै,फिर उस गुणनफलको १२० का भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह स्फुटवलन (वलनांग्रि) होताहै. उसकी दिशा वलनयोग अथवा व-लनोंके अन्तरकी जो दिशा हो सोही होती है. सूर्य और चन्द्रके ग्रास और मोक्ष पूर्वदिशामें होतेहो तौ वलनकी दिशा विपरीत समझना. जैसा कि सूर्यग्रहणमें ग्रास पूर्वदि-शामें होय तौ स्पर्शवलन विपरीत अर्थात् उत्तर होय तौ दक्षिण और दक्षिण होय तौ उत्तर समझना और चन्द्र-ग्रहणमें मोक्षवलन विपरीत अर्थात् दक्षिण होय तौ उत्तर और उत्तर होय तौ दक्षिण समझना.ग्रहणका जब ग्रस्तोदय अथवा ग्रस्तास्त होय तौ 'रात्रेःशेषम्' इत्यादि जातक-ग्रंथोंमें जो नतसाधन करनेका प्रकार कहाहै उस पद्धतिसे नतसाधन करके उस नतको ९० से गुणा करे, फिर उस

गुणनफलको अपने २ दिनार्द्धका भाग देय तब अंशादि लब्धि होय उसको नतांश जाने. फिर उन नतांशोंका भुज करके उस भुजसे ज्यासाधन करे, फिर उस ज्यासे पूर्वोक्त-पद्धतिसे अक्षवलन साधन करे ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

अब स्पार्शिक और मौक्षिकशरसाधन कहतेहैं।

माध्यः शरस्त्वोजपदोद्भवश्चेत्स्थित्य ग्नि ३ भागोनयुतो युतोनः॥ युग्मे विधोर्वा प्रथमान्त्यबाणौ चन्द्रग्रहे व्यस्त दिशः शराःस्युः ॥ १५ ॥

भा०टी०—चंद्रग्रहणमें ग्रहणमध्यकालीन शर विषमपदस्थ पातयुक्त चन्द्रसे उत्पन्न हुवाही तौ उस शरमें मध्यस्थितिका तृतीयांश घटादेवै जो शेष बचे वह स्पर्शकालीन शर और युक्त करे तौ जो योग होय वह मोक्षकालीन शर होताहै. परंतु सपातचन्द्र समपदमें होय तब तौ मध्यस्थितिका तृतीयांश मध्यकालीन्शरमें युक्त करनेसे स्पार्शिक शर और घटानेसे मौक्षिक शर होताहै. अथवा तात्कालिक सपातचन्द्रसे स्पर्शशर और मोक्षशर साधन करे. यह स्पर्श, मध्य और मोक्षशर चन्द्रग्रहणमें परिलेख क्रियामें विपरीतदिक् अर्थात् उत्तर होय तौ दक्षिण और दक्षिण होयतौ उत्तर जानना॥ १५॥

अब परिलेख कहतेहैं ।

ग्राह्यार्धसूत्रेण विधाय वृत्तं मानैक्यखंडेन च साधिताशम् ॥ बाह्येऽत्र वृत्ते वलनं यथाशं प्राक्स्पार्शिकं पश्चिमतश्च मोक्षम् ॥ १६ ॥ देयं रवेः पश्चिमपूर्वतस्ते ज्यावच्च बाणौ वलनाग्रकाभ्याम् ॥ उत्पाद्य मत्स्यं वलनाग्रकाभ्यां माध्यः शरस्तन्मुखपुच्छसूत्रे ॥ १७ ॥

भा०टी०—जलके समान इकसार करीहुई भूमिपर अभीष्टस्थानमें बिंदुकी कल्पना करके चन्द्रग्रहण होय तौ चन्द्रबिम्बके और सूर्यग्रहण होय तौ सूर्यबिम्बके जो अंगुल प्रत्यंगुल होय उनके अर्धपरिमाणका एक वर्तुल खींचकर और मानैक्यखंडके अंगुलके प्रमाणका कंपास अथवा सूत्रसे दूसरा एक वर्तुल उसी बिन्दुके ऊपरसे खींचकर उस बिंदुके ऊपर पूर्वपश्चिम और उत्तरदक्षिण दो रेखा खींचे. इस रीतिसे जिसकी दिशाका साधन कियाहै ऐसे बाह्य वर्तुलमें वलन दक्षिण होय तौ दक्षिण और उत्तर होय तौ उत्तरभागमें देदेवै. चन्द्रग्रहणके विषे स्पार्शिकवलन पूर्वदिशाके चिन्हसे उत्तर होय तौ उत्तर और दक्षिण होय तौ दक्षिणदिशामें देवै और मौक्षिकवलन पश्चिमदिशाके चि-

न्हसे अपनी २ दिशामें देवै. परंतु सूर्यग्रहणमें इससे विपरीत देवै. जैसा कि स्पर्शवलन पश्चिमदिशाके चिन्हसे और मोक्षवलन पूर्वदिशाके चिन्हसे अपनी २ दिशामें देवै. वलनका चिन्ह धनुष्यके आकारका करै. पीछे स्पर्श तथा मोक्षवलनोंके चिन्हसे स्पार्शिक तथा मौक्षिक शरके जितने अंगुल होंय उतनेही अंगुलोंपर स्पार्शिक तथा मौक्षिकशरका चिन्ह ज्यावत् करै. इसप्रकार धनुष्याकार बाह्यवर्तुलमें जो रेखाप्रदेश है उसके ऊपर दोनों शरोंके चिन्ह करके दोनों वलनचिन्होंके मध्यमें सूत्रका एक अग्र धारण करके अथवा कंपास रखकर स्पर्श वलनके चिन्हके ऊपरसे एक अर्धबिंब निकाले तथा मोक्षवलनके चिन्हके ऊपरसेभी एक अर्धबिंब निकाले. इन बिंबार्धोंका जहांपर योग होताहै उस भागमें मत्स्यके मुखपुच्छ विभागकी कल्पना करे. तात्पर्य इसका यह है कि समपरिमाण कंपाससे स्पर्श तथा मोक्षवलनोंके चिन्होंसे निकालेहुए जो दो वर्तुल हैं उनका संधि जहांपर होताहै उसमें मत्स्यका आकार उत्पन्न होताहै उसके मध्यमें मुख और पुच्छकी कल्पना करे और उस मत्स्यके मुखसे केन्द्रको व्याप्त करनेवाली एक रेखा पुच्छतक खींचे ॥ १६ ॥ १७ ॥

अब ग्रहणके स्पर्श, मध्य और मोक्षके स्थान कहतेहैं.

केन्द्राद्यथाशं स्वशराग्रकेभ्यो वृत्तैः कु

तैर्ग्राहकखण्डकेन ॥ स्युःस्पर्शमध्य ग्रहमोक्षसंस्था अथांकयेन्मध्यशराग्र चिन्हात् ॥ १८ ॥

भा०टी०—पीछे उस केन्द्रसे अर्थात् मध्यबिन्दुसे अपनी दिशाके तरफ मध्यशर देवै, इस रीतिसे तीनों शरोंके चिन्हके करे और सूर्यग्रहणमें चन्द्रबिंब और चन्द्रग्रहणमें भूभाबिंबके अर्धपरिमाण कंपाससे स्पर्शशरके चिन्हके एक वर्तुल निकाले, उस वर्तुलके भीतर ग्राह्य अर्थात् सूर्य और चन्द्रबिंबके वर्तुलमें जिस स्थानपर इस ग्राहक अर्थात् चन्द्र और भूभाबिंबार्धके वर्तुलका स्पर्श होताहै वहांपरही ग्रहणका स्पर्श होताहै. इसी रीतिसे मोक्षशरके चिन्हके ऊपरसे जो वर्तुल निकालाहो उसका जहांपर स्पर्श होताहै वहांपरही ग्रहणका मोक्ष होताहै, और मध्यशरके ऊपरसे जो वर्तुल निकलताहै उसका जहांपर स्पर्श होगा वहांपर ग्रहणका मध्य होगा. इसरीतिसे ग्रहणके स्पर्श, मध्य तथा मोक्षकी संस्था होतीहै. मध्यग्रास ग्राह्यबिंबका उल्लंघन करके जितना बाहर पडेगा उतनाही आकाशका ग्रास होगा, इसको पूर्णग्रास समझना और जब ग्राह्यबिंबके एकदेशको ग्रहण करे तौ उतनाही खण्डग्रास समझे और जब ग्राह्यबिंबको स्पर्श न करे तौ ग्रहणका अभाव है अर्थात् ग्रहण नहीं होगा ऐसा जाने. ॥ १८ ॥

अब सब ग्रहणोंके उपयोगी इष्टग्रास कहतेहैं.

आद्यन्तबाणाग्रगते च रेखे ज्ञेयाविमौ प्रग्रहमुक्तिमार्गौ ॥ मानान्तरार्धेन विलिख्य वृत्तं केन्द्रेऽथ तन्मार्गयुतद्वयेऽपि ॥ १९ ॥ भूभार्धसूत्रेण विधाय वृत्ते सम्मीलनोन्मीलनके च वेद्ये ॥ मार्गप्रमाणे विगणय्य पूर्वं मार्गांगुलघ्नं स्थितिभक्तमिष्टम् ॥ २० ॥ इष्टांगुलानि स्युरथ स्वमार्गे दद्यादिमानीष्टवशात्तदग्रे ॥ वृत्ते कृते ग्राहकखण्डकेन स्यादिष्टकाले ग्रहणस्य संस्था ॥ २१ ॥

भा०टी०—मध्यशराग्रबिन्दुसे स्पर्शशराग्रचिन्हपर्यन्त एक रेखा खींचे यह ग्राहकका ग्रहण करनेका मार्ग है ऐसा जाने और मध्यशराग्रबिन्दुसे मोक्षशराग्रचिन्हतक दूसरी एक रेखा खींचे वह ग्राहकका मोक्षका मार्ग समझे. इसरीतिसे तीनों शराग्रबिन्दुओंको स्पर्श करनेवाली रेखा धनुष्यके आकारकी होतीहै.

ग्राह्य और ग्राहकके बिंबोंका जो अर्ध उसके जो अंगुल होय तत्परिमित कंपाससे केन्द्रके ऊपर एक वर्तुल खीचे,यह

बाह्यवर्तुल जहांपर स्पर्श करे वहांपर सम्मीलन होताहै और ग्रहणके मोक्षमार्गका जहांपर स्पर्श होताहै वहांपर भूमाबिंबार्धपरिमित कंपाससे एक वर्तुल खींचकर उस बाह्यवर्तुलका जहांपर स्पर्श होताहै वहांपर उन्मीलन होताहै. भूभाबिंबार्ध ग्रहण करनेका प्रयोजन यह है कि सूर्यग्रहण प्रायः खग्रास नहीं होनेके कारण उसमें संमीलन और उन्मीलनकालका संभव कम है. कदाचित् होय तौभी अल्प होतेहैं और वहभी बिंबयोगही होताहै उसकोही खग्रास कहतेहैं. क्योंकि छाद्य और छादकबिम्ब समान होतेहैं.

अब इष्टग्राससाधन कहतेहैं—कोई जिज्ञासु ऐसा प्रश्न करेकी ग्रहणके स्पर्शकालसे अभीष्टकालतक बिम्बका कितना ग्रास हुवा अथवा मोक्षकालसे प्रथम अभीष्टकालमें कितना ग्रास हुवाहै, जब ग्रासमार्गरेखांगुलोंको और मोक्षमार्गरेखांगुलोंको गिने, फिर उन रेखांगुलोंसे अलग २ इष्टकालको गुणाकरे, जो गुणनफल आया होय उसको स्पर्शकालसे इष्टग्रास चाहिये तौ स्पर्शस्थितिसे और मोक्षकालसे पूर्व इष्टग्रास चाहिये तौ मोक्षस्थितिसे भागकर जो अंगुलादि फल लब्ध होय उसको अपने २ मार्गमें देवै, जैसे कि इष्टस्पष्टशरसे स्पर्शमार्गमें और मोक्षशरसे मोक्षमार्गमें देदेवै, जो इष्टांगुल आयेहों उतनेही अंगुलोंपर चिन्ह करके उसके आगे इष्टांगुलाग्रचिन्हपर ग्राहकबिंबार्धपरिमित कंपाससे वर्तुल खींचे,

ग्राह्यबिंबका जितना आच्छादन हुआहो उतनाही इष्टकालमें ग्रास हुआ ऐसा जाने ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ चन्द्रपर्वाधिकारःपंचमः ।

अथ सूर्यग्रहणाधिकारःषष्ठः ।

अब नतोन्नतांशसाधनप्रकार लिखतेहैं-

दर्शान्तकाले त्रि ३ महीनलग्नं कार्यं च तत्क्रान्तिपलान्तरैक्यम् ॥ भिन्नैकदिक्त्वे नतभागकाः स्युः खाङ्कच्युतास्ते पुनरुन्नतांशाः ॥ १ ॥

मा०टी०—अमावास्याके अन्तका लग्न करके उस लग्नमें तीन राशि घटादेय तब त्रिभोनलग्न होताहै. तिस त्रिभोनलग्नसे पूर्वोक्तप्रकारसे क्रान्ति लाकर उन क्रांत्यंशोका और अक्षांशोंका संस्कार करै अर्थात् क्रान्ति दक्षिण होय तौ क्रान्त्यंशोको अक्षांशोंमें युक्त करदेय और क्रान्ति उत्तर होय तौ उन क्रान्त्यंशोंको अक्षांशोंमें घटादेय तब दक्षिण नतांश होतेहैं और क्रान्ति उत्तर होय और अक्षांशोंकी अपेक्षा अधिक होयतब क्रान्त्यंशोमें अक्षांशोंको घटानेसे उत्तर नतांश होतेहैं और इन नतांशोंको ९० मे घटादेय तब उन्नतांश होतेहैं.

अब लम्बन, मध्यकाल और नतिसाधन लिखतेहैं-

त्रिभोनलग्नार्कविशेषशिञ्जिनी खराम

३० भक्ता घटिकादि लम्बनम् ॥ तदुन्नत ज्यानिहतं नखेन्दु १२० भिर्भक्तं स्फुटं स्यात्स्वमृणं तिथौ क्रमात् ॥२॥ त्रिभोन लग्नाधिकहीनके रवेस्ततोऽसकृल्लम्बविल म्बनादिकम्॥नतांशजीवार्कलवान्विता ष्टघ्न्नतांशादिक् चांगुलपूर्विका नतिः॥३

भा०टी०—त्रिभोनलग्न और दर्शान्तस्पष्टरवि इन दोनोंका अन्तर करके जो अंश आवै उनसे ज्यासाधन करके उस ज्यामें ३० का भाग देय तब जो लब्धि होय वह घट्यादि मध्यम लम्बन होताहै. पूर्वोक्तप्रकारसे आयेहुवे उन्नतांशोंकी ज्यासे इस घटिकादि मध्यमलम्बनको गुणा करै तब जो गुणनफल होय उसमें १२० का भाग देनेसे जो लब्धि हो वह घटिकादि स्फुटलम्बन होताहै. यह लम्बन यदि त्रिभोनलग्न दर्शान्तस्पष्टरविकी अपेक्षा अधिक होय तौ धन और कम होय तौ ऋण होताहै. दर्शान्तकी घटिकाओंमें लम्बनको धन या ऋण करै तब लम्बनसंस्कृत दर्शान्त होताहै· इस लम्बनसंस्कृत दर्शान्तको इष्टकाल समझे और फिर उससे रवि, लग्न इत्यादिका साधन करके प्रथम कही पद्धतिसे उस त्रिभोनलग्नसे लम्बन लाकर उसका दर्शान्तकी घटिकापलोंमें संस्कार करे. फिरभी इस लम्ब-

नसंस्कृत दर्शान्तसे रवि, त्रिभोनलग्न, लम्बनादि साधन करके उस लम्बनका दर्शान्तघटिकादिमें पूर्ववत् संस्कार करे. इसरीतिसे जबतक दर्शान्त स्थिर होय तहांतक बारबार संस्कार करै. जो लम्बनसंस्कृत स्थिर दर्शान्त है वह सूर्यग्रहणमे मध्यकाल होताहै.

लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न नतांशोंसे ज्या साधन करके उस ज्यामें १२ का भाग देय तब जो कला आदि लब्धि होय वह उस ज्यामें युक्त करे. फिर उसमें ८ का भाग देनेसे जो लब्धि होय वह अंगुलादि नति होतीहै. और इस नतिकी दिशा उन नतांशोंके अनुसार दक्षिण अथवा उत्तर होतीहै. प्रायः यह नति दक्षिणही रहतीहै ॥ २ ॥ ३ ॥

अब मध्यस्थित्यादिका साधनप्रकार कहतेहैं.

स्पष्टोऽत्र बाणो नतिसंस्कृतः स्याच्छन्नं ततःप्राग्वदतः स्थितिश्च ॥ स्थित्योनयुक्ताद्गणितागताच्च तिथ्यन्ततो लम्बनकं पृथक्स्थम् ॥ ४ ॥ स्वर्णं च तस्मिन्प्रविधाय साध्यस्तात्कालिकः स्पष्टशरः स्थितिश्च ॥ तयोनयुक्ते गणितागते तत्स्वर्णं पृथक्स्थं मुहुरेवमेतौ ॥ ५ ॥ स्यातां स्फुटौ प्रग्रहमुक्तिकालौ सकृत्क्

ते लम्बनके सकृत्स्तः ॥ तन्मध्यकाला न्तरगे स्थिती स्फुटे शेषं शशांकग्रह णोक्तमत्र ॥ ६ ॥

भा०टी०—स्थिरलम्बनसंस्कृत तिथ्यन्तकालीन सपातचन्द्र-मासे उत्पन्न हुवा जो शर है उसका नतिके साथ संस्कार (दोनोंकी एक दिशा होय तौ योग और (होय तौ अन्तर) करे तब सूर्यग्रहणके विषे स्पष्टशर होताहै. इस स्पष्टशरसे चन्द्रग्रहणाधिकारमें कही पद्धतिसे ग्रास और मध्यस्थितिका साधन करे. स्पर्शकाल साधन करना हो तौ पूर्वोक्तरीतिसे आयाहुवा तिथ्यन्त स्पर्शस्थितिसे रहित करे अर्थात् तिथ्यन्तमें स्पर्शस्थिति घटादेवै और मोक्षकाल साधन करना हो तौ तिथ्यन्तमें मोक्षस्थिति युक्त करे तब स्पर्शतिथ्यन्त और मोक्षतिथ्यन्त होतेहैं. इन दोनों तिथ्यन्तोंसे पूर्वोक्तप्रकारसे लंबन साध्य करे, पीछे उस लम्बनको अलग २ दो जगहपर स्थापन करे. यह लम्बन स्पर्शतिथ्यन्त और मोक्षतिथ्यन्तमें पूर्वोक्तप्रकारसे धन ऋण करे, इस लम्बनसंस्कृत तिथ्यन्तसे स्पष्टशर और स्थितिका प्रथमकी पद्धतिके अनुसार साधन करे, फिर उस स्थितिसे स्पर्शकाल और मोक्षकाल साधन करनेके लिये गणितागत तिथ्यन्तमें संस्कार (स्पर्शमें हीन और मोक्षमें युक्त) करनेसे जो स्पर्शतिथ्यन्त और मोक्षति-

ध्यन्त आवै उसमें पृथक् स्थित लम्बनका धन अथवा ऋण पूर्वोक्तपद्धतिसे संस्कार करै और फिरभी इस लम्बनसंस्कृत तिथ्यन्तसे लंबन, स्पष्टशर, स्थिति पूर्ववत् निकाले जबतककी यह लम्बन और स्थिति स्थिर होजाय. ऐसे करनेपर स्पर्शकाल और मोक्षकाल स्पष्ट होतेहैं. यह असकृत् लम्बनका प्रकार कहा. इसप्रकारसे गणित करनेपर ग्रहणके स्पर्श, मध्य और मोक्षकालमें भूल नहीं रहैगी और स्पर्श तथा मोक्षलम्बन सकृत् (एक बार) करनेसे स्पर्शमोक्षकालोंमें स्थूलता रहनेका संभव है क्योंकि वह सकृत् (एक बार किये हुवे) हीहैं.

स्थिर स्पर्शकाल और स्थिर मध्यग्रहणकाल इनका जो अन्तर वह स्पर्शस्थिति और स्थिर मोक्षकाल और स्थिर ग्रहणमध्यकाल इनका जो अंतर वह मोक्षस्थिति होतीहै. शेष वलनादि सब गणितप्रकार चन्द्रग्रहणाधिकारोक्तपद्धतिसे करे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

अब ग्रहणका संभव होनेपर ग्रहण नहीं है
ऐसा कहना और वर्णज्ञान कहतेहैं।

अर्कांशकोऽर्कस्य विधोर्नृपांशो नादेशनीयः खलु खण्डितोऽपि ॥ अल्पार्धसर्वग्रहणे शशी स्याद्धूम्रोऽसितो बभ्रुरिनस्तु कृष्णः ॥ ७ ॥

भा०टी०—गणितसे आयाहुवा सूर्यका ग्रास जो
बके द्वादशांश तुल्य होय तब सूर्यग्रहणका ⛬
और चन्द्रग्रहणमें चन्द्रबिंबके षोडशांशसे अधिक
नहीं होय जब चन्द्रग्रहणका असंभव है ऐसा कहना.

चन्द्रग्रहणमे ग्रास चन्द्रबिंबका चतुर्थांश अथवा उससे
भी कमती होय तब चन्द्र धूम्रवर्ण (धूमाकासा रंग)
और यदि चन्द्र अर्द्धग्रस्त होय तौ कृष्णवर्ण और
ग्रस्त होय तौ पिंगलवर्ण (बिजुलीकेसे रंग) का होताहै और
सूर्यग्रहणमे सूर्य तौ निरन्तर कृष्णवर्णही होताहै ॥ ७ ॥

अब ग्रहणसंभव और ग्रहणके स्वामी जाननेकी-
रीति कहतेहैं ।

गोचन्द्रा हिमगोर्भवाश्च तरणेर्मानैक्य
खण्डं शरे तन्न्यूने ग्रहणं भवेदिति बुधै
श्चिन्त्यः पुरा संभवः ॥ चक्राढ्यः खलु
मध्यमार्कतमसोर्योगो द्विनिघ्नो द्वियु
क् पर्वेशो मुनिभक्तशेषकमितो ज्ञेयो
विरिंच्यादिकः ॥ ८ ॥

भा०टी०—चन्द्रका मानैक्यखण्ड परमावधि १९ होताहै
और सूर्यका मानैक्यखंडका परमावधि ११ का होताहै जो
स्पष्टशर मानैक्यखण्डसे कमती होय तौ चन्द्र और सूर्यके

ग्रहणका संभव है ऐसा जाने. इसरीतिसे विद्वान्लोगोंने प्रथम ग्रहणके संभवासंभवको जानकर गणितको आरंभ करना.

मध्यमसूर्यमें राहु युक्त करे, फिर उस योगमें चक्र युक्त करे, पीछे उस योगको दोसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें २ दो युक्त करे तब जो अंक होय उनमें ७ सातका भाग देय तब यदि ० शून्य शेष रहै तौ ब्रह्मा, १ एक शेष रहै तौ चन्द्रमा, २ दो शेष रहै तौ इन्द्र, ३ तीन शेष रहै तौ कुबेर, ४ चार शेष रहै तौ वरुण, ५ पांच शेष रहै तौ अग्नि, ६ छः शेष रहै तौ यम ग्रहणका स्वामी होताहै. बृहत्संहिताकेविषे वराहमिहिराचार्यने लिखाहै.

"षण्मासोत्तरवृद्ध्या पर्वेशाः सप्तदेवताः क्रमशः॥ ब्रह्मशशीन्द्रकुबेरा वरुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः॥"

उत्तरोत्तर छः २ मासकी वृद्धि करके क्रमसे ब्रह्मा, चन्द्रमा, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम, यह सात देवता ग्रहणके स्वामी होतेहैं, ज्योतिषीलोग इन ग्रहणके स्वामियोंसे संसारसंबंधी शुभाशुभ फल कहतेहैं ॥ ८ ॥

इति श्रीसिद्धान्तचिन्तामणौ सूर्यपर्वाधिकारःषष्ठःसमाप्तः।

अब सारणीसे मध्यमग्रह बनानेका प्रकार कहतेहैं।

प्रथम ग्रंथमें कही पद्धतिसे अहर्गणको साधन करे, पीछे

उस अहर्गणको एकं, दशं, शतं, सहस्रं, इसप्रकार गणना करे, जो जो अंक मिले वह अपने २ गृहके कोष्टकोंसे एकांक दशांक, शतांक, सहस्रांक जो कोष्टक हैं उसीसे ग्रहण करे और जोडदे, उसी योगमें चक्रप्रमाण नीचे लिखेहुवे क्षेपक युक्त करे तब वह स्पष्ट मध्यमग्रह होताहै. उसमें ग्रथप्रमाण देशान्तर देवै.

अब मन्दफल लानेका प्रकार कहतेहैं।

ग्रहको अपने अपने मन्दोच्चसे घटादेवै वह मन्दकेन्द्र होताहै. फिर उस मन्दकेन्द्रका भुज करे, भुजके अंश बनालेवै, फिर उस भुजांशप्रमाण मन्दफलका कोष्टक ग्रहण करे, फिर उसके अग्रके कोष्टकको ग्रहण करे, पीछे दोनोंका जो अंतर उसको कलादिकोंसे गुणा करे, जो गुणनफल मिले उसमें ६ छः का भाग देनेसे जो फल लब्ध हो वह मन्दफलमें युक्त करे तब वह स्पष्ट मन्दफल होताहै. उसी मन्दफलको मध्यमग्रहमे धन ऋण करे. केन्द्र मेषादि छः राशिमें होय तौ धन और तुलादि छः राशिमें होय तौ रुण करे, तब वह मन्दस्पष्ट ग्रह होताहै. उसी मन्दफलके नीचे जो गतिफल है उसको मध्यमगतिमें धन और ऋण कर तब वह मन्दस्पष्ट गति होतीहै.

अब बीज देनेकी रीति कहतेहैं।

उदयांतर सूर्यराश्यंशप्रमाण सूर्यचन्द्रमे देवै और भुज-

फल सूर्यके मन्दकेन्द्र भुजांशप्रमाण देवै और चरफल सूर्यके राश्यंशप्रमाण सर्वग्रहोंमें देवै.

अब शीघ्रफल लानेकी रीति कहतेहैं।

ग्रहको अपने २ शीघ्रोचसे घटादेवै वह शीघ्रकेन्द्र होताहै. उस शीघ्रकेन्द्रकी राशि छःसे अधिक होवे तौ १२ राशिमें घटादेवै, फिर शेष जो बचे उसका भुज करके उसके अंश बनालेवै, फिर उस भुजांशप्रमाण कोष्टकसे शीघ्रफलके अंक ग्रहण करे, फिर उसके अग्रकोष्टकके अंक ग्रहण करे और दोनोंका अंतर निकालके उन अंतरांकोंसे कलादिको गुणा करे जो गुणनफल आवै उसमें ६० का भाग देवै जो फल लब्ध होय वह अग्रकोष्टकके नीचेके अंक प्रथम कोष्टकांकोसे अधिक हो तौ शीघ्रफलमें धन करे और यदि अग्रकोष्टकांक प्रथम कोष्टकांकोंसे कमती हो तौ शीघ्रफलमें ऋण (घटादेवै) करे वह स्पष्ट शीघ्रफल होताहै. उसीको मन्दस्पष्ट ग्रहमें धन ऋण करे. शीघ्रकेन्द्र मेषादि छः राशिमे हो तौ धन करे और तुलादि छः राशिमें हो तौ ऋण करे तब वह शीघ्रस्पष्ट ग्रह होताहै. परंतु यह मन्दफल और शीघ्रफल ये दोनो मंगलमें प्रथमके जो फल वह आधे करके देवैं.

अब स्पष्टगति लानेकी रीति कहतेहैं।

शीघ्रोच्चके गतिसे मन्दस्पष्ट गतिको घटादेवै वह शी-

घ्रकेन्द्रकी गति होतीहै. उसी शीघ्रकेन्द्रके गतिको ज्याका जो भोग्यखंडक उसीसे गुणा करे और उस गुणनफलको ४० चालिससे गुणा करे जो गुणनफल हो उसको अलग पृथक् स्थानमें धरे, फिर शीघ्रफलके नीचे लिखेहुवे मूलको लेकर उसको ७ से गुणा करे जो गुणनफल मिले उसीका पृथक् धरे हुवे गुणनफलमें भाग देनेसे जो फल लब्ध होवै वह गतिफल होताहै. उस गतिफलको गतिमेंसे घटादेवै तब वह स्पष्टगति होतीहै. जब शीघ्रोच्चकी गतिमेंसे नहि घट सकै तो उसी गतिफलमेंसे शीघ्रोच्चकी गतिको घटादेवै वह स्पष्ट वक्रगति होतीहै.

अब ग्रन्थकार स्वनाम कथनपूर्वकग्रंथकी समाप्ती करतेहैं

श्रीमच्छागरसन्निधौ सुरमणिग्रामे कराचीपुरे भारद्वाजकुलोद्भवो द्विजवरो दैयालशर्मात्मजः॥ रूपीचन्द्र ह वै तदंघ्रिभजनादालोक्य खेटागमान् चक्रे ज्योतिषभूषणं च विलसत्सिद्धान्तचिन्तामणिम्॥ १॥

भा०टी०–समुद्रके समीपप्रदेशमें कराचीनामक प्रांत है उसमें सुरमणिनामका एक ग्राम है उस ग्राममें निवास करनेवाले भारद्वाजगोत्री और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मेरे पिताजी

दयालराम दैवज्ञ तिनके चरणारविन्दकी सेवा करनेसे अनेक ज्योतिषग्रन्थोंके अवलोकनसे जो कुछ ज्ञान मुझ रूपचन्द्र दैवज्ञको प्राप्त हुवाहै तिसके अवलम्बनसे ज्योतिषशास्त्रके भूषणभूत इस सिद्धान्तचिन्तामणिनामक करणग्रन्थको मैंने रचाहै ॥ १ ॥

बाणाक्षिवसुचन्द्रेब्दे ह्याश्विनस्यासिते दले ॥
प्रातःकाले द्वितीयायां तिथौ च गुरुवासरे ॥ १ ॥
चिन्तामण्याख्यग्रन्थस्य शस्तां नाम्ना सुबोधिनीम् ॥
दैवज्ञसीतारामोऽहं भाषाटीकामपीपरम् ॥ २ ॥

इति श्रीरूपचन्द्रदैवज्ञकृतौ सिद्धान्तचिन्तामण्याख्यकरणग्रंथः कोंकणदेशान्तर्गत (राजपट्टण) ग्रामवास्तव्येन मुम्बापुरीस्थगोकुलदासतेजपालसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकश्रीमूळशंकरदैवज्ञानां सान्निध्याधिगतविद्येन जांभेकर कुलोत्पन्नश्रीयुतश्रीकृष्णात्मजसीतारामशर्मणा विरचितयसुबोधिन्याख्यया भाषाटीकया सनाथीकृतः समाप्तिमगमत् ॥ शुभं भवतु ॥

समाप्तम्.

योगवासिष्ठ.

मुमुक्षु वैराग्यप्रकरण संस्कृत श्लोक और भाषाटीका ऐसी सुंदर सुललित है साधारण पढा मनुष्य भी भली भाँति समझ सक्ता है आप लोग इस अपूर्व ग्रन्थके लेनेमें न चूकिये मूल्य विलायती कपडेकी जिल्दका २ रु. कागजकी जिल्दका १॥ रु.

निर्णयसिंधु मूल भाषाटीकासहित.

निर्णयग्रथोंमें यह ग्रन्थ सर्वश्रेष्ठ है, निर्णय विषयका जब कोई झगडा उठाता है, तब हिमालयसे लेकर सेतुबंध रामेश्वरतक विन्दूमात्र इसी ग्रन्थकी शरण लेतेहैं, कपडेकी जिल्द मूल्य ६ रु. डा. म. १२ आना.

शिक्षाभूषण.

आजकल धनी साहूकार और व्यापारियोंका कार्य बहुतायतसे अंग्रेजोंके साथ रहताहै परन्तु अंग्रेजी न पढे रहनेके कारण उनके साथ वार्तालापादिमें मुह ताकते रहजातेहैं इस पुस्तकके याद कर लेनेसे बातचीत करना तार लिखना पढना आदि आवश्यकीय बातें आसकती हैं २५० पृष्ठकी चिकने मोटे कागजपर विलायती कपडेकी जिल्दकी बधीहुई पुस्तकका दाम २ रुपया है।

पत्रीवर्षदीपक मूल भाषाटीकासहित.

इसमें जन्मपत्र और वर्ष बनानेकी विधि उत्तम प्रकारसे दी गई है यह पुस्तक ज्योतिषियोंको परमोपयोगी है मूल्य १। रु डा. म. २ आना.

भर्तृहरिशतकत्रय.

श्लोकके ऊपर अन्वयके अकनीचे संस्कृत टीका फिर भाषाटीका दी है एकबात और भी विशेषकी है कि महाराज प्रतापसिंहजीने जो इसके प्रत्येक श्लोकोंके दोहा छप्पय कुंडलिया आदि रचेथे वेभी प्रत्येक श्लोकके नीचे लगा दियेहैं जो महाशय खरीद चुके हैं वे एकबार फिरभी इसे अवश्य खरीदेंगे मूल्यभी वही है १ रु. डा. म २ आना.

ज्योतिषसार भाषाटीकासहित.

जिसमें २३० श्लोक अधिक और बढाये गये हैं इसके पढनेसे पाठकोंको ज्योतिषके किसी ग्रंथकी आवश्यकता न रहेगी. बल्कि भाषा बहुतही मनोहरहै मूल्य १२ आना डा. म. २ आना.

जातकालंकार.

संस्कृत और भाषाटीकासहित बडाही उत्तमहै मू. ८ आ. डा.म.१ आ.

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः॥

रवे रेकांकपंक्तिः									रवेर्दशाक पंक्तिः									रवेः शतांक पंक्तिः									रवे.लक्ष			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	६	९	१	४	७	१०	२	५	८	५	२	१
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१९	२९	९	१९	२९	८	१८	२८	८	१७	२५	४	१२	२१	२९	८	१७	२५	२१	१६	१२
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	४२	३४	२५	१६	८	५९	५०	४२	३३	७	४०	१४	४८	२१	५५	२८	२	३६	१२	४८	२४
८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	४३	५	२६	४८	१०	३१	५३	१५	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	२०	३०	४०
१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४२	२४	६	४८	३०	१२	५५	३७	१९	१	२	३	४	५	७	८	९	१०	१२	२४	३६	४७

॥अथचक्रमितिक्षेपकाः॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०		९	९	९	९	९	९
१३	११	९	८	६	४	२	०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१८	१६	१४	१२	१०	९	७	५	३	१	२९	२८	२६	२४	२	२०	१९
२६	४०	५८	३	१९	३०	४१	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१३	३३	४	५	५५	७	७	२९	०		१
४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	१२	१	५०	३९	२८	१७	६	५५	४४	३३	२२	११	०			७		५					

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणि:

अथचंद्रैकांकपंक्ति:									अथचंद्र दशांकपंक्ति:									अथ शतांकपंक्ति:									चंद्रसहस्त्रां			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	८	१	५	९	२	६	११	३	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	२	१०	४
३२	२६	९	३३	५	११	२	१५	२८	११	२३	५	१७	२८	१०	२२	४	१५	२७	२५	२३	२०	१८	१५	१३	११	८	६	१२	१९	२५
६०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	३१	१७	३	४१	३४	२०	६	५२	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२६	५	४३	२१	४२	३	२५
३४	१	४४	१९	५४	२९	४	३९	१३	४८	३७	२६	१५	३	५२	४१	३०	१८	७	११	२२	३०	३७	४५	५२	०	७	१५	३१	४६	२
२२	४५	३७	३०	२२	१५	७	०	५२	४५	३०	१६	१	४६	३२	१७	२	४७	२३	६	२९	१२	४५	१८	५१	२४	५७	३१	१	३२	३

॥अथचक्रमितिक्षेपका:॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७
१०	६	२	२९	२५	२१	१७	१४	१०	६	२	२८	२५	२१	१७	१३	१०	६	२	२८	२५	२१	१७	१३	९	६	२	२८	२४	२१	१७
३	३७	११	५	१९	३२	४६	०	१४	२८	४२	५५	९	२३	३७	५१	४	१८	३२	४६	०	१४	२७	४१	५५	९	२३	३६	५०	४	१८
३१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	१२	१	५०	३९	२८	१७	६	५५	४४	३३	२२	११	०	४९	३८	२७	१६	५	५४	४३	३२	२१

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः॥

अथोऽथैकांकपंक्तिः									अथोऽथदशांकपंक्तिः									अथोऽथशतांकपंक्तिः									सहस्रांकः			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	७	११	२
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२९	१०	२१	१२	४	२५
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	१	८	१६	२४	३३	४०	४८	५७	५	१३	२१	४३	४	२६
४०	३३	२	४३	२४	५	४६	२७	८	४८	२७	२६	१५	४	५३	४२	३१	२०	९	१९	२९	३८	४८	५८	८	१७	२७	७	१४	५१	२९
३५	४७	४१	२५	२९	२३	१६	१०	४	५८	५६	५५	५३	५२	५१	४८	४७	४५	४२	२७	११	५५	३९	२३	७	५०	३४	१८	३६	५५	

॥ अथचक्रमितिक्षेपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	६	९	०	३	६	९	०	३	६	९
२६	२४	२१	१८	१५	१३	१०	७	४	२	२९	२६	२३	२१	१८	१५	१२	१०	७	४	१	२९	२६	२३	२०	१८	१५	१२	९	७	४
५०	५	२०	३५	५०	५	२०	३५	५०	५	२०	३५	५०	५	२०	३५	५०	५	२०	३५	५०	५	२०	३५	५०	५	२०	३५	५०	५	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः॥

अथपातैकांकपंक्तिः									अथपातदशांकपंक्तिः									अथपातशतांकपंक्तिः									स[illegible]ांक			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	३	५	७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	१०	१५	२१	२६	१	७	१२	१७	२३	१६	९	१
३	६	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३१	३	३५	७	३९	१०	४२	१४	४६	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	०	०	०
११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	१	१	२	३	४	४	५	५	७	१४	२१	२८
४९	३७	२५	१२	२	५०	३८	२७	१५	४	८	१२	४७	२१	२५	२९	३३	३८	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३७	१९	१	२	३	४

॥अथचक्रमितिक्षेपकाः॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
११	६	१	८	३	१०	५	०	७	२	१०	५	०	७	२	९	४	११	६	१	८	४	११	६	१	८	३	१०	५	०	७
२	५	८	११	१४	१७	१९	२२	२५	२८	१	४	६	९	१२	१५	१८	२१	२३	२६	२९	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२७
५८	४८	३८	२८	१८	८	५८	४८	३८	२८	१८	८	५८	४८	३८	२८	१८	८	५८	४८	३८	२८	१८	८	५८	४८	३८	२८	१८	८	५८
३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः॥

अथभौमैकांकपंक्तिः

१	२	३	४	५	६	७	८	९
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४
३१	२	३४	५	३७	८	४०	११	४२
२६	५२	१९	४५	१२	३८	५	३१	५८
२८	५६	२४	५२	२०	४९	१७	४५	१३

अथभौमदशांकपंक्तिः

१	२	३	४	५	६	७	८	९
०	०	०	०	०	१	१	१	१
५	११	१६	२०	२६	१	६	११	१७
१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९
२४	४९	१४	३८	३	२८	५२	१७	४२
४१	२३	५	४६	२८	९	५१	३३	१४

अथभौमशतांकपंक्तिः

१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	५	६	८	१०	०	१	३
२२	१४	७	२९	२२	१४	६	२९	२१
२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३७
६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२
५६	५२	४८	४५	४१	३७	३३	३०	२६

सहस्रांकः

१	२	३	४
५	१०	४	९
१४	२८	१२	२
१	२	३	४
९	१८	२८	३७
२२	४५	७	३०

॥अथचक्रमितिक्षेपकाः॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
७	५	३	१	०	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	५	३
१४	१९	२३	२८	२	७	११	१६	२०	२५	२९	४	८	१३	१७	२१
५७	३५	५३	३१	४९	१७	४५	१३	४१	९	३०	५	३३	१	२९	५७
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५

१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	०	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	५	३	१	११
२६	०	५	९	१४	१८	२३	२७	२	६	११	१५	२०	२४	२८
२५	५३	३१	४९	१७	४५	१३	४१	९	३७	५	१	९	२१	५७
१५	१५	१५	१५	१५	१४	१५	५	१५	१५	१५	५	१५		५

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः॥

अथबुधशीघ्रोच्चैकांकपंक्तिः									अथबुधशीघ्रोच्चदशांकपंक्तिः									अथबुधशीघ्रोच्चशतांकपंक्तिः									सहस्रां०			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	४	५	६	८	९	१०	०	१	३	४	६	८	९	११	१	२	४	८	१	५
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	२	६	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	८	२७	२६	६	२५	१४	३	२२	१३	२४	६	१९
५	११	१६	२२	२७	३३	२८	४४	४९	५५	५०	४६	४१	३६	३२	२७	२३	१८	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	५१	५	१९	३८	५७	१६
३२	४	३७	१	४१	१४	४६	१८	५१	२३	५७	१०	३४	५७	२१	४४	८	३१	५५	५०	४५	४०	३५	३०	२५	२०	१५	१०	२०	३०	४१
२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३०	०	३०	०	३०	१	३१	१	३१	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१७	३५	५३	११

॥ अथचक्रमितिक्षेपकाः

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	१०	६	२	१०	५	१	९	५	१	९	४	०	८	४	०	८	३	११	७	३	११	६	२	१०	६	२	१०	५	१	९
२४	१८	१३	८	३	२२	२२	१७	१२	६	१	२६	२१	१५	१०	५	०	२४	१९	१४	९	३	२८	२३	१८	१३	७	२	२७	२२	१६
८	५३	३८	२३	९	५४	३९	२५	१०	५५	४१	२६	११	५६	४२	२७	१२	५८	४३	२८	१४	५९	४४	२९	१५	०	४५	३१	१६	१	४७
०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०

॥अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः॥

अथगुरोरेकांकपंक्तिः									अथगुरोर्दशांकपंक्तिः									अथगुरोःशतांकपंक्तिः									सहस्रा			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	८	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	१६	२४	३	११	१९	२८	६	१४	३३	१६	९	२
४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	३९	२९	१९	९	५९	४९	३८	२८	१८	३७	५५	५४	३२	५१	१०	२८	४७	५	११	७	
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५४	५३	५३	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४३	३४	९	४४	१९	५४	२९	३	३८	१३	४८	३	४	
९	१७	२६	३५	४४	५३	२	११	२०	२९	५८	२७	५६	२५	५४	२३	५२	२१	५०	३९	३०	२०	१०	०	४९	४०	२९	१	९	९	९

॥ अथचक्रमितिक्षेपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
११	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	१	०	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	४	३	२	१	०	११	१०	९	९
११	१४	१८	२२	२५	२९	३	६	१०	१४	१८	२१	२५	२९	२	६	१०	१३	१७	२१	२५	२८	२	६	९	१३	१७	२०	२४	२८	३
४	४६	२८	११	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४		२८	१०	५२	३		६	५०	२	४
५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१		५१	५१						

॥ अथब्रह्मपक्षेसिद्धांतचिंतामणिः ॥

अथशुक्रैकांकपंक्तिः									अथशुक्रदशांकपंक्तिः									अथशुक्रशतांकपंक्तिः									सह[illegible]			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	१०	४	९	२	८	१	६	०	५	१०	४	९
१	३	४	५	८	९	११	१२	१४	१६	२	१८	४	२०	६	२२	८	२४	१०	२०	०	१०	२१	१	११	२१	१	१२	२४	६	१८
३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४९	२५	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१२	२५	३८	५१	४	१७	३०	४३	५५	८	१७	२६	३५
७	१५	२३	३०	३८	४६	५४	१	९	१७	३४	५१	९	२६	४३	१	१८	३५	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४१	३१	२२
४४	२९	११	५५	३९	२२	६	५०	३४	१८	३६	५५	१३	३१	४९	८	२६	४४	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	०	३०	१

॥ अथचक्रमितिक्षेपकाः ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३	१	०	१०	९	७	६	४	३	१	०	१०	९	७	६	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१	११	१०	८	७	५
१२	२६	१०	२४	८	२३	७	२१	५	२०	४	१८	२	१६	१	१५	२९	१३	२८	१२	२६	१०	२४	९	२३	७	२१	६	२०	४	१८
३	१६	२९	४३	५६	१०	२३	३६	५०	३	१७	३०	४४	५७	१०	२४	३७	५१	४	१७	३१	४४	५८	११	२५	३८	५१	५	१८	३१	४५
०	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	०	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	०	२५	५०	१५	४०	५	३०

॥ अथसिद्धांतचिंतामणि.

अथशनेरेकांकपंक्तिः									अथशनेर्दशांकपंक्तिः									अथशनेः [illegible] कप :												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	३	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४१	१	२२	४३	३	२४	४५	५	२६	४७	११	४५
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	७	११	१५	१९	२३	२६	३०	३४	३८	१६	५५	३३	१२	५०	२९	७	४५	२४	४८	११	३७
२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	४१	३१	२२	१२	३	५४	४४	३५	२६	५२	१८	४४	१०	३६	१	२७	५३	१९	३९	[illegible]	६

॥अथचक्रमितिक्षेपकाः॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
४	९	१	६	१०	३	७	०	४	९	१	६	१०	३	७	०	४	९	१	६	१०	२	७	११	४	८	१	५	१०	२	७
२८	१२	२७	११	२६	१०	२४	९	२३	७	२१	६	२०	४	१९	३	१७	२	१६	०	१४	२९	१३	२७	११	२६	१०	२५	९	२३	७
५५	१३	३१	४०	१७	२५	४३	१	१९	३७	५६	१४	३२	५०	८	२६	४४	२	२०	३८	५६	१४	३२	५०	८	२६	४४	२	२०	[illegible]	९
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	।	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	।		५			५			

॥श्री हरि॥ अथसूर्यगतांशोपरिस्थैरुदयांतरविकला [illegible]

गतां	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	[illegible]
मेष ० +	० १७	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०+	० २१	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० +
वृष १ +	० २१	० २३	० २२	० २२	० २२	० २१	० २१+	० २१	० २०	० २०	० १९	० १९	० १८	० १८	० १७	० १६	० १६	० १५	० १५	० १४	० १३	० १३	० १२	० १२	० ११	० १०	० ९	० ८	० ७	० ६	१ +
मिथुन २ +	० ६	० ५	० ४	० ३	० २	० २	० १+	० ०ध	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	२ +
कर्क ३ ध	० १७	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २१	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	३ ध
सिंह ४ ध	० २३	० २३	० २२	० २२	० २२	० २१	० २१	० २१	० २०	० २०	० १९	० १९	० १८	० १८	० १७	० १६	० १६	० १५	० १५	० १४	० १३	० १३	० १२	० १२	० ११	० १०	० ९	० ८	० ७	० ६	४ ध
कन्या ५ ध	० ६	० ५	० ४	० ३	० २	० २	० १ध	० ०+	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	५ +
तुला ६ +	० १७	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २१	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	६ +
वृश्चिक ७ +	० २३	० २३	० २२	० २२	० २२	० २१	० २१	० २१	० २०	० २०	० १९	० १९	० १८	० १८	० १७	० १६	० १६	० १५	० १५	० १४	० १३	० १३	० १२	० १२	० ११	० १०	० ९	० ८	० ७	० ६	७ +
धन ८ +	० ६	० ५	० ४	० ३	० २	० २	० १+	० ०ध	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	८ ध
मकर ९ +	० १७	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २१	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	० २३	९ ध
कुंभ १० ध	० २३	० २३	० २२	० २२	० २२	० २१	० २१	० २१	० २०	० २०	० १९	० १९	० १८	० १८	० १७	० १६	० १६	० १५	० १५	० १४	० १३	० १३	० १२	० १२	० ११	० १०	० ९	० ८	० ७	० ६	१० ध
मीन ११ ध	० ६	० ५	० ४	० ३	० २	० २	० १ध	० ०+	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	११ +

॥अथरवेर्गतांशोपरिचंद्रउदयांतरसारिणीअयनांशाः २३।० ॥

गता	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	श
मेष	४ ५	४ १४	४ २३	४ २९	४ ३६	४ ४३	४ ५०	४ ५७	५ २	५ ७	५ १२	५ १७	५ २२	५ २६	५ २८	५ ३३	५ ३४	५ ३७	५ ३८	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ४२	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ३८	५ ३७	५ ३४	५ ३१	० +
वृष	५ २८	५ २६	५ २२	५ १७	५ १२	५ ७	५ २	४ ५७	४ ५०	४ ४३	४ ३६	४ २९	४ २२	४ १४	४ ५	३ ५८	३ ५०	३ ४०	३ ३०	३ २०	३ १०	३ १	२ ५१	२ ४८	२ ३६	२ २४	२ १२	२ ०	१ ४८	१ ३६	१ +
मिथुन	१ २४	१ १२	१ ०	० ४८	० ३६	० २४	० ०२४	० ०५	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	२ ५१	३ १	३ १०	३ २०	३ ३०	३ ४०	३ ५०	३ ५८	२ ५
कर्क	४ ५	४ १४	४ २३	४ २९	४ ३६	४ ४३	४ ५०	४ ५७	५ २	५ ७	५ १२	५ १७	५ २२	५ २६	५ २८	५ ३१	५ ३४	५ ३७	५ ३८	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ४२	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ३८	५ ३७	५ ३४	५ ३१	३ ५
सिंह	५ २८	५ २६	५ २२	५ १७	५ १२	५ ७	५ २	४ ५७	४ ५०	४ ४३	४ ३६	४ २९	४ २२	४ १४	४ ५	३ ५८	३ ५०	३ ४०	३ ३०	३ २०	३ १०	३ १	२ ५१	२ ४८	२ ३६	२ २४	२ २	२ ०	१ ४८	१ ३६	४
कन्या	१ २४	१ १२	१ ०	० ४८	० ३६	० २४	० १२	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	२ ५१	३ १	३ १०	३ २०	३	४०	३ ५०	३ ५८	५ +
तुल	४ ५	४ १४	४ २३	४ २९	४ ३६	४ ४३	४ ५०	४ ५७	५ २	५ ७	५ १२	५ १७	५ २२	५ २६	५ २८	५ ३१	५ ३४	५ ३७	५ ३८	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ४२	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ३८	५ ३७	५ ३४	५ ३१	६
वृश्चि.	५ २८	५ २६	५ २२	५ १७	५ १२	५ ७	५ २	४ ५७	४ ५०	४ ४३	४ ३६	४ २९	४ २२	४ १४	४ ५	३ ५८	३ ५०	३ ४०	३ ३०	३ २०	३ १०	३ १	२ ५१	२ ४८	२ ३६	२ २४	२ १२	२ ०	१ ४८	६	
धन	१ २४	१ १२	१ ०	० ४८	० ३६	० २४	० १२	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	२ ५१	३ १	३ १०	३ २०	३ ३०	३ ४०	३ ५०	३ ५८	५
मकर	४ ५	४ १४	४ २३	४ २९	४ ३६	४ ४३	४ ५०	४ ५७	५ २	५ ७	५ १२	५ १७	५ २२	५ २६	५ २८	५ ३१	५ ३४	५ ३७	५ ३८	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ४२	५ ४१	५ ४०	५ ४१	५ ३८	५ ३७	५ ४		६
कुंभ.	५ २८	५ २६	५ २२	५ १७	५ १२	५ ७	५ २	४ ५७	४ ५०	४ ४३	४ ३६	४ २९	४ २२	४ १४	४ ५	३ ५८	३ ५०	३ ४०	३ ३०	३ २०	३ १०	३ १	२ ५१	२	२ ३६	२ २४	२	२ ०			
मीन	१ २४	१ १२	१ ०	० ४८	० ३६	० २४	० १२	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४			३ १०	३ ३					

प्रपत्र

भु.	०	१	२
मं. स्फु.	० ० ०	० २ १३	० ८ ३५
अं.	२ ४७	३ १८	२ ७३
गति	२ ३७		
भु.	३३	२२	२३
मं. द.	१ १० १८	१ ९ १०	१ ११ १
अ	१ ५३	१ ५१	१ ५१
गति			
भु.	६२	६१	६४
मं. द.	१ ५४ २६	१ ५६ २४	१ ५७ २२
अ.	० ५१	० ५१	० ५१
गति			

॥ अथरविमंदकेंद्रतु जाशोपरिचंद्रभुजफलसारिणी ॥

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४४	४८	५२	५८	२	७	४	१६	२१

	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
	२५	२९	३३	३८	४२	४६	५०	५४	५८	२	६	१०	१४	१७	२१	२५	२८	३२	३५	३९	४३	४६	४९	५१	५४	५७	०	३	६	९

	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४			४	४		४		४
	१२	१४	१६	१८	२१	२२	२५	२७	२९	३१	३४	३५	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६			८	४८		४		[illegible]

॥ अथरविचरपलसारिणी ॥

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष॰ +	० / ४१	० / ४३	० / ४५	० / ४७	० / ४८	० / ५०	० / ५२	० / ५४	० / ५५	० / ५७	० / ५८	१ / ०	१ / १	१ / ३	१ / ४
वृष॰ +	१ / २७	१ / २८	१ / ३०	१ / ३१	१ / ३२	१ / ३४	१ / ३५	१ / ३६	१ / ३७	१ / ३८	१ / ३९	१ / ३९	१ / ४०	१ / ४०	१ / ४१
मिथु॰ +	१ / ५१	१ / ५१	१ / ५२	१ / ५२	१ / ५३	१ / ५४	१ / ५४	१ / ५५	१ / ५४	१ / ५४	१ / ५३	१ / ५२	१ / ५२	१ / ५१	१ / ५१
कर्क +	१ / ४१	१ / ४०	१ / ४०	१ / ३९	१ / ३९	१ / ३८	१ / ३७	१ / ३६	१ / ३५	१ / ३४	१ / ३२	१ / ३१	१ / ३०	१ / २८	१ / २७
सिंह +	१ / ४	१ / ३	१ / १	१ / ०	० / ५८	० / ५७	० / ५५	० / ५४	० / ५३	० / ५१	० / ४८	० / ४७	० / ४५	० / ४३	० / ४१
कन्या॰ ध	० / १२	० / १०	० / ८	० / ६	० / ४	० / २	० / १+	० / ०	० / १	० / ३	० / ४	० / ६	० / ८	० / १०	० / १२
तुल ध	० / ४१	० / ४३	० / ४५	० / ४७	० / ४८	० / ५०	० / ५२	० / ५४	० / ५५	० / ५७	० / ५८	१ / ०	१ / १	१ / ३	० / ४
वृश्चि ध	१ / २७	१ / २८	१ / ३०	१ / ३१	१ / ३२	१ / ३४	१ / ३५	१ / ३७	१ / ३७	१ / ३८	१ / ३९	१ / ३९	१ / ४०	१ / ४०	१ / ४१
धन ध	१ / ५१	१ / ५१	१ / ५२	१ / ५२	१ / ५३	१ / ५४	१ / ५४	१ / ५५	१ / ५४	१ / ५४	१ / ५३	१ / ५२	१ / ५२	१ / ५१	१ / ५१
मकर॰ ध	१ / ४१	१ / ४०	१ / ४०	१ / ३९	१ / ३९	१ / ३८	१ / ३७	१ / ३६	१ / ३५	१ / ३४	१ / ३२	१ / ३१	१ / ३०	१ / २८	१ / २७
कुंभ ध	१ / ४	१ / ३	१ / १	१ / ०	० / ५८	० / ५७	० / ५५	० / ५४	० / ५२	० / ५०	० / ४८	० / ४७	० / ४५	० / ४३	० / ४१
मीन॰ ध	० / १२	० / १०	० / ८	० / ६	० / ४	० / २	० / १	० / ०+	० / १	० / ३	० / ४	० / ६	० / ८	० / १०	० / १२

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष॰ +	१ / ६	१ / ७	१ / ८	१ / ९	१ / १०	१ / १२	१ / १३	१ / १५	१ / १६	१ / १८	१ / १९	१ / २१	१ / २२	१ / २४	१ / २५
वृष॰ +	१ / ४२	१ / ४२	१ / ४३	१ / ४३	१ / ४४	१ / ४४	१ / ४५	१ / ४५	१ / ४६	१ / ४७	१ / ४७	१ / ४८	१ / ४९	१ / ४९	१ / ५०+
मिथु॰ +	१ / ५०	१ / ४९	१ / ४९	१ / ४८	१ / ४७	१ / ४७	१ / ४६	१ / ४६	१ / ४५	१ / ४४	१ / ४४	१ / ४३	१ / ४१	१ / ४२	१+ / ४२
कर्क +	१ / २५	१ / २४	१ / २२	१ / २०	१ / १९	१ / १८	१ / १६	१ / १५	१ / १३	१ / १२	१ / १०	१ / ९	१ / ८	१ / ७	१+ / ५
सिंह +	० / ३९	० / ३७	० / ३६	० / ३४	० / ३२	० / ३०	० / २८	० / २६	० / २५	० / २३	० / २१	० / १९	० / १७	० / १५	०+ / १४
कन्या॰ ध	० / १४	० / १५	० / १७	० / १९	० / २१	० / २३	० / २५	० / २६	० / २८	० / ३०	० / ३२	० / ३४	० / ३६	० / ३७	०ध / ३९
तुल ध	१ / ६	१ / ७	१ / ८	१ / ९	१ / १०	१ / १२	१ / १३	१ / १५	१ / १६	१ / १८	१ / १९	१ / २०	१ / २२	१ / २४	१ध / २५
वृश्चि ध	१ / ४२	१ / ४२	१ / ४३	१ / ४३	१ / ४४	१ / ४४	१ / ४५	१ / ४५	१ / ४६	१ / ४७	१ / ४७	१ / ४८	१ / ४९	१ / ४९	१ / ५०ध
धन ध	१ / ५०	१ / ४९	१ / ४९	१ / ४८	१ / ४७	१ / ४७	१ / ४६	१ / ४६	१ / ४५	१ / ४४	१ / ४४	१ / ४३	१ / ४३	१ / ४२	१ध / ४२
मकर॰ ध	१ / २५	१ / २४	१ / २२	१ / २०	१ / १९	१ / १८	१ / १६	१ / १५	१ / १३	१ / १२	१ / १०	१ / ९	१ / ८	१ / ७	१ / ५ध
कुंभ ध	० / ३९	० / ३७	० / ३६	० / ३४	० / ३२	० / ३०	० / २८	० / २६	० / २५	० / २३	० / २१	० / १९	० / १७	० / १५	०ध / १४
मीन॰ ध	० / १४	० / १५	० / १७	० / १९	० / २१	० / २३	० / २५	० / २६	० / २८	० / ३०	० / ३२	० / ३४	० / ३६	० / ३७	०+ / ३९

रपलसारिणी ॥

अंश	०	१	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२			५	२	७	८	२
मेष +	१ १२	१ २९	१४ ४२	१४ ५६	१५ २२	१५ ३५	१५ ४८	५	१६ २८	५४	१७ ८	१७ ३४	१७ ४७	८ ०	१८ २६	९ ५२	१९ ६
वृष +	११ २२	११ ४५	२२ ५०	२२ ५०	२३ ३	२३ ३	२३ १६	२३ १६	२३ ३०	२३ ४३	२३ ४३	२३ ५६	२३ ५६	२४ ९	२४ २२	२४ २२	२४ ३
मिथु +	२४ ४२	२४ ४९	२४ ३५	२४ २२	२४ २२	२४ ९	२३ ५६	२३ ५६	२३ ४३	२३ ४३	२३ ३०	२३ १६	२३ १६	२३ ३	३	२२ ५०	२२ ५०
कर्क +	२२ १७	२२ २३	१९ ६	१८ ५२	१८ २६	१८ ०	१७ ४७	७ ३४	१७ ८	६ ५४	१६ २८	१६ १५	१५ ४८	५ ३५	५ २२	१४ ५६	४
सिंह +	१४ १८	१४ २	८ ४७	८ २०	८ ७	७ ४१	७ १	६ ४८	६ २२	५ ५५	५ ४२	५ १६	४ ४९	४ २३	३ ५७	३ ३०	३ १७
कन्या ध	२ ५९	२ २५	३ १७	३ ३०	३ ५७	४ २३	४ ४९	५ १६	५ ४२	५ ५५	६ २२	६ ४८	७ १४	७ ४१	८ ७	८ २०	८ ४७
तुल ध	९ १३	९ ३२	१४ ४२	१४ ५६	१५ २२	१५ ३५	१५ ४८	१६ १५	१६ २८	१६ ५४	१७ ८	१७ ३४	४७	१८ ०	१८ २६	१८ ५२	१९ ६
वृश्चि ध	१९ ३३	१९ ४५	२२ ५०	२२ ५०	२३ ३	२३ ३	२३ १६	२३ १६	२३ ३०	२३ ४३	२३ ४३	२३ ५६	२३ ५६	२४ ९	२४ २२	२४ २२	२ ३
धन ध	२४ ४१	२४ ४०	२४ ३५	२४ २२	२४ २२	२४ ९	२३ ५६	२३ ५६	२३ ४३	२३ ४३	२३ ३०	२३ १६	२३ १६	२३ ३	२३ ३	२२ ५०	२२ ५०
मकर ध	२२ १७	२२ २३	१९ ६	१८ ५२	१८ २६	१८ ०	१७ ४७	१७ ३४	१७ ८	१६ ५४	१६ २८	१६ १५	१५ ४८	१५ ३५	१५ २२	१४ ५६	१ ४
कुंभ ध	१४ १८	१४ ३	८ ४७	८ २०	८ ७	७ ४१	७ १४	६ ४८	६ २२	५ ५	५ ४२	५ १६	४ ४९	२		•	
मीन ध	२ ५१	२ २४	३ १७	३ ३०	३ ५७	४ २३	४	५ १६	५	५ ५	६ २	६ ४८	७ १	७ ४१	७	•	

॥अथचंद्र[illegible]स्य चरपल सारिणी॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
मेष+	० ४	० ४	० ५	० ५	० ५	० ५	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	[illegible]
वृष+	० ९	० १०	० १०	० १०	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० ११	१+
मिथु+	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० ११	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	२+
कर्क+	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० १०	० १०	० १०	० १०	० १०	० १०	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ७	० ७	० ७	० ७	३+
सिंह+	० ७	० ७	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० १	० १	० १	४+
कन्या+	० १	० १	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०+	० ०१६	० ०	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० ३	० १	० ३	० ४	० ४	० ४	५ध
तुल	० ४	० ४	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	६ध
वृश्चि	० ९	० १०	० १०	० १०	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	७ध
धन	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	८ध
मकर	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० ११	० १०	० १०	० १०	० ११	० १०	० १०	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ७	० ७	० ७	० ७	९ध
कुंभ	० ७	० ७	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० १	० २	० २	० १	० १	० १	१०ध
मीन	० १	० १	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०५	० ०+	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	११+

॥अथपातस्यचरपलसारिणी॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३
वृष	० ४	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५
मिथु	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६
कर्क	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ४	० ४	० ४	० ४
सिंह	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २
कन्या	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ४	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
तुल	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३
वृश्चि	० ४	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५
धन	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६
मकर	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ४	० ४	० ४	० ४
कुंभ	० ३	० २	० ३	० २	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २
मीन	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ४	० +	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

अंश	१५	१६	७	१	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अं
मेष	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	+
वृष	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ६	० ५	० ५	० ६	१+
मिथु	० ६	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	२+
कर्क	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	३+
सिंह	० २	० २	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० ०	४+
कन्या	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	५+
तुल	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	६
वृश्चि	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ६	७
धन	० ६	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	८
मकर	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	९५
कुंभ	० २	० २	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० ०	० ०	१०५
मीन	० ०	० ०	० १	० १	० १	०	०	०	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० ५	५

॥ अथ भौमचरपलसारिणी ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
मेष+	० २२	० २३	० २५	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३१	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३५	० ३५	० ३७	० ३७	० ३७	० ३९	० ३०	० ४१	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० +
वृष+	० ४६	० ४७	० ४८	० ४९	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५२	० ५२	० ५३	० ५३	० ५३	० ५३	० ५४	० ५४	० ५५	० ५५	० ५५	० ५७	० ५५	० ५६	० ५६	० ५६	० ५७	० ५७	० ५७	० ५८	० ५८	० ५९	१ +
मिथु+	० ५९	० ५९	१ ०	१ ०	१ ०	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ ०	१ ०	१ ०	० ५९	० ५९	० ५९	० ५८	० ५८	० ५७	० ५७	० ५७	० ५६	० ५६	० ५६	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५४	० ५४	२ +
कर्क+	० ५८	० ५३	० ५३	० ५२	० ५२	० ५२	० ५२	० ५२	० ५१	० ५०	० ४९	० ४९	० ४८	० ४७	० ४६	० ४६	० ४५	० ४४	० ४३	० ४२	० ४२	० ४१	० ४०	० ३९	० ३९	० ३७	० ३७	० ३७	० ३५	० ३५	३ +
सिंह+	० २४	० ३१	० ३२	० ३१	० ३१	० ३०	० २९	० २८	० २७	० २६	० २५	० २५	० २४	० २३	० २२	० २१	० २०	० १९	० १८	० १७	० १६	० १५	० १४	० १३	० १२	० ११	० १०	० ९	० ८	० ८	४ +
कन्या+	० ५	० ५	० ४	० ३	० २	० २	० १+	० ०+	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ८	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १९	० २०	० २१	५ +
तुल ध	० २२	० २३	० २५	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३१	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३५	० ३५	० ३७	० ३७	० ३७	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	६ ध
वृश्चि ध	० ४६	० ४७	० ४८	० ४९	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५२	० ५२	० ५३	० ५३	० ५३	० ५४	० ५४	० ५४	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५६	० ५६	० ५६	० ५७	० ५७	० ५७	० ५८	० ५८	० ५९	७ ध
धन ध	० ५९	० ५९	१ ०	१ ०	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ ०	१ ०	१ ०	० ५९	० ५९	० ५९	० ५८	० ५८	० ५७	० ५७	० ५७	० ५६	० ५६	० ५६	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५४	० ५४	८ ध
मक ध	० ५४	० ५३	० ५३	० ५३	० ५३	० ५२	० ५२	० ५२	० ५१	० ५०	० ४९	० ४९	० ४८	० ४७	० ४६	० ४६	० ४५	० ४४	० ४३	० ४२	० ४२	० ४१	० ४०	० ३९	० ३९	० ३७	० ३७	० ३७	० ३५	० ३५	९ ध
कुंभ ध	० २४	० ३३	० ३२	० ३१	० ३१	० ३०	० २९	० २८	० २७	० २६	० २५	० २५	० २४	० २३	० २२	० २१	० २०	० १९	० १८	० १७	० १६	० १५	० १४	० १३	० १२	० ११	० १०	० ९	० ८	० ८	१० ध
मीन	० ५	० ५	० ४	० ३	० २	० २	० १ध	० ०+	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ८	० ८	० ९	० १०	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १९	० २०	० २१	११ +

॥ अथबुधचरपलसारिणी ॥

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
मेष	+	२/५१	२/५९	३/७	३/१५	३/१९	३/२७	३/३५	३/४३	३/४७	३/५५	४/१	४/९	४/१३	४/२९
वृष	+	६/४	६/८	६/१६	६/२०	६/२४	६/३२	६/३६	६/४४	६/४४	६/४८	६/५२	६/५२	६/५५	६/५६
मिथु	+	७/४२	७/४२	७/४६	७/४६	७/५०	७/५४	७/५४	७/५४	७/५४	७/५४	७/५०	७/४६	७/४६	७/४२
कर्क	+	७/२	६/५६	६/५६	६/५२	६/५२	६/४८	६/४४	६/४४	६/३६	६/३२	६/२४	६/२०	६/१६	६/८
सिंह	+	४/२५	४/२१	४/१३	४/९	४/१	३/५५	३/४७	३/४३	३/३५	३/२७	३/१९	३/१५	३/७	२/५३
कन्या	+	०/५२	०/४४	०/३७	०/२८	०/२०	०/१६	०/८	०/०	०/८	०/१६	०/२०	०/२८	०/३७	०/४५
तूल	ध	२/५१	२/५९	३/७	३/१५	३/१९	३/२५	३/३५	३/४३	३/४७	३/५५	४/१	४/९	४/१३	४/२१
वृश्चि	ध	६/४	६/८	६/१६	६/२०	६/२४	६/३२	६/३६	६/४४	६/४४	६/४८	६/५२	६/५२	६/५६	६/५१
धन	ध	७/४२	७/४२	७/४६	७/४६	७/५०	७/५४	७/५४	७/५४	७/५५	७/५५	७/५०	७/४६	७/४६	७/४२
मकर	ध	७/२	६/५६	६/५६	६/५२	६/५२	६/४८	६/४४	६/४४	६/३६	६/३२	६/२४	६/२०	६/१६	६/८
कुंभ	ध	४/२५	४/२१	४/१३	४/९	४/१	३/५५	३/४७	३/४३	३/३५	३/२७	३/१९	३/१५	३/७	२/५१
मीन	ध	०/५२	०/४४	०/३७	०/२८	०/२०	०/१६	०/८	०/०	०/८	०/१६	०/२०	०/२८	०/३७	०/४५

अंश		५	१६	१७	१८		२०	२१	२२	२	२४	२५	२६	२७	८	२
मेष	४/२५	३	३७	४५	४	४/५३	५/३	५/७	५/१५	५/१९	२३	३१	५/३९	४३	५/४१	५/४६
वृष	७/३	७/५	७/५	७/९	७/९	७/१३	७/१३	७/१७	७/२१	७/२०	७/२५	७/२५	७/२१	७/३३	७/३३	७/३८
मिथु	७/४२	७/३८	७/३३	७/३३	७/२९	७/२५	७/२५	७/२१	७/२१	७/१७	७/१३	७/१३	७/९	७/९	७/५	७/५
कर्क	६/४	५/५६	५/५१	५/४३	५/३९	५/३१	५/२३	५/१९	५/१५	५/७	५/३	४/५३	४/४९	४/४५	४/३७	४/३३
सिंह	२/५१	२/४३	२/३१	२/३०	२/२२	२/१४	२/६	१/५८	१/५०	१/४६	१/३८	१/३०	१/२२	१/१३	१/५	१/१
कन्या	०/५२	१/१	१/५	१/१३	१/२२	१/३०	१/३८	१/४६	१/५०	१/५८	२/६	२/१४	२/२	२/३०	२/३४	२/४३
तूल	४/२५	४/३३	४/३१	४/४५	४/४९	४/५	५/३	५/७	५/१५	५/१९	५/२३	५/३१	५/३९	५/४३	५/५१	५
वृश्चि	७/३	७/५	७/५	७/९	७/९	१/१३	७/१३	७/१७	७/२१	७/२१	७/२५	७/२५	७/२९	७/३३	७/३३	३८
धन	७/४२	१/३	७/३३	७/२३	७/२९	७/२५	७/२५	७/२१	७/२१	७/१७	७/१३	७/१३	७/९	७/९	७/५	७/५
मकर	६/४	५/५६	५/५१	५/४३	५/३९	५/३१	५/२३	५/१९	५/१५	५/७	५/३	४/५३	४/४९	४/४५	४/३७	४/३३
कुंभ	२/५१	२/४३	३	२/३०	२/२२	२/१४	२/६	१/५८	१/५०	१/४६	१/३८	१/३०	१/२२	१/१३	१/५	१/१
मीन	०/५२	१/१	१/५	१/१३	१/२२	१/०	१		१/००	१/५८	१/६	१/४	१/२२	१/०	१/४	१/४

॥ अथगुरोश्च रफलसारिणी ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	[illegible]
मेष+	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ७	० ७	० ७	० +
वृष+	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	+१
मिथुन+	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० १०	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	+२
कर्क	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ५	० ५	० ५	+३
सिंह	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० १	० १	० १	० १	+४
कन्या	० १	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० १	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	ऋ५
तुला	० ३	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ८	० ४	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ७	० ७	० ७	ऋ६
वृश्चिक	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	ऋ७
धनु	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० १०	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ९	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	ऋ८
मकर	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ८	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ५	० ५	ऋ९
कुंभ	० ५	० ५	० ५	० ५	० ५	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ४	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० १	० १	० १	० १	ऋ१०
मीन	० १	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	+११

॥ अथशुक्रस्यचरफलसारिणी ॥

रा		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१
मेष	+	१ ७	१०	१	१७	१८	२१	२४	१ २८	१ २९	१ ३३	१ ३४	१ ३७	१ ३९	१ ४२	४४
वृष	+	२ २२	२ २४	२ २७	२ २९	२ ३०	२ ३३	२ ३५	२ ३८	२ ३८	२ ४०	२ ४१	२ ४१	२ ४३	२ ४३	२ ४५
मिथु	+	३ ०	३ २	३ २	३ २	३ ४	३ ५	३ ६	३ ७	३ ६	३ ६	३ ४	३ २	३ २	३ ०	३ ०
कर्क	+	२ ४५	२ ४३	२ ४३	२ ४१	२ ४१	२ ४०	२ ३८	२ ३८	२ ३५	२ ३३	२ ३०	२ २९	२ २७	२ २४	२ २२
[illegible]	+	१ ४४	१ ४२	१ ३९	१ ७	१ ३४	१ ३३	१ २९	१ २८	१ २४	१ २१	१ १८	१ १६	१ १३	१ १०	१ ७
कन्या	+	० २०	० १७	० १४	० १०	० ८	० ६	० ३	० ३+	१ ३४	० ६	० ८	० १०	० १४	० १७	० २०
तुल	ध	१ ७	१ १०	१ १३	१ १७	१ १८	१ २१	१ २४	१ २८	१ २९	१ ३३	१ ३४	१ ३७	१ ३९	१ ४२	१ ४४
वृश्चि	ध	२ २२	२ २४	२ २७	२ २९	२ ३०	२ ३३	२ ३५	२ ३८	२ ३८	२ ४०	२ ४१	२ ४१	२ ४३	२ ४३	२ ४५
धन	ध	३ ०	३ ०	३ २	३ २	३ ४	३ ५	३ ६	३ ७	३ ६	३ ६	३ ४	३ २	३ २	३ ०	३ ०
मक	ध	२ ४५	२ ४३	२ ४३	२ ४१	२ ४१	२ ४०	२ ३८	२ ३८	२ ३५	२ ३३	२ ३०	२ २९	२ २७	२ २४	२ २२
कुंभ	ध	१ ४४	१ ४२	१ ३९	१ ३७	१ ३४	१ ३३	१ २९	१ २८	१ २४	१ २१	१ १८	१ १७	१ १३	१ १०	१ ७
मीन	ध	० २०	० १७	० १४	० १०	० ८	० ६	० ३	० ०५	० २५	१ ६	० ८	० १०	० १४	० १७	० २०

रा		१५	१६	१७	१८	१९	२०	२				२५	२६	२७	२८	२९
मेष	+	४७	१ ४८	१ ५२	१ ५३	१ ५५	५८	०	२ ३	२ ५	२ ८	२ ९	२ ११	२ १४	१	१६
वृष	+	२ ४५	२ ४५	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ४९	२ ५१	२ ५	२ ५३	२ ५४	२ ५४	२ ५६	२ ५६	२ ५६	२ ५७
मिथु	+	२ ५९	२ ५६	२ ५६	२ ५६	२ ५४	२ ५४	२ ५३	२ ५३	२ ५१	२ ४९	२ ४९	२ ४८	२ ४८	२ ४५	२ ४५
कर्क	+	२ १९	२ १७	२ १४	२ ११	२ ९	२ ८	२ ५	२ ३	२ ०	१ ५८	१ ५५	१ ५३	१ ५२	१ ४८	१ ४७
[illegible]	+	१ ४	१ १	० ५२	० ५६	० ५३	० ४९	० ४५	० ४३	० ४१	० ३८	० ३५	० ३३	० ३१	० २५	० २४
कन्या	+	० २४	० २५	० २९	० ३३	० ३५	० ३८	० ४१	० ४३	० ४६	० ४९	० ५३	० ५६	० ५९	१ १	१ ४
तुल	ध	१ ४७	१ ४८	१ ५२	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	२ ५	२ ८	२ ९	२ ११	२ १४	२ १७	२ १९
वृश्चि	ध	२ ४५	२ ४५	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ४९	२ ५१	२ ५३	२ ५	२ ५४	२ ५४	२ ५६	२ ५६	२ ५६	२ ५९
धन	ध	२ ५९	२ ५६	२ ५६	२ ५६	२ ५४	२ ५४	२ ५३	२ ५	२ ५१	२ ४९	२ ४९	२ ४८	२ ४८	२ ४५	२ ४५
मक	ध	२ १९	२ १७	२ १४	२ ११	२ ९	२ ८	२ ५	२ ३	२ ०	१ ५८	१ ५५	१ ५	१ ५२	१ ४	१ ४७
कुंभ	ध	१ ४	१ १	० ५१	० ५६	० ५	० ४९	० ४६		० ४१	० ३८	० ३५	० ३३	० २९	० २५	१
मीन	ध	२	० २५	० २९	० ३३	० ३५	० ३८	० ४१	४	० ४६	० ४९	० ५३	० ५	० ९		

॥अथ मंदकेंद्रभुजांशोपरिचंद्रमंदफलसारिणी मेषतुलादिकेंद्रे धनऋणात्मकं मृगादि[illegible]

भुजा	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मंद. फल	० ० ०	० ५ १०	० १० ३५	० १५ ५२	० २१ १०	० २६ २८	० ३१ ४६	० ३७ २	० ४२ २१	० ४७ ३९	० ५१ ५६	० ५७ ४१	१ ३ ९	१ ८ ४	१ १३ ५	१ १८ ९	१ २३ ११	१ २८ १४	१ ३३ १६	१ ३८ १९	१ ४३ २२	१ ४८ ९	१ ५२ ५६	१ ५७ ४४	२ २ ३१	२ ७ १९	२ १२ ६	२ १६ ५२	२ २१ ४१	२ २६ २८
अंतरं.	५ १७	५ १८	५ १८	५ १८	५ १८	५ १८	५ १७	५ १८	५ १८	५ १७	५ १७	५ ३	५ ३	५ २	५ ३	५ २	५ ३	५ २	५ ३	५ ३	४ ४७	४ ४७	४ ४८	४ ४७	४ ४८	४ ४७	४ ४७	४ ४८	४ ४७	४ ४७
गतिः	६८ १५									६८ १५	६५ ०									६५ ०	६१ ४५									६१ ४५

भुजा	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मंद. फल	२ ३१ १५	२ ३५ ३३	२ ३९ ५०	२ ४४ ७	२ ४८ २४	२ ५२ ४१	२ ५६ ५८	३ १ १५	३ ५ ३२	३ ९ ५०	३ १४ ७	३ १७ ५४	३ २१ ४१	३ २५ २८	३ २९ १५	३ ३३ १	३ ३६ ४८	३ ४० ३५	३ ४४ २२	३ ४८ ९	३ ५१ ५६	३ ५५ ४७	३ ५७ ४९	४ १ ०	४ ४ २	४ ७ ३	४ १० ५	४ १३ ६	४ १६ ८	४ १९ ९
अंतरं.	४ १८	४ १७	४ १७	४ १७	४ १७	४ १७	४ १७	४ १८	४ १७	४ १७	३ ४७	३ ४७	३ ४७	३ ४७	३ ४६	३ ४	३ ४७	३ ४७	३ ४७	३ ४७	३ १	३ २	३ १	३ २	३ १	३ २	३ १	३ २	३ १	३ १
गतिः	५५ १५									५५ १५	४८ ४५									४८ ४५	३९ ०									३९ ०

भुजा	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
मंद. फल	४ २२ १०	४ २४ २७	४ २६ ४३	४ २८ ५९	४ ३१ १५	४ ३३ ३१	४ ३५ ४८	४ ३८ ४	४ ४० २०	४ ४२ ३६	४ ४४ ५२	४ ४६ ८	४ ४७ २४	४ ४८ ३९	४ ४९ ५५	४ ५१ १०	४ ५२ २६	४ ५३ ४२	४ ५४ ५७	४ ५६ १३	४ ५७ २९	४ ५७ ५९	४ ५८ २९	४ ५८ ५९	४ ५९ ३०	५ ० ०	५ ० ३०	५ १ ०	५ १ ३१	५ २ १
अंतरं.	२ १७	२ १६	२ १६	२ १६	२ १७	२ १६	२ १६	२ १६	२ १६	२ १६	१ १६	१ १६	१ १५	१ १६	१ १५	१ १६	१ १६	१ १५	१ १६	१ १६	० ३०	० ३०	० ३०	० ३०	० ३०	० ३०	० ३०	० ३१	० २९	० ३०
गतिः	२९ १५									२९ १५	१६ १५									१६ १५	६ ३०									६ ३०

॥अथ शनिस्पष्टफलसारिणी॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२
मेष +	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० १	० २	० २+
वृष +	० २	० २	० २	० १	० १	० २	० ३	० २	० ३	० २	० २	० ३	० २	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० २	० ३	० ३+
मिथु +	० २	० २	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० ३	० २	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० ३	० ३+
कर्क +	० २	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २+
सिंह +	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०+
कन्या +	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	० १
तुल ध	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २
वृश्चि ध	० २	० २	० २	० ३	० २	० ३	० २	० ३	० २	० ३	० २	० २	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० १	० २	० ३
धन ध	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३
मकर ध	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २
कुंभ ध	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
मीन ध	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० १	० १	० १	० १	०	० १	०

अथ भौममंदोच्चं भुजांशोपरि भौममंदफलसारिणी मेष[illegible] धनमृण

भुजांश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मंदफल	० ० ०	० ११ ५५	० २३ ३५	० ३५ ११	० ४७ ५	० ५८ ४३	१ १० ३१	१ २२ २८	१ ३४ १२	१ ४५ ५९	१ ५७ ४५	२ ८ ५८	२ २० ११	२ ३१ २४	२ ४२ ३७	२ ५३ ५०	३ ५ ३	३ १६ १५	३ २७ २८	३ ३८ ४१	३ ४९ ५४	४ ० ३३	४ ११ १३	४ २१ ४२	४ ३२ २१	४ ४३ ११	४ ५३ ५०	५ ४ २९	५ १५ ८	५ २५ ४८
अंतर	११ ५५	११ ४०	११ ३६	११ ५४	११ ३८	११ ४८	११ ५७	११ ४४	११ ४७	११ ४६	११ ४५	११ १३	११ १३	११ १३	११ १३	११ १३	११ १२	११ १२	११ १३	११ १३	१० ३९	१० ४०	१० २९	१० ३९	१० ४०	१० ३९	१० ३९	१० ३९	१० ४०	१० ३९
गति	६ ०									६ ०	५ ४३									५ ४३	५ २६									५ २६

भुजांश	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मंदफल	५ ३६ २७	५ ४७ ४६	५ ५७ ३१	६ ९ २	६ १४ २५	६ २४ ०	६ ३३ २९	६ ४१ ११	६ ५१ ४३	७ २ १४	७ ११ ४६	७ २० ११	७ २८ ३५	७ ३७ १	७ ४५ २५	७ ५३ ५०	८ १ १४	८ १० ३९	८ १९ ४	८ २७ २८	८ ३५ ५३	८ ४२ २७	८ ४९ २१	८ ५६ ४	९ २ ४८	९ ९ ३२	९ १६ १९	९ २२ ५१	९ २९ ४३	९ ३६ २७
अंतर	१० २१	१० ३१	१० ३१	१० ३१	१० ३१	१० ३१	१० ३२	१० ३२	१० ३१	९ ३२	८ २५	८ २४	८ २५	८ २४	८ २५	८ २४	८ २५	८ २५	८ २४	८ २४	६ ४४	६ ४४	६ ४४	६ ४४	६ ४४	६ ४७	६ ४०	६ ४४	६ ४४	६ ४४
गति	४ १									४ ४१	४ १७									४ १७	३ २६									३ २६

भुजांश	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
मंदफल	९ ४१ ११	९ ४६ ११	९ ५१ १६	९ ५६ ११	१० १ २२	१० ८ १५	१० १३ ७	१० १८ १०	१० २३ २२	१० २८ २८	१० ३३ ३१	१० ३५ २७	१० ३९ १५	१० ४१ ५	१० ४४ २	१० ४३ ४०	१० ५० २८	१० ५३ १६	१० ५६ ४	१० ५८ ५१	११ १ ४१	११ ३ ४८	११ ५ ५५	११ ५ ३	११ ६ १०	११ ७ १७	११ ८ २४	११ ९ ३२	११ १० ३१	११ ११ ४८
अंतर	५ १	५ १	५ २	५ १	५ ३	५ ०	५ १	५ २	५ २	५ २	२ ४८	२ ४८	२ ४८	२ ४८	२ ४०	२ ४८	२ ४८	२ ४८	२ ४८	२ ४८	१ ७	१ ७	१ ८	१ ७	१ ७	१ ८	१ ७	१ ७	१ ७	१ ८
गति	२ २४									२ १४	१ २६									१ २५	० २४									० २४

अथभौमशीघ्रफलम्॥शीघ्रकें षडराशिभ्योऽधिकंचे त्तद्वादश१२राशिमध्येशोधितंतदशप्रतिको

भुजा		२		४	५	६	७	८	९	१०	१	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
शीघ्र	० २४ १०	० ४८ ३१	१ १२ ३२	१ ३६ ४१	१ ० ५४	१ २५ ५	१ ४९ १०	२ १३ २८	२ ३८ ४०	४ १ ५३	४ २४ ४	४ ४८ १९	५ ११ ३४	५ ३४ ५१	५ ५८ ११	६ २१ ३२	६ ४४ ५५	७ ८ २०	७ ३१ ४१	७ ५५ १६	८ १८ २	८ ४० ५१	९ ३ ४५	९ २६ ४४	९ ४२ ४८	१० ११ ३१	१० ३४ ५२	११ १ १८	११ १६ ४७	११ ५२ २२
उ.र	२४	२४ ११	२४ ११	२४ १	२४ २	२४ १२	२४ १२	२४ १२	२४ १२	२३ १३	२३ १४	२३ १६	२३ १७	२३ २०	२३ २१	२३ २३	२३ २५	२३ २७	२३ ३१	२४ ३५	२४ ४१	२४ ५४	२४ ५९	२४ २	२४ ४५	२४ ११	२४ १६	२४ २९	२४ ३५	२३ १०
मूल	५२ १०	१२० ४४ २०	२० २५	२८ २	२० ५७	१२० ११ ७	२० ५ १८	११९ ४७ २	११ ४१	११०	११८ ५	११९ ११ ०	२ २५	११ ४१	११८ ३५ २	११ ११ १८	११ ५६ ७	११ १	११ २६	११७ १०	११७ ४१	११६ १	१११ ५६	११६ ३१ १	११५ ६	११४ ४१ १८	११४ १६ २	११२ ५१	११२ २६	११२ १ १६

भुज	३	३	३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
शीघ्र	१ १४ १२	२ ३५ ४९	१ ५१ ४३	१३ २२ ४२	१३ ४५ ४८	१४ ९ १	१४ ३२ २०	१४ ५५ ४५	१५ १९ ११	१५ ४२ ५९	१६ ४ ४५	१६ २६ ५८	१६ ४९ ४२	१७ ११ १८	१७ ३४ ४	१७ ५७ १७	१८ २१ २२	१८ ४५ १८	१९ ९ २५	१९ ३३ ४७	१९ ५५ ०	२० १७ १७	२० ४० २	२१ ३ ३	२१ २६ १८	२१ ४९ ४७	२२ १३ २९	२२ ३७ १८	२२ १ ४२	२३ २६ १०
अंतर	२२ ७	२२ ४२	२३ ०	२३ ६	२३ १३	२३ १९	२२ २३	२३ ३३	२३ ४०	२१ ४६	२२ ३	२२ १४	२२ २२	२२ ३०	२२ ३३	२२ ८	२२ ५५	२४ ८	२४ ११	२१ १३	२१ १७	२२ ४४	२३ ९	२३ १५	२३ २९	२३ ४३	२ ५	२४ १४	२४ २०	२३ ११
मूलं	१ २८ ८	१२१ ५५ ०	१२१ २३ १	१२० ५० ०	१२० १७ ५	११९ ४५ १	११९ ११ २०	११८ ३१ १०	११८ ५ २८	११७ ३३ २१	११ ५२ ३७	११६ ११ ५६	११६ ३० ५८	११६ ४१ ५७	११५ ८ ५८	१ ३३ ५९	८३ ५६ ५१	११२ ०	८१	११२ ७ ४४	११८ ३५ ३१	११७ ४२ २	१०९ १ ५	१०८ १८ १९	१०१ १५ २१	१० ५२ ११	११ ८ ५६	१०६ २५ १९	१० ४१ २३	१०३ ५७ २६

	६	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
शीघ्र	२३ ४० २१	२४ ८ ५२	२४ ३० १५	४ ५३ ३९	२५ १४ २८	२५ ३७ ३५	६ ० १८	२६ २३ ४३	६ ४० ४२	२७ ११ ७	२७ २८ ४८	२७ ४८ ३३	२८ ७ ४२	२८ २७ ११	८ ५ ५९	९ ७ ७	२९ २६ ३४	२९ ४८ ४३	३० १० ४१	३० ३४ ४५	३० ५४ २२	३१ १४ ३६	३१ ३१ ८	३१ ५५ ३५	३२ १५ १०	३२ ३९ २३	३२ १ ४२	३३ २४ ३४	३३ ४७ ५८	३४ ४४ ५९
अंतर	२१ २९	२१ ४५	२२ २	२२ ७	२२ ४१	२२ ४३	२२ १४	२२ ३२	२२ ५२	१७ ४१	१९ ४	१९ १०	१९ २८	१९ ४८	२० ८	२० २१०	२१ १	२१ ४८	२४ ४	१९ ४४	२० ७	० २	२५ १८	२१ २४	२१ ४२	२२ २०	२२ ५१	२२ २४	२२ ५५	१४ २८
मूलं	१७३ ० १४	१७१ १० २२	१७० २५ ४२	१७० ३५ ४	१६९ ४४ ५८	१६८ ११ ३२	६८ १ ५७	१६० ० ४१	१६५ १७ २२	१६५ २४ ३४	६ २८ ३१	१६३ ३१ ६	१६२ ३५ १५	१६१ १८ ०	१६० ४० २१	१५९ ४२ १६	५८ ३ ६	१५१ ४४ ५०	१५ ४५ ३१	१५५ १ १	१५ ४५	१५ ● ८	१५ ३३ ५३	१५१ २८ ५०	१५ ३२ ५०		१			

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ धमंदोच्चं ७।१५।०।० मंदकेंद्रभुजांशोपरि मंदफलसारिणी मेषतुलादिकेंद्रे धनमृण

भुजा	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मंद	० ० ०	० ५ ३३	० ११ ४१	० १६ ५	० २५ २३	० ३१ ४३	० ३८ ११	० ४४ ११	० ५० ५५	० ५० १६	१ ३ ३०	१ ६ ५२	१ १५ ४५	१ २१ ४१	१ २७ ५३
अंतर	५ २२	५ २१	५ २२	५ २२	५ २२	५ २२	५ २२	५ २२	५ २१	५ २२	६ ४	५ ३	६ ४	६ ४	६ ३
गति	५ ०									६ ०	५ ४२				

भुजा	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२	२७	२८	२९
मंद	१ ३३ ४६	१ ४० ०	१ ४ ३	१ ५१ ३	१ ५६ ११	२ ४ १४	२ १० ०	२ १५ ४५	२ २१ ११	२ २६ १५	२ ३३ २	२ ३८ ४०	२ ४४ ३३	२ ५० १८	२ ५६ ३
अंतर	६ ४	६ ४	६ ३	६ ४	६ १	५ ४५	५ ५५	५ ४६	५ ४८	५ ४६	५ ४५	५ ४६	५ ४५	५ ४५	५ ४६
गति					५ ४३	५ २६									५ २६

भुजा	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
मंद	३ १ ४०	३ ६ ५८	३ १२ ७	३ १७ १५	३ २२ २५	३ २७ ३४	३ ३२ ४३	३ ३७ ५३	३ ४ २	३ ४८ ११	३ ५३ २०	३ ५७ ५१	४ २ २८	४ ६ ५८	४ ११ ३१
:	५ ९	५ ९	५ ९	५ ९	५ ९	५ ९	५ १०	५ ९	५ ९	५ ९	४ ३३	४ ३२	४ ३३	४ ३३	४ ३२
गति	४ ५१	४ ५१								४ ५१	४ १७				

भुजा	४५	४६	४७	८	४	५०	५१	५	५३	५	५५	५६	७	५८	
मंद	४ १६ ३	४ २०	४ २५ २	४ २९ ४२	४	४ ३८ ४०	४ ४२ ३५	४५ ३	४ ४१ ४३	५३ २०	५६ ५८	५ ० ३८	४ १४	५	१ ३१
:	४ ३३	३	४ ३३	४ ३२	३	३ ३८	३ १८	३ ३८	३ ३८	३ ३८	३ ३८	३ ३८	३ ३८	३ ३८	
गति					४ १७	३ २६									२ १

	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	३	७४
मंद	५ १४ ९	५ १७ ४१	५ २० ३१	५ ०	५ २६ २	५ २८ ४७	५ ३१ ३१	५ ३३ १४	५ ३६ ५४	५ ३९ ४२	५ ४२ २५	५ ४३ ५८	४ २७	५ ४५ ५८	५ ४८ २९
अंतर	२ ४४	२ ४३	२ ४	२ ४३	२ ४६	२ ४४	२ ४३	२ ४४	२ ४	२ ४३	१ २१	१ ३१	१ ३१	१ ३१	१ ३१
गति	१ २४									२ ३४	१ २५				

	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८	८४	८५	८६	७	८८	८९
मंद	५ ५० ०	५ ५१ ३१	५ ५३ २	५ ५४ ३३	५ ५६ २	५ ५७ ३४	५ ५८ ११	५ ५८ ४७	५ ५९ २३	६ ० ०	६ ३	६ १ १३	६ १ ४९	६ २ २५	६ २ ३
अंतर	१ ३१	१ ३१	१ ३१	१ ३०	१ ३१	० ३७	० ३६	० ३६	० ३७	० ३६	० ३७	० ३६	० ३६	० ३७	० ३६
गति					१ २५	० ३									० ३४

…ग्रफलसारिणीशीघ्रकेंद्रषड्रा…

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	[illegible]	[illegible]
२ ४१ ३०	२ ५७ १	३ १२ ३४	३ २८ ९	३ ४३ ३०	३ ५९ २३	४ १५ ०	४ ३० ४४	४ ४६ २६	५ २ १०	५ १७ ५५	५ ३३ ११	५ ४८ २७	६ ३ ४०	६ १८ १८	६ ३३ २२	६ ४८ ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५ ११	१५ २२	१५ २५	१५ २५	१५ ३६	१५ ४१	१५ ४१	१५ ४२	१५ ४८	१५ ५५	१५ ११	१५ १८	१५ २०	१५ २५	१५ २५	१५ २९	१५ ३२	१५ ३४	१५ ३७	१५ ४०	१५ ४४
१६३ २७ ४८	१६३ १४	१६३ २१	१६३ ३०	१६२ ५५ ३३	१६२ ४७ ४२	१६२ ३६ ३२	१६२ २१ २	१६२ २२ ०	१६२ १४ ०	१६१ ५६ ४८	१६१ ५२ ०	१६१ ३० ३०	१६१ ३३ ४४	१६१ ८ ०	१६० ५३	१६० ३८	१६० ३९	१६० ५०	१६० ४३	१५९ ६३

४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१० २० १७	१० ३४ ४७	१० ४९ १५	११ ३ ४३	११ १८ ३७	११ ३२ २५	११ ४८ १९	१२ ३ १८	१२ १८ २२	१२ ३३ ३२	१२ ४८ ४७	१३ १ ५१	१३ १४ ५९	१३ २८ १४	१३ ४१ ३३	१३ ५४ ०	१४ ८ ३३	१४ २२ ११	१४ ३५ ५८	१४ ४० ४६	१५ ३ ४३
१४ २६	१४ २६	१४ २५	१४ १४	१४ ४८	१४ ५४	१४ ५१	१५ ५	१५ १०	१५ १४	१३ ४	१३ ५	१३ १५	१३ १९	१३ २०	१३ ३३	१३ ३८	१३ ४३	१३ ५०	१३ ५६	११ ५५
१५६ १८ ३८	१५५ ५३ ४	१५५ ३० २१	१५५ २ १८	१५४ ३६ ३४	१५४ ११ १	१५३ ४५ ११	१५३ १९ २८	१५२ ५३ ३१	१५२ २७ २५	१५२ १ ४५	१५१ ३३ २	१५१ २ ३१	१५० ३३ २६	१५० २ ५४	१४९ ३३ ४८	१४९ २ ५०	१४८ ३३ ३४	१४८ २ २७	१४७ ३१ ५२	१४७ १ १७

७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
१७ १५ ११	१७ १५ ३०	१७ १० ४	१७ २४ ३५	१७ ४४ १२	१७ ५४ १०	१८ ४ ८	१८ १४ ९	१८ २४ २०	१८ ३४ २८	१८ ४५ ४	१८ ५३ ५५	१९ ० ५५	१९ ९ ३	१९ १७ १५	१९ २५ २७	१९ ३४ ६	१९ ४२ ४३	१९ ४९ २५	२० ० १९	२० ९ ४८
९ २४	९ २९	९ ३५	९ ४३	९ ४८	९ ५७	१० २	१० ११	१० १८	१० २६	७ ४२	८ ०	८ ७	८ १२	८ १३	८ २१	८ ३६	८ ४३	८ ५४	९ २१	५ १३
१४१ १३ २१	१४० ३५ ४७	१३९ ५८ १३	१३९ २० ३६	१३८ ४२ ३२	१३८ ४ २१	१३७ २६ ९	१३६ ४७ ४६	१३६ ८ ५८	१३५ ३० ०	१३४ ३० ५३	१३४ १ ४१	१३३ २८ १०	१३२ ४६ २६	१३२ ४ ५५	१३१ २२ ४२	१३० ४० २१	१२९ ५७ ४७	१२९ २५ ८	१२८ ३२ २	१२७ ४८ ४

॥ अथ बुधशीघ्रकेंद्रात् मितशीघ्रफलं ॥

अंश	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
शीघ्र	२० १५ ९	२० २० १५	२१ २५ ११	२० ३१ १८	२० २७ ८	२१ ४२ ५२	२० ४८ ५२	२० ५४ ४८	२१ १ ४	२१ ७ २४
अंतरं	५ २९	५ २५	५ २९	५ ३८	५ ५०	५ ५६	५ ५	५ ८	६ ३०	२ ३३
मूलं	१२७ ५ २८	१२६ ९ १५	१२४ २७ ३१	१२४ ५३ ११	१२३ ८ ५७	१२१ ३४ ०	१२२ ३८ ५७	१२१ ५३ १५	१२१ ८ १	१२० ३३ ८

अंश	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०
शीघ्र	२१ ९ ५७	२१ १२ ३५	२१ १५ १६	२१ १८ ५	२१ २० ५३	२१ २२ ५५	२१ २७ ५	२१ ३० १२	२१ ३३ ३३	२१ ३६ ५८
अंतरं	२ ३८	२ ४१	२ ४२	२ ४८	३ ५	३ ५	३ ७	२ २०	२ २५	१ ५८
मूलं	११९ ३१ ०	११८ ५२ ५७	११८ ९ १२	११७ ३४ २५	११७ ३१ ४४	११५ ५२ ४७	११४ ८ १६	११४ २२ १५	११३ ३५ ४७	११२ ४१ ७

अंश	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
शीघ्र	२१ ३५ ०	२१ ३३ ८	२१ ३१ १८	२१ २९ २१	२१ २७ ४१	२१ २५ ५७	२१ २४ १८	२१ २२ ४०	२१ २१ ५	२१ १९ ३३
अंतरं	१ ५२	१ ५०	१ ४१	१ ४१	१ ४३	१ ४०	१ ३८	१ ३८	१ ३३	६ ३३
मूलं	११२	१११ ११ ४२	११० ३४ २४	१०९ ४८ ५२	१०९ ३ १६	१०८ १७ ०	१०७ ३० २६	१०६ ४३ ३४	१०५ ५५ २२	१०५ ९ ३

अंश	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०
शीघ्र	२१ १२ ५१	२१ ६ ११	२० ५१ ३६	२० ५२ ७	२० ४६ २१	२० ३१ ४४	२० ३३ ५७	२० १६ ११	२० ११ २७	२० १२ ३१
अंतरं	५ २३	५ ३३	५ ४१	५ ४१	५ ४७	५ ५०	५ ४५	५ ५१	६ ४८	१२ २१
मूलं	१०४ २५ ५	१०३ ४१ ५५	१०३ ५१ २८	१०२ १५ ५४	१०१ ३१ ४५	१०० ५० २७	१०० २ ५४	९९ १७ ४५	९८ ३२ १०	९७ ४६ ३१

अंश	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०
शीघ्र	२० ० १६	१९ ४८ २७	१९ ३६ ३१	१९ २४ २५	१९ १२ ८	१९ ० २	१८ ४७ ३८	१८ ३५ ५	१८ २२ १७	४१
अंतरं	११ ५१	११ ५६	१२ ७	१२ ७	१२ १५	१२ २१	१२ ३१	१२ ३८	१२ ४५	१७ ४०
मूलं	९७ ६ ७	९६ २५ ३	९५ ५१ ४५	९५ २ २०	९४ २ ३१	९३ २८ १०	९२ ५५ ४८	९२ १३ १३	९१ ३० ०	९० ४६ २९

अंश	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
शीघ्र	१७ ५२ १	१७ ३४ १३	१७ १६ १०	१६ ५८ ९	१६ ३९ ३७	१६ २० ५८	१६ १ १३	१५ ४२ ३२	१५ २२ १५	१५ २ ४८
अंतरं	१७ ४८	१८ २	१८ ९	१८ ३४	१८ ३९	१९ २१	१९ १	१९ ७	१९ २७	२३ ५०
मूलं	९० ११ ४६	८९ २६ १६	८९ ९ ४०	८८ ३५ ८	८७ ४१ ५	८७ ४८ ५	८६ ३६ १८	८५ ४९ ४३	८५ ३३ ४३	८४ ४५ ३१

अनरं·	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०
शीघ्र	१४ ३१ ५०	१४ १५ २	११ ४१ ५०	११ २४ ४०	१२ ५१ १	१२ ३३ ११	१२ २७ १०	११ ४० ४१	१२ १३ ५५	१० ४६ ५५
अंतरं	२६ ४३	२५ ८	२७ १०	२५ ३०	२५ ६	२६ ५	२६ १८	२७ ४४	२७ ०	३० २८
मूलं	८४ ४० २८	८३ ४३ ८	८३ २० ५१	८२ ४२ ७	८१ २२ १९	८१ २४ २६	८१ ३५ ५	८० ५६ ४	८० २६ ४४	७९ ४७ ०

अनरं·	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०
शीघ्र	१० १६ ७	९ ४५ ५४	९ १६ ५	८ ४६ ११	८ १६ ३	७ ४५ ४३	७ १४ ९	६ ४४ ३३	६ १३ २३	५ ४२ १०
अंतरं	३० १२	२९ ५४	२९ ५२	३० ८	३० २९	३० ३३	३० ४५	३१ ०	३१ १३	३ ९
मूलं	७९ ४० ३०	७९ २४ ०	७९ ७ ३०	७८ ५० ५३	७८ ३४ १०	७८ १७ २८	७८ ० ४५	७७ ४२ ४	७७ २५ ९	७७ ९ ११

अनरं·	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
शीघ्र	५ ८ २१	४ ३८ ३४	४ ० ३६	३ २६ २८	२ ५१ १८	२ १८ ३	१ ४३ ४४	१ ९ १९	० ४ ४०	० ० ०
अंतरं	३३ ४७	३३ ५०	३४ ८	३४ १०	३४ १५	३ २	३४ २९	३४ ३५	३४ ४०	० ०
मूलं	७७ २ २७	७६ ४५ १४	७६ ४८ २२	७६ ४ ४०	७६ २७	७६ २ ७	७६ ९	७६ ७	७६ ७	७६ ०

अथ गुरुमंदोच्चं ५।२२।३०।० गुरु मंदफलम् मेषतुलादिकेंद्रे

भुजा	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मंदफ	०।०।०	०।५।३१	०।११।३	०।१६।३५	०।२२।६	०।२७।३८	०।३३।९	०।३८।४१	०।४४।१२	०।४९।४४	०।५५।१६	१।०।३१	१।५।४७	१।११।३	१।१६।१९	१।२१।३५	१।२६।५०	१।३२।६	१।३७।२२	१।४२।३८	१।४७।५४	१।५२।५४	१।५७।५४	२।२।५४	२।७।५४	२।१२।५४	२।१७।५४	२।२२।५४	२।२७।५४	२।३२।५४
अंतर	५।३१	५।३२	५।३२	५।३१	५।३२	५।३१	५।३२	५।३१	५।३२	५।३२	५।१५	५।१६	५।१६	५।१६	५।१६	५।१५	५।१६	५।१६	५।१६	५।१६	५।०	५।०	५।०	५।०	५।०	५।०	५।०	५।०	५।०	५।०
गतिः	०।२५									०।२५	०।२४									०।२४	०।२३									०।२३

भुजा	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मंदफ	२।३७।५४	२।४२।२२	२।४६।५०	२।५१।१७	२।५५।४६	३।०।१४	३।४।४२	३।९।११	३।१३।४१	३।१८।९	३।२२।३८	३।२६।३५	३।३०।३१	३।३४।२८	३।३८।२५	३।४२।२२	३।४६।१९	३।५०।१६	३।५४।१२	३।५८।९	४।२।६	४।५।१६	४।८।२५	४।११।३५	४।१४।४४	४।१७।५४	४।२१।३	४।२४।१२	४।२७।२२	४।३०।३१
अंतरं	४।२८	४।२८	४।२७	४।२९	४।३०	४।२८	४।२८	४।२९	४।२८	४।२९	३।५७	३।५६	३।५७	३।५७	३।५७	३।५७	३।५७	३।५६	३।५७	३।५७	३।१०	३।९	३।१०	३।९	३।१०	३।९	३।९	३।१०	३।९	३।९
गतिः	०।२०									०।२०	०।१८									०।१८	०।१४									०।१४

भुजा	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
मंदफ	४।३३।४०	४।३६।३	४।३८।२५	४।४०।४७	४।४३।९	४।४५।३१	४।४७।५४	४।५०।१६	४।५२।३८	४।५५।०	४।५७।२२	४।५९।४१	५।०।०	५।१।१९	५।२।३८	५।३।५७	५।५।१६	५।६।३५	५।७।५४	५।९।१२	५।१०।३१	५।११।३	५।११।३५	५।१२।६	५।१२।३८	५।१३।९	५।१३।४१	५।१४।१२	५।१४।४४	५।१५।१६
अंतरं	२।२३	२।२२	२।२२	२।२२	२।२२	२।२३	२।२२	२।२२	२।२२	२।२२	१।१९	१।१९	१।१९	१।१९	१।१९	१।१९	१।१९	१।१९	१।१८	१।१९	०।३१	०।३२	०।३१	०।३२	०।३१	०।३२	०।३१	०।३२	०।३२	०।३१
गतिः	०।११									०।११	०।६									०।६	०।२									०।२

॥ अथगुरुशीघ्रफलसारिणी ॥

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
शीघ्र	० ९ २९	० १९ १८	० २८ ५८	० ३८ ३५	० ४८ १८	० ५७ ५८	१ ७ ३७	१ १७ २१	१ २७ १	१ ३६ २६	१ ४५ ५१	१ ५५ १६	२ ४ ३१	२ १३ ५२	२ २३ ११	२ ३२ ३१	२ ४१ ५०	२ ५१ ११	३ ० २२	३ ९ १४	३ १८ ५२	३ २८ ५४	३ ३९ ५६	३ ४६ ०	३ ५५ ५	४ ४ १७	४ १३ १८	४ २२ २९	४ ३१ १६	४ ४० ३२
अंतरं	९ ३९	९ ४०	९ ३७	९ ४३	९ ४०	९ ३९	९ ४४	९ ४०	९ ३५	९ ३३	९ १७	९ १८	९ १८	९ १९	९ ५९	९ २०	९ २१	९ २२	९ २२	९ ३८	९ २	९ २	९ ४	९ ४	९ ७	९ ५	९ ८	९ २	९ १६	९ २९
मूलं	१४२ ५८	१४२ ५	१४२ २	१४२ ४२	१४२ ५०	१४२ ८ ५	१४२ ६ १	१४२ ४ २	१४२ ४२ ३७	१४२ ४० ५८	१४२ ३५ ३३	१४२ ३१ २	१४२ २६ १२	१४२ २१ २३	१४२ १६ ३४	१४२ ११ २	१४२ ६ ५	१४२ २ ५	१४१ ५७ ०	१४१ ५२ ०	१४१ ४२ २	१४१ ३४ ४१	१४१ २५ ५६	१४१ १७ ११	१४१ ८ २७	४० ५९ २९	१४० ४० ४१	१४० ३१ २	१४० २२ ४	१४० १२ २४ १४

अंश	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
शीघ्र	४ ४९ ११	४ ५७ ३४	५ ५ ५९	५ १४ १८	५ २२ ५२	५ ३१ २१	५ ३९ ३०	५ ३८ २४	५ ५६ ५७	६ ५ ३२	६ १३ १९	६ २१ ९	६ २९ १	६ ३६ ५४	६ ४४ ४८	६ ५२ ४५	७ ० ४३	७ ८ ४४	७ १६ ४५	७ २४ ५०	७ ३१ ३५	७ ३८ २३	७ ४५ ११	७ ५१ २	७ ५८ ५६	८ ५ ४९	८ १२ ४८	८ १९ ५०	८ २६ ४८	८ ३३ ४१
अंतरं	८ ९	८ २५	८ १९	८ ३४	८ २९	८ २९	८ ३	८ ३३	८ ३५	७ ४७	७ ५०	७ ५२	७ ५	७ ५४	७ ५७	७ ५८	८ १	८ १	८ ५	६ ९	६ ४८	६ ४८	६ ५२	६ ५३	६ ५५	७ ७	६ ५९	७ १	६ ३	६ ४४
मूलं	० ३०	१४० ३३	१३९ ८	१३९ ३ ५	१३९ २५	१३९ ५	१३९ १ २४	१३८ ९ ०	१३८ ३७ २२	१३८ २५ २८	१३८ १० ३४	१३७ २ ६	१३७ ४० २८	१३७ २५ २	१३७ १० २८	१३६ ५५ ०	१३६ ४० ४	१३६ २४ ५७	१३६ ९ १	५ ९ २	१३५ ३७ १४	१३५ १९ ५१	१३५ २ ४१	१३४ ४५	१३४ ३ ५	१३४ १० २	१३३ ५१ ४	१३३ ३५ १४	१३३ १७ १३	१३२ ० १०

अंश	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
शीघ्र	८ ३९ ३५	८ ४५ २०	८ ५१ ७	८ ५६ ५८	९ २ ४३	९ ८ ४४	९ १४ ३९	९ १९ २४	९ २६ ३६	९ ३२ ३८	९ ३६ ४५	९ ४० ५४	९ ४५ ४	९ ४९ १४	९ ५३ २९	९ ५७ ४४	१० २ ७	१० ५ २८	१० ११ १२	१० १५ ४७	१० १८ ५२	१० २१ ५७	१० २५ ५	१० २८ १०	१० ३१ ३३	१० ३४ ३५	१० ३१ ४	१० ४१ ४	१० ४४ ३१	१० ४७ ३८
अंतरं	५ ४५	५ १	५ ५१	५ ५१	५ ४५	५ ५५	५ ४५	७ १२	६ २	४ ७	४ ९	४ १०	४ १०	४ १५	४ १५	४ २२	४ ३३	४ ३४	४ ४५	३ १	३ ५	३ ८	३ ५	३ १	३ ९	३ १६	३ १	३ १७	३ १६	३ ५
मूलं	१३२ ४० १७	१ २० ३	१३२ ० ५१	१३१ ४१ ४८	१३१ २० ५४	१३१ ० ४१	१३० ० ८	१३० २० ४७	१३० ० ४६	१२९ ४० २२	१२९ १९ १	१२९ ५७ ४०	९२ ३६ १६	१२८ १४ ५१	१२८ ५३ १२	१२७ ३१ ३८	२७ ०	२६ ८	१२६ २६ ३७	२६ ४ ४३	१२५ ४१ ३१	११ १८ १	२४ ४४ १४	११ ३१ २८	१ ०	१२३ ०		१	१२२	१२२

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥श्री॥ अथ शुक्रमंदकेंद्र भुजांशोपरि मंदफलसारिणी शुक्रमंदोच्चं २।२१।१०। मेषतुलादिके धनमृणं

भुज	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मंदफ	० ० ०	० १ ३५	० ३ १४	० ४ ५९	० ६ ३५	० ८ ११	० ९ ४८	० ११ १५	० १२ ४९	० १४ २८	० १६ ८	० १७ २	० १९ ८	० २० ४०	० २२ ११
अंतरं	१ ३५	१ ३८	१ ४५	१ ३५	१ ३६	१ ३६	१ ३७	१ ३५	१ ३०	१ ३६	१ ३३	१ ३१	१ ३२	१ ३१	१ ३२
गतिः	१ ४५									१ ४९	१ ४०				

भुज	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मंदफ	० २३ ४३	० २५ १५	० २६ ४७	० २८ १९	० २९ ५१	० ३१ २३	० ३२ ५०	० ३४ १७	० ३५ ४४	० ३७ ११	० ३८ ३९	० ४० ६	० ४१ ३३	० ४३ ०	० ४४ २८
अंतरं	१ ३२	१ ३२	१ ३२	१ ३२	१ ३२	१ ३२	१ २७	१ २७	१ २७	१ २८	१ २८	१ २७	१ २७	१ २८	१ २७
गतिः					१ ४०	१ २५									१ २५

भुजांश	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
मंदफल	० ४५ ५५	० ४७ १३	० ४८ ४२	० ४९ ५९	० ५१ ७	० ५२ २५	० ५३ ४३	० ५५ १	० ५६ १६	० ५७ ३५	० ५८ ४६	१ ० ४	१ १ १३	१ २ २२	१ ३ ३१
अंतरं	१ १७	१ १९	१ १७	१ १८	१ १८	१ १८	१ १८	१ १८	१ १८	१ १९	१ ८	१ ९	१ ९	१ ९	१ ९
गतिः	१ २५									१ २५	१ १५				

भुजांश	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मंदफल	१ ४ ४०	१ ५ ४९	१ ६ ५८	१ ८ ७	१ ९ १५	१ १० २४	१ ११ १९	१ १२ १४	१ १३ १०	१ १४ ५	१ १५ ०	१ १५ ५५	१ १६ ५०	१ १७ ४५	१ १८ ४०
अंतरं	१ ९	१ ९	१ ९	१ ८	१ ९	० ५५	० ५६	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५	० ५५
गतिः					१ १५	१ ०									१ ०

भुजांश	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४
मंदफल	१ १९ ३५	१ २० १७	१ २० ५८	१ २१ ३९	१ २२ २१	१ २३ २	१ २३ ४४	१ २४ २५	१ २५ ६	१ २५ ४७	१ २६ २९	१ २६ ५२	१ २७ १५	१ २७ ३८	१ २८ १
अंतरं	० ४२	० ४१	० ४१	० ४२	० ४१	० ४१	० ४२	० ४१	० ४१	० ४२	० २३	० २१	० २३	० २३	० २३
गतिः	० ४५									० ४९	० २५				

भुजांश	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
मंदफल	१ २८ २३	१ २८ ४६	१ २९ ९	१ २९ ३२	१ २९ ५५	१ ३० १८	१ ३० २७	१ ३० ३७	१ ३० ४६	१ ३० ५५	१ ३१ ४	१ ३१ १४	१ ३१ २२	१ ३१ ३१	१ ३१ ४०
अंतरं	० २३	० २२	० २३	० २३	० २३	० ९	० १०	० ९	० ९	० ९	० ९	० १०	० ८	० १०	० १०
गतिः					० २५	० १०									० १०

૨૬	૨૭	૨૮	૨૯	૩૦
૧૦ ૪૦ ૫૯	૧૧ ૧૧ ૫૫	૧૧ ૨૯ ૫૮	૧૨ ૬ ૬	૧૧ ૨૧ ૩૧
૨૫ ૫૯	૨૬ ૨	૨૫ ૮	૨૬ ૧૫	૨૪ ૧૭
૧૦૧ ૪૯ ૫૧	૧૦૧ ૧૯ ૫૨	૨૦૦ ૫૫ ૨૫	૨૦૦ ૨૨ ૧૧	૨૦૦ ૦ ૫૫
૫૬	૫૭	૫૮	૫૯	૬૦
૨૩ ૧૨ ૧૪	૨૩ ૩૫ ૫૪	૨૪ ૧ ૪૧	૨૪ ૨૬ ૫૦	૨૪ ૧૩ ૨૪
૨૪ ૪૦	૨૪ ૧૫	૧૫ ૧૮	૧૫ ૨૫	૧૧ ૪૭
૧૮૩ ૧૬ ૫૨	૧૮૨ ૨૮ ૨૫	૧૭૧ ૨૯ ૨૯	૧૭૦ ૫૦ ૪૧	૧૮૦ ૧ ૨૯
૮૬	૮૭	૮૮	૮૯	૯૦
૩૪ ૩૩ ૨૦	૩૪ ૪૬ ૨૪	૩૫ ૧૯ ૫૦	૩૫ ૪૩ ૪૦	૩૬ ૮ ૧૮
૨૨ ૫૦	૨૨ ૨૬	૨૨ ૫૦	૩૪ ૩૩	૧૯ ૬૦
૧૫૩ ૪ ૨૪	૧૫૧ ૫૨ ૨૦	૧૫૦ ૩૯ ૪૨	૧૪૦ ૨૮ ૪૨	૧૪૮ ૧૩ ૧૭

...रणी

११[illegible]	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११[illegible]	[illegible]	१२०
४२ ११ ८	४२ ५० १९	४३ ३ ००	४३ १५ २	४३ २८ ३९	४३ ४३ १	४३ ५८ २४	४४ १४ ४१	४४ ३१ ७	४४ ५० १७
११ ११	१२ ३	१२ ४०	१३ २७	१४ २२	१५ २३	१६ १७	१८ २६	१८ ३०	४ ४५
१२० २६ ७	११९ ३ २७	११७ ३१ ३७	११६ १४ ४६	११५ ४८ ४६	११३ २१ ५६	१११ ५२ ४४	११० २४ ३८	१०८ ५४ ६	१०१ ३३ ३०
१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
४६ १५ ४	४६ १ ३२	४५ ४५ २८	४५ ३२ १२	४५ ११ १९	४५ ७ ५०	४४ ५७ ५	४४ ४८ ९	४४ ४१ ११	
१३ ३२	१६ ४	१५ १९	१३ ५९	१२ ११	१० ४५	८ ५६	६ ५८	६ २०	१ [illegible]
७५ ० २६	७४ २५ २१	७३ २ ४०	७१ ३५ ३२	७० ७ ३६	६८ ३७ २	६७ ५ १	६५ ३० १८	६३ ५२ ५२	६२ १४ १७
१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	[illegible]	१८०
३१ ३१ ४८	१९ १५ ४५	१७ ० १५	१४ ४२ २२	१२ २१ ४	९ ५५ ३४	७ ३३ १५	५ ६ २५	[illegible]	० ० ०
१३६ २	१३४ ५१	१३४ ३३	१३१ २८	[illegible] ३०	[illegible] १८	[illegible] ४१	१५० ५४	[illegible] ४१	० ०
३७ २० ०	३६ ५८ ४२	३६ ३० २९	३६ २ १६	३५ ३३ ३०	३५ ३ १०	३४ ३२ ५४	४	३३ ४१	३३ ० ०

मंदोच्च ७।२८।०।० मेषकुलीरादि...

१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
२ ६ ७	२ १३ ४५	२ २१ ३५	२ २९ ३	२ ३६ ४९	२ ४३ ५७	२ ५१ १२	२ ५८ २८	३ ५ ४४	३ १२ ५५	३ २० १५	३ २७ ३१	३ ३४ ४६	३ ४२ २
७ ३८	७ ३९	७ ३९	७ ३८	७ १६	७ १५	७ १६	७ १६	७ १६	७ १६	७ १६	७ १५	७ १६	७ १६
			० १०	० २									० २

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
५ २८ ४०	५ ३४ २४	५ ४० ७	५ ४५ ५१	५ ५१ ३५	५ ५६ ११	६ ० ४६	६ ५ २१	६ ९ ५६	६ १४ ३१	६ १९ ६	६ २३ ४१	६ २८ १७	६ ३२ ५२
५ ४४	५ ४३	५ ४४	५ ४४	४ ३६	४ ३५	४ ३५	४ ३५	४ ३५	४ ३५	४ ३५	४ ३६	४ ३५	४ ३५
			० ७	० ६									० ६

७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९
७ २३ १२	७ २५ १३	७ २७ ८	७ २९ ३	७ ३० ५९	७ ३१ ४७	७ ३२ २९	७ ३३ १५	७ ३४ १	७ ३४ ४६	७ ३५ ३२	७ ३६ १८	७ ३७ ४	७ ३७ ५०
१ ५४	१ ५५	१ ५५	१ ५५	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६	० ४६
			० २	० १									० १

णी ॥

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
[illegible] ३८ ८	१ ४२ ४०	१ ४९ २६	१ ५५ ५	२ ० ३०	२ ५ ५७	२ ११ २१	२ १६ ४७	२ २२ १४	२ २७ ४१	२ ३३ ९	२ ३८ ३६	२ ४४ ४	२ ४९ ३४
५ २१	५ २२	५ २३	५ २५	५ २५	५ २६	५ २६	५ २७	५ २७	५ २७	५ २९	५ २८	५ ३०	४ ४७
१३२ २७ ४४	१३२ २४ ४८	१३२ २१ ५२	१३२ १८ ५५	१३२ १५ ५०	१३२ ८ २२	१३२ ३ ६	१३१ ५७ ३५	१३१ ५२ १७	१३१ ४६ ५५	१३१ ४१ ३६	१३१ ३५ १९	१३१ ३१ ०	१३१ २५ ५०
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
४ ११ ३४	४ १६ ११	४ २० ५३	४ २५ ५७	४ २९ १५	४ ३३ ६	४ ३६ ५६	४ ४० ४७	४ ४४ ३८	४ ४८ २२	४ ५२ २५	४ ५६ २०	५ ० १४	५ ४ ०
४ ५७	४ ४२	५ ४	३ ५०	३ ५०	३ ५०	३ ५१	३ ५१	३ ५४	३ ५३	३ ५५	३ २४	३ ५५	३ ६
१२९ ३१ ४	१२९ २ ४	१२८ ५० ५१	१२८ ४३ ४३	१२८ ३३ २५	१२८ २३ ९	१२८ १२ १३	१२८ २ ३६	१२७ ५२ १	१२७ ४१ ४०	१२७ ३१ १८	१२७ २० ५७	१२७ १० ३५	१२७ ० ०
७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
५ ५० १०	५ ५२ ५५	५ ५४ २२	५ ५६ ३०	५ ५७ ४४	५ ५८ ५९	६ ० १५	६ १ ३१	६ २ ४८	६ ४ ४	६ ५ २२	६ ६ ३९	६ ७ ५८	६ ९ ११
२ ५	२ ७	२ ८	१ १४	१ १४	१ १५	१ १५	१ १७	१ १५	१ १८	१ १७	१ १८	१ १८	१ ५
१२३ १८ ३५	१२३ २२ ०	१२३ ९ २५	१२२ ५५ ३५	१२२ ४३ १५	१२२ ५९ ५७	१२२ १५ २८	१२२ ३ १९	१२१ ३५ १४	१२१ २२ ४९	१२१ ९ २३	१२० ५५ ४५	१२१ ४३ ८	१२१ ९ २३

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥अथशीघ्रकेंद्रोपर्युदयास्त वक्रीमार्गीपंक्तिकोष्टकम्॥

पश्चिमास्तशीघ्रकेंद्रं					पूर्वोदयं केंद्रराद्या·					बु·शु·पू·अस्त		बु·शु·पश्चि·उद		अथवक्रीशीघ्रकेंद्रं					अथमार्गीशीघ्रकेंद्रं·				
मं	बु	गु	शु	श	मं	बु	गु	शु	श	बु	शु·	बु	शु	मं	बु	गु	शु	श	मं	बु	गु	शु	श
११	५	११	९	११	८	६	०	६	२	१०	११	१	०	५	४	४	८	३	६	७	७	६	८
२	५	१९	२७	१३	२८	२५	१४	२	१७	१०	६	२०	२४	१३	२९	५	१७	२३	१७	८	२९	१३	७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

लंकोदयाः						स्वदेशीयोदयाः				
मेष	२	७	८	मी		मे	२	२	३	मी
वृष	१	९	९	कुंभ		वृ	२	५	५	कुं
मिथु	३	२	३	मक		मि	२	०	५	म
कर्क	३	२	३	ध		क	३	४	१	ध
सिंह	२	९	९	वृश्च		सिं	३	४	३	वृ
कन्या	२	७	८	तु·		क	३	३	३	तु

अथनित्यमितिरविहारकोष्टकं

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१२४	२७५	१९१	१२८	९८	८०	६६	५९	५२	४९	४६	४३	४२	४०	४१	४०
०	५५	५३	५३	१०	०	७	५७	५५	३१	१५	४१	५	१४	०४	५४

अथनित्यप्रमाणेनचंद्र हारकोष्टकं·

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१११	२४०	१७१	१२५	८८	७२	५९	५२	४८	४४	४१	३९	३७	३६	३५	३४
०	८	४८	०	२१	०	१९	५२	३२	३४	२८	२७	५२	४१	४९	५९

॥अथसपातचंद्रभुजांशोपरिअंगुलादिशरकोष्टकेषुशातव्यं [illegible] ॥

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	अंश
अं गु लि	१ ३४ ३०	२ १ ०	४ ४३ ३०	६ १८ ०	७ ५३ ३०	९ २९ ०	११ १ ३०	१२ ३६ ०	१४ १० ३०	१५ ४५ ०	१७ १५ ०	१८ ४५ ०	२० १५ ०	२१ ४५ ०	अं गु लि
अंत	१ २४						१ ३०								अंतर

अथरविगत्सु परिरविबिंबंतदधोगतिरद्रि७लब्ध:

रविगति:	६१ २८	६१ २१	६१ १४	६१ १	६० ४८	६० २८	६० ८	५९ ४१	५९ २१	५८ ५५	५८ ४८	५८ २७	५८ ८	५७ ४८	५७ १५	५७ १	५६ ५५	५६ ४८
रविबिंबं	११ १०	११ ९	११ ८	११ ५	११ ३	१० ५९	१० ५६	१० ५१	१० ४७	१० ४२	१० ४१	१० ३७	१० ३४	१० ३०	१० २४	१० २२	१० २०	१० १९
अद्रिकठय·	८ ४५	८ ४६	८ ४५	८ ४२	८ ४१	८ ३८	८ ३५	८ ३१	८ २८	८ २५	८ २४	८ २१	८ १८	८ १५	८ १०	८ ८	८ ७	८ ६

अथचंद्रगत्सु परिचंद्रबिंबंतदधोभुभाबिंबमंगुलादि ॥

चंद्रगति:	८५८ ५०	८५५ ५३	८५२ २८	८४५ ४०	८३९ ३०	८२१ ३५	८११ ५०	८०६ ५०	७९० ५	७८४ ५	७७४ २०	७६१ २०	७५१ ३५	७४३ ५०	७३५ २०	७२८ ५०	७२५ ३५	७२२ २०
चंद्रबिंबं	११ ३५	११ ३३	११ ३१	११ २५	११ २०	११ १२	११ ४	१० ५५	१० ४६	१० ३५	१० २७	१० १७	१० ९	१० १	९ ५६	९ ५३	९ ४८	९ ४४
भूभाबिंबं	३८ २७	३८ १८	३८	३७ ३२	३७ २८	३७ ८	३६ ४२	३६ ७	३५ ४१	३५ ६	३४ ४०	३४ ५	३३ ३०	३३ ११	३२ ५५	३२ ३८	३२ २९	३२ २०

अथग्रासांगुलोपरिमध्यस्थितिघट्यादिकोष्टकम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
१ २१	२ ०	२ १७	२ २८	३ १०	३ १८	३ ३१	३ ४२	३ ५४	४ ३	४ ९	४ १५	४ २१	४ २७	४ ३१	४ ३६	४ ४०	४ ४२	४ ४२	४ ४२	४ ४२
० ११	० २७	० ३१	० १२	० ८	० १३	० ११	० १२	० ९	० ६	० ६	० ६	० ६	० ४	० ५	० ४	० २	० ०	० १	० ०	अंत

अथचंद्रग्रासोपरिमर्दघट्यादि

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
० ५७	१ २१	१ ३३	१ ४५	१ ५१	१ ५७	२ ३	२ ५	२ ६	२ ०
० २४	० १२	० १२	० ६	० ६	० ६	० २	० १	० ०	अंत

अथनतं खांका९० हतंद्युदलेनभक्तंयदं शादिफलं तत्तुल्यांशा कोष्टकात् वलनं

३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	मे
१ १७ १५	१ ४३ ०	२ ८ ५५	२ ३४ २०	३ ० १५	३ २६ ०	३ ५१ ४५	४ १२ ०	४ ३६ ०	५ ० ०	५ २४ ०	५ ४८ ०	६ १२ ०	६ ३६ ०	७ ० ०	७ २४ ०	७ ४८ ०	८ १२ ०	८ ३९ ४५	९ ३ ०	९ २४ १५	९ ४६ ३०	१० ८ ४५	१० ३१ ०	१० ५३ १५	११ १५ ३०	११ ३७ ४५	१२ ० ०	धुलं
० २६	० २५	० २६	० २६	० २६	० २५	० २१	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २४	० २३	० २३	० २२	० २२	० २३	० २२	० २२	० २२	० २३	० २४	अंत
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
१२ १ ४५	१३ २६ ०	१३ ४४ ५५	१४ ३ ३०	१४ २७ ४५	१४ ४६ ३०	१५ ५ १५	१५ २४ ०	१५ ४४ ४५	१६ ० ०	१६ २० ४५	१६ ३६ ०	१६ ५६ ४५	१७ १२ ०	१७ ३२ ४५	१७ ४८ ०	१८ ८ ४५	१८ २४ ०	१८ ३९ ३०	१८ ५५ ०	१९ १० ३०	१९ २५ ०	१९ ४० ३०	१९ ५६ ०	२० ११ ३०	२० २७ ०	२० ४२ ३०	२० ४८ ०	
० १५	० १८	० १९	० २४	० १९	० १९	० १९	० २०	० १६	० २०	० १६	० २०	० १६	० २०	० १६	० २०	० १६	० १५	० १६	० १५	० १५	० १५	० १६	० १५	० १६	० १५	० १६	० १६	
६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
२१ १४ १५	२१ २४ ३०	२१ ४४ ४५	२१ ५५ ०	२२ ५ १५	२२ १५ ३०	२२ २५ ४५	२२ ३६ ०	२२ ४४ ५५	२२ ४८ ०	२२ ५६ ४५	२३ ० ०	२३ ८ ४५	२३ १२ ०	२३ २० ४५	२३ २४ ०	२३ ३२ ४५	२३ ३६ ०	२३ ३९ ३०	२३ ४३ ०	२३ ४६ ३०	२३ ५० ०	२३ ५८ २०	२३ ५१ ३०	२३ ५५ ०	२३ ५८ ३०	२४ ३ ०		
० १२	० १०	० ११	० १०	० १०	० १०	० ११	० ८	० ४	० ८	० ४	० ८	० ४	० ८	० ४	० ८	० ४	० ३	० ४	० ३	० ४	० २	० ३	० ४	० ३	० ४	० ०		

॥ अथत्रिभोनलग्नार्कयोर्भुजांशोपरिमध्यलंबनकोष्टकम् ॥

भुजांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
लंबनं	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५६	१ ३	१ १०	१ १७	१ २२	१ २८	१ ३४	१ ४०	१ ४६	१ ५१	१ ५७	२ ३	२ ९	२ १५	२ २१	२ २५	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४६	२ ५१	२ ५५
अंतरं	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ७	० ५	० ६	० ६	० ६	० ६	० ५	० ६	० ६	० ६	० ६	० ६	० ४	० ४	० ४	० ५	० ४	० ४	० ४	० ५	० ४

भुजांश	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
लंबनं	२ ५९	३ ३	३ ८	३ १०	३ १३	३ १६	३ १९	३ २२	३ २४	३ २७	३ ३०	३ ३३	३ ३६	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४३	३ ४४	३ ४६	३ ४७	३ ४९	३ ५०	३ ५२	३ ५३	३ ५५	३ ५५	३ ५५	३ ५६	३ ५६	३ ५७
अंतरं	० ४	० ५	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० २	० ३	० ३	० ३	० ३	० ३	० १	० १	० २	० १	० २	० १	० १	० २	० २	० १	० २	० ०	० ०	० १	० ०	० १	० ०

भुजांश	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
लंबनं	३ ५७	३ ५८	३ ५८	३ ५९	३ ५९	४ ०	४ ०	४ ०	३ ५९	३ ५९	३ ५९	३ ५८	३ ५८	३ ५८	३ ५७	३ ५७	३ ५६	३ ५५	३ ५४	३ ५३	३ ५२	३ ५१	३ ५०	३ ४९	३ ४८	३ ४७	३ ४६	३ ४४	३ ४२	३ ४०
अंतरं	० १	० ०	० १	० ०	० १	० ०	० ०	० १	० ०	० ०	० १	० ०	० ०	० १	० ०	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० २

मध्यमशात्गोलोदयः ॥

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
८ ३४ ४८	८ ५० ३६	९ २० ३४	९ ४३ ११	१० ५ ०	१० ३८ ४८	११ १९ ३६	११ ४६ ३४	११ ५७ १२	१२ ० ०	
० २३	० २३	० २३	० २३	० २२	० २३	० २३	० २३	० २३	० २०	
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
१८ ३८ २४	१८ ५२ ४८	१९ ७ १२	१९ २१ ३६	१९ ३६ ०	१९ ५० २४	२० ४ ४८	२० १९ १२	२० ३३ ३६	२० ४८ ०	
० १४	० १५	० १४	० १५	० १४	० १४	० १५	० १४	० १३	० १२	
८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
२३ ३८ २४	२३ ४० ४८	२३ ४३ १२	२३ ४५ ३६	२३ ४८ ०	२३ ५० २४	२३ ५२ ४८	२३ ५५ १२	२३ ५७ ३६	२४ ० ०	
० २	० ३	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० २	० ०	

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
४३ ५४	४४ ४८	४६ १२	४८ ३६	५० ०	५२ २४	५४ १८	५६ १२	५८ ६	६० ०	
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
९३ १२	९४ २४	९५ ३६	९६ ४८	९८ ०	९९ १२	१०० २४	१०१ ३६	१०२ ४८	१०४ ०	
८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
११८ १२	११८ २४	११८ ३६	११८ ४८	११९ ०	११९ १२	११९ २४	११९ ३६	११९ ४८	१२० ०	

॥ अयक्रांतिसारिणी ॥

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१ उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२ उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३ उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४ उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५ द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६ द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७ द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१० द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ द	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ अथनतांशोपरिअंगुलादिनतिकोष्टकम् ॥

नतांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
नतिः	० १७ ०	० ३४ ०	० ५१ ०	१ ८ ०	१ २५ ०	१ ४२ ०	१ ५९ ०	२ १६ ०	२ ३३ ०	२ ५१ ०	३ ७ ०	३ २३ ०	३ ३९ ०	३ ५५ ०	४ १२ ०	४ २८ ०	४ ४४ ०	५ ० ०	५ १७ ०	५ ३३ ०	५ ४८ ०	६ ४ ०	६ १९ ०	६ ३५ ०	६ ५ ०	७ ५ ०	७ २१ ०	७ ३६ ०
अंतरम्	० १७	० १७	० १७	० १७	० १७	० १७	० १७	० १७	० १८	० १६	० १६	० १६	० १६	० १७	० १६	० १६	० १६	० १७	० १६	० १५	० १६	० १५	० १६	० १५	० १५	० १६	० १५	० १६
	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
	७ ५२ ०	८ ६ ०	८ २१ ०	८ ३५ ०	८ ४९ ०	९ २ ०	९ १६ ०	९ ३० ०	९ ४४ ०	९ ५८ ०	१० ११ ०	१० २५ ०	१० ३८ ०	१० ५० ०	११ २ ०	११ १४ ०	११ २६ ०	११ ३८ ०	११ ५१ ०	१२ ३ ०	१२ १५ ०	१२ २७ ०	१२ ३९ ०	१२	१२			
	० १४	० १५	० १४	० १४	० १३	० १४	० १४	० १५	० १४	० १३	० १४	० १३	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १२	० १३	० १२	० १२	० १२	० १३	० १२	०			

॥ अथसूर्यग्रासोपरिमध्यस्थितिघट्यादि ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
६	३२	५०	४	१५	२३	३२	३७	४०	४३	४४	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	१८	१४	११	८	९	५	३	३	१	२	०

॥ अथ द्युदलपत्रम् ॥ अयनांशाः २३ - ०

अं	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मे	१५ ४२	१५ ४४	१५ ४५	१५ ४८	१५ ४९	१५ ५१	१५ ५३	१५ ५५	१५ ५६	१५ ५८	१५ ५९	१६ १	१६ २	१६ ४	१६ ५
वृ	१६ २८	१६ ३०	१६ ३२	१६ ३३	१६ ३४	१६ ३५	१६ ३७	१६ ३९	१६ ३९	१६ ४०	१६ ४१	१६ ४१	१६ ४२	१६ ४२	१६ ४३
मि	१६ ५३	१६ ५३	१६ ५४	१६ ५४	१६ ५५	१६ ५६	१६ ५६	१६ ५७	१६ ५६	१६ ५६	१६ ५५	१६ ५४	१६ ५४	१६ ५३	१६ ५३
क	१६ ४३	१६ ४२	१६ ४२	१६ ४१	१६ ४१	१६ ४०	१६ ३९	१६ ३९	१६ ३७	१६ ३६	१६ ३४	१६ ३३	१६ ३२	१६ ३०	१६ २९
सिं	१६ ५	१६ ४	१६ २	१६ १	१५ ५९	१५ ५८	१५ ५६	१५ ५५	१५ ५३	१५ ५१	१५ ४९	१५ ४८	१५ ४६	१५ ४४	१५ ४२
क	१५ १३	१५ ११	१५ ९	१५ ७	१५ ५	१५ ४	१५ २	१५ ०	१४ ५८	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५३	१४ ५१	१४ ४९	१४ ४७
तु	१४ १८	१४ १५	१४ १४	१४ १२	१४ ११	१४ ९	१४ ७	१४ ५	१४ ४	१४ २	१४ १	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५६	१३ ५५
वृ	१३ ३१	१३ ३०	१३ २८	१३ २७	१३ २६	१३ २४	१३ २३	१३ २१	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १७
ध	१३ ७	१३ ७	१३ ६	१३ ६	१३ ५	१३ ४	१३ ४	१३ २	१३ ४	१३ ४	१३ ५	१३ ६	१३ ६	१३ ७	१३ ७
म	१३ १७	१३ १८	१३ १८	१३ १९	१३ १९	१३ २०	१३ २१	१३ २१	१३ २३	१३ २४	१३ २६	१३ २७	१३ २८	१३ ३०	१३ ३१
कुं	१३ ५५	१३ ५६	१३ ५८	१३ ५९	१४ १	१४ २	१४ ४	१४ ५	१४ ७	१४ ९	१४ ११	१४ १२	१४ १४	१४ १६	१४ १८
मी	१४ ४७	१४ ४९	१४ ५१	१४ ५३	१४ ५४	१४ ५६	१४ ५८	१५ ०	१५ २	१५ ४	१५ ५	१५ ७	१५ ९	१५ ११	१५ १३

अं	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे	१६ ७	१६ ८	१६ १०	१६ ११	१६ १२	१६ १४	१६ १५	१६ १७	१६ १८	१६ २०	१६ २१	१६ २२	१६ २४	१६ २६	१६ २७
वृ	१६ ४४	१६ ४४	१६ ४५	१६ ४५	१६ ४६	१६ ४६	१६ ४७	१६ ४८	१६ ४८	१६ ४९	१६ ४९	१६ ५०	१६ ५१	१६ ५१	१६ ५२
मि	१६ ५२	१६ ५१	१६ ५१	१६ ५०	१६ ४९	१६ ४९	१६ ४८	१६ ४८	१६ ४७	१६ ४६	१६ ४६	१६ ४५	१६ ४५	१६ ४४	१६ ४३
क	१६ २७	१६ २६	१६ २४	१६ २२	१६ २१	१६ २०	१६ १८	१६ १७	१६ १५	१६ १४	१६ १२	१६ ११	१६ १०	१६ ८	१६ ७
सिं	१५ ४०	१५ ३८	१५ ३७	१५ ३५	१५ ३३	१५ ३१	१५ २९	१५ २७	१५ २६	१५ २४	१५ २२	१५ २०	१५ १८	१५ १६	१५ १५
क	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४२	१४ ४०	१४ ३८	१४ ३६	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३१	१४ २९	१४ २७	१४ २५	१४ २३	१४ २२	१४ २०
तु	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४६	१३ ४५	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३६	१३ ३४	१३ ३३
वृ	१३ १६	१३ १६	१३ १५	१३ १५	१३ १४	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ १२	१३ ११	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ९	१३ ८
ध	१३ ८	१३ ९	१३ ९	१३ १०	१३ ११	१३ ११	१३ १२	१३ १२	१३ १३	१३ १४	१३ १४	१३ १५	१३ १५	१३ १६	१३ १६
म	१३ ३३	१३ ३४	१३ ३६	१३ ३८	१३ ३९	१३ ४०	१३ ४२	१३ ४३	१३ ४५	१३ ४६	१३ ४८	१३ ४९	१३ ५०	१३ ५२	१३ ५३
कुं	१४ २०	१४ २२	१४ २३	१४ २५	१४ २७	१४ २९	१४ ३१	१४ ३३	१४ ३४	१४ ३६	१४ ३८	१४ ४०	१४ ४२	१४ ४४	१४ ४५
मी	१५ १५	१५ १६	१५ १८	१५ २०	१५ २२	१५ २४	१५ २६	१५ २७	१५ २९	१५ ३१	१५ ३३	१५ ३५	१५ ३७	१५ ३८	१५ ४०

॥ इति सारिणीसमाप्ता ॥